

**VER**



124253  
LBSNAA

५.३५.३५ ३५३५३५.३५३५.३५.३५३५३५

॥ राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी

## Academy of Administration

**मसूरी**

## MUSSOORIE

**पुस्तकालय**

LIBRARY

— 124253

## अवाप्ति सख्या

*Accession No.*

~~16153~~

वर्ग सख्या

Class No.

GLH

891.432

पुस्तक संख्या

Book No.

बरेर VER





# यही है वर का बाप

[ रंगमंचीय पारिवारिक नाटक ]



लेखक :

मामा वरेरकर

अनुवादक :

रामचन्द्र रघुनाथ सर्वटे



प्रकाशक द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित



प्रथम संस्करण १९६० : १०००



मूल्य : ३ रुपए



आवरण-शिल्पी : एम० इस्माइल



लोक-चेतना प्रकाशन जव्वलपुर द्वारा प्रकाशित

तथा

महेश प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद में मुद्रित

## यही है वर का बाप : एक दृष्टि

भारतीय परम्पराओं के अनुसार वैवाहिक सम्बन्धों में वर का बाप सदा से ही एक बड़ी समस्या रहा है। शताब्दियों से चली आयी उसकी चिर परिचित रूढ़िवादी नीति के कारण शायद ही कोई वर का बाप प्रेम और आदर का पात्र रहा हो। उसके नामोच्चार मात्र से भौहें टेढ़ी हुए बिना नहीं रहतीं। फिर मज़ा यह कि यदि दुर्भाग्य से इसी व्यक्ति पर वधू-पिता होने का मौका आ जावे, तो उस रूप में इसका व्यवहार अतीव दयनीय हुए बिना नहीं रहता। ऐसे अवसरों पर उस ऐंठ-अकड़ और दंभ-दर्प का सारा रोब उतर जाता है, जो उसने किसी बेचारे वधू-पिता पर जमाने का यत्न किया था।

वैसे तो हर गृहस्थ को कन्या एवं पुत्र का विवाह करना पड़ता है। यह जानते हुए भी न जाने क्यों कई मनुष्य वर का बाप होने के नाते ऐसे हृदय-हीन और अमानवीय बर्ताव करते हैं कि जिसका कोई ठिकाना नहीं। समाज में उदार तथा प्रगतिशील कहलाने वाले ऐसे कई दांभिक मनुष्य होते हैं, जो किसी एक सिद्धान्त के पालन की डींग तभी तक हाँकते हैं, जब तक उनके स्वार्थों पर कोई आघात न हो।

प्रस्तुत नाटक में श्री वरेरकरजी ने ऐसे धूर्तों का प्रातिनिधिक चित्रण रावबहादुर के रूप में किया है। ये सज्जन एक प्रगतिशील वकील हैं तथा अपने लेखों एवं भाषणों द्वारा अपने आपको गरीबों का हिमायती बताते हैं। परन्तु अपने पुत्र बसंत के विवाह के अवसर पर वे दहेज के मोह का संवरण नहीं कर पाते। इसलिए वे अपने पुराने सहपाठी दिगंबरपंत की सुशीला एवं बुद्धिमती कन्या यमुना को बसंत के लिए सुयोग्य वधू नहीं

मानते । डाक्टर गुलाब सदृश चतुर मित्र की सलाह से बसंत अपने पिता की तिजोरी से दहेज की रकम न चुराता, तो यमुना से उसका विवाह होना सर्वथा असम्भव था । रावबहादुर की कन्या मंजरी एक पढ़ी-लिखी कन्या होने के साथ-साथ अपने पिता की लाडली भी है । तथापि पिता की दुरंगी नीति से वह पूर्णतः असहमत है । इसीलिए अपनी सहेली यमुना का विवाह अपने बसंत भैया से कराने में उसका पूरा सहयोग डाक्टर गुलाब को प्राप्त होता है । गुलाब और मंजरी अपनी चतुरता से रावबहादुर को खासा अच्छा पाठ पढ़ाते हैं । परिणामतः रावबहादुर का हृदय-परिवर्तन तथा नाटक का सुखान्त पर्यवसान होता है ।

श्री वरेरकर जी को यह नाटक लिखने की प्रेरणा बंगाल में घटित एक शोकपूर्ण घटना से प्राप्त हुई थी । स्नेहलता नामक एक कन्या ने दहेज के भीषण सकट से अपने पिता को मुक्त करने के उद्देश्य से आत्मोत्सर्ग किया था । दुर्भाग्य से ऐसी कई स्नेहलताएँ हमारे समाज की इस अमानुषिक दहेज-प्रथा का शिकार हुई हैं । इस बीसवीं सदी में ऐसी लज्जास्पद कुरीतियों का विद्यमान रहना तो विवेकशून्यता की चरम सीमा है । वास्तव में पुत्र और पुत्री ये दोनों हमारी संसृति-शाखा के मधुर फल हैं ।

मामा वरेरकर का यह नाटक विगत ४३ वर्षों से महाराष्ट्र में दहेज-प्रथा के विरुद्ध लोक-जागृति कर रहा है । इसका यह हिन्दी अनुवाद सम्पूर्ण भारत में दहेज-प्रथा के उन्मूलन में सहायक सिद्ध होगा, ऐसा हमारा विश्वास है ।

गो० मो० रानाडे, एम० ए०

प्राचार्य,

महिला महाविद्यालय, जबलपुर ।

## पात्र-परिचय

### पुरुष-पात्र

|              |   |                    |
|--------------|---|--------------------|
| रावबहादुर    | : | एक धनी वकील        |
| विष्णुपंत    | : | रावबहादुर के मुंशी |
| दिगंबरपंत    | : | एक गरीब महाशय      |
| बसंत         | : | रावबहादुर का पुत्र |
| डाक्टर गुलाब | : | दिगंबरपंत का भानजा |
| मनोहरपंत     | : | दोनों के एक डाक्टर |

### स्त्री-पात्र

|          |   |                    |
|----------|---|--------------------|
| मंजरी    | : | रावबहादुर की लड़की |
| उषा-निशा | : | गुलाब की बहिनें    |
| यमुना    | : | दिगंबरपंत की लड़की |
| पार्वती  | : | दिगंबरपंत की पत्नी |



# पहिला अंक

## दृश्य १

[ रावबहादुर आरामकुर्सी पर बैठे हैं । नजदीक विष्णुपंत लिख रहे हैं और मंजरी एक पुस्तक पढ़ रही है । ]

रावबहादुर : यह पत्र देखा विष्णुपंत ? इन लोगो को हमारा बसंत जैसे दो कौड़ी का लगता है । बारह सौ रुपया दहेज देने को कहते हैं । सिर्फ बारह सौ रुपया ! बारह सौ में तो उन्हें कोई मेट्रिक पास लड़का भी नहीं मिलेगा । हमारा बसंत इसी साल—इसी साल क्यों—आज ही बी० ए० हो जाएगा । बी० ए० होने के बाद, विलायत जाकर, बैरिस्टर या आई० सी० एस० होने में कितनी देर लगती है ? और ऐसे लड़के को ये महाशय दहेज बारह सौ रुपये देंगे । शर्म नहीं आती ऐसा लिखने में । किसी रियासत में दीवान की नौकरी कर लेने से ही अक्ल नहीं आ जाती किसी को ? महाशय जी ने अपने लड़के के लिए तो दहेज में दो हजार गिना लिए और हमें दिखा रहे हैं सिर्फ बारह सौ ! अच्छा धंधा है ! आठ सौ रुपये की साफ बचत करना चाहता है बेटा !

विष्णुपंत : ये महाशय हैं तो बड़े धूर्त, इस में शक नहीं । उनके लिए अपना पुत्र तो राजा बेटा है और दूसरे का

झोंकरा है। हमारे बसंतराव जी को दो हजार रुपये दहेज देने में जैसे प्राण निकले जा रहे थे इनके।

रावबहादुर : नानसेन्स ! निरे पत्थर हो तुम, विष्णुपंत ! बसंत के लिए दहेज क्या सिर्फ दो हजार ? अजी, कोई नाटक-कार सौ पृष्ठों की रहीं पुस्तक लिख कर भी तीन-साढ़े तीन हजार रुपये गिना लेता है। और अपने लड़के के लिए क्या इतना दहेज भी हम न लें ? मूर्ख हो तुम !

विष्णुपंत : हाँ साहब !

रावबहादुर : 'हाँ साहब' का क्या मतलब ? क्या तुम्हारा ख्याल है कि दहेज साढ़े तीन हजार रुपये ही लिया जाए। तुम नहीं जानते, विष्णुपंत, लोग बड़े बाहियात हैं। वे इसी पर श्लेष करेंगे। कहेंगे, साढ़े तीन हाथ देह के लिए, फी हाथ हजार रुपये के हिसाब से दहेज लिया। वह कुछ नहीं। रकम पूरी करनी चाहिए। हो गया प्रस्ताव पास। दहेज लेंगे पूरे चार हजार रुपए। ( विष्णुपंत लिखने लगता है। ) लिखते क्या हो ? क्या यह किसी कौंसिल का प्रस्ताव है ? यहाँ कौंसिल-वौंसिल कुछ नहीं। मैं डिक्टेटर हूँ। जो प्रस्ताव मैंने पास कर दिया, वह पक्का है। समझे ? इसे लिखने की जरूरत नहीं। मैं नहीं भूलूँगा। बस ! तुम न भूलना कि बहुत है।

विष्णुपंत : छिः ! छिः ! इसकी तो आप चिन्ता ही न करें कि मैं भूल जाऊँगा। चार हजार की संख्या यहाँ नक्श कर

दी है मैंने । ( छाती पर हाथ लगाता है । ) नकद चार हजार ही न ? या कि चार हजार की जमीन अथवा प्रामिसरी नोट से भी काम चल जाएगा ?

रावबहादुर : स्टुपिड ! कैश फोर थाऊजेंड ! अन्डरस्टेन्ड यू !

विष्णुपत : इसके अलावा गहने, कपड़े, साजबाज, अगवानी, बारात आदि बातें भी इस ठाट से होनी चाहिए जो रावबहादुर की प्रतिष्ठा को शोभा दें ।

रावबहादुर : आज ही तार आ जाए शायद ? आज ही रिजल्ट खुल रहा है । कैसा पागल लड़का है ? कहता है, रिजल्ट खुले बगैर घर नहीं जाऊँगा ।

विष्णुपत : ऐसी बात तो फेल होने वालों को कहनी चाहिए । हमारे बसंतराव जी तो आज तक यह नहीं जानते कि 'फेल' शब्द क्या होता है ? सिर्फ पास ही नहीं होते, बल्कि फस्ट व्लास फटकारते हैं । उन्हें घर आने में क्या डर है ? आजकल के नवजवान यहीं तो गलती करते हैं । ये दिन शादी-ब्याह के हैं । इस समय उन्हें अपने घर में रहना चाहिए । ऐसे समय बंबई में जूतियाँ चटकाते फिरने में...

रावबहादुर : बेवकूफ हो तुम, विष्णुपत ! हमारा बसंत बंबई में क्या जूतियाँ चटकाता फिर रहा है ? कोई सुनेगा तो क्या कहेगा ? घर के होकर, तुम ही उसकी बदनामी कर रहे हो इस तरह ? क्या दहेज लेकर आने वाली लड़की को हमारे घर से लौटा देना चाहते हो ? गधे हो तुम बिल्कुल !

विष्णुपंत : हाँ साहब ! जरा भूल हो गयी, इसमें शक नहीं । माफ़ कीजिए । हम बड़े लोगों के बीच रहते हैं सिर्फ़ इस पापी पेट के लिए । पर जब तक हम खुद बड़े न हों, तब तक बड़प्पन के लक्षण हममें कैसे दिख सकते हैं, सरकार ! इसीलिए मुझसे भूल हो गयी । जरूर भूल हो गयी । मेरा ख्याल है, बसंतराव जी आगामी अध्ययन के लिये विलायत जाने की व्यवस्था करने में जुटे होने के कारण ही अभी तक बंबई में हैं ।

रावबहादुर : बेशक ! इस में क्या शक है ? क्यों री मंजरी, यही बात है न ?

मंजरी : ( पुस्तक अलग न करते हुए ) क्या ?

रावबहादुर : पत्र में तेरे दादा ने यही लिखा है न ?

मंजरी : ( पुस्तक अलग रख कर ) यही याने क्या ?

रावबहादुर : तेरा दादा रिजल्ट खुलते तक बंबई में क्यों रह रहा है ? क्या लिखा है उसने तेरे पत्र में ?

मंजरी : ( पत्र निकाल कर पढ़ती है । ) 'परीक्षा का रिजल्ट खुलते तक मैं पूना नहीं आऊँगा । वहाँ बेंड-गार्डन में बेकार चक्कर काटने के बदले मेरी इच्छा है कि अवकाश का अपना यह समय मैं किसी भले काम में लगाऊँ । आजकल विवाह-शादी के दिन हैं....'

विष्णुपंत : देखिए सरकार ! कहा था न मैंने ? मेरा अन्दाज कभी गलत हो ही नहीं सकता ।

मंजरी : ( आगे पढ़ती है । ) 'इन दिनों अनेक दुखी पिता

अपनी पुत्रियों के लिए वर खोजने यहाँ आते हैं। उन सभी पिताओं की यह हार्दिक इच्छा होती है कि कालेज के लड़कों में ही उन्हें कोई योग्य वर मिल जाए। समय की पुकार को ध्यान में रखकर, कम खर्च में और बिना दहेज लिए ऐसे गरीब पिताओं की सहायता करने वाले अविवाहित-विद्यार्थी-मंडल को आजकल अपना कार्य-क्षेत्र बनाने का मैंने निश्चय कर लिया है और....”

**विष्णुपंत :** क्या यह बसंतराव जी का ही पत्र है ? या कि आप अपने मन से ही कुछ पढ़ रही हैं ?

**रावबहादुर :** ( स्वगत ) इस छोकरे का तो दिमाग ही घूम गया मालूम होता है। ऐन मौके पर कहीं दगा न दे दे। ( प्रकट ) देखा विष्णुपंत हमारे बसंत के विचार कितने ऊँचे हैं ? यह सब मेरी शिक्षा का प्रभाव है। समझे ? उच्च विचारों को हमेशा मन के भीतर ही सँजोकर रखना चाहिए। हर व्यक्ति को अपना ध्येय उच्चतम रखना चाहिए। वह इतना उच्चतम हो कि उस तक कभी हाथ ही न पहुँचे। तभी वह सच्चा ध्येय है।

**मंजरी :** ध्येय की वह कौन-सी परिभाषा है, पिता जी विचार ऊँचे होना चाहिए, पर आचार कैसा होना चाहिए, पिता जी ?

**रावबहादुर :** आचार का मतलब व्यवहार है।

**मंजरी :** आपके व्यवहार का मतलब कहीं व्यापार तो नहीं ?

**रावबहादुर :** हाँ। करीब-करीब वही है।

**मंजरी** : अब समझी मैं । आचार का मतलब है दूकान की फुटकर बिकी और विचार का मतलब है कभी न बिकने वाला गोदाम में भरा माल । यही न पिता जी ?

**रावबहादुर** : तू बड़ी मुँहफट है री ! लड़की की जात को यह शोभा नहीं देता । फिर अभी तेरा विवाह भी हांना है ।

**मंजरी** : मैं विवाह ही नहीं करूँगी । विवाह करने की क्या जरूरत ?

**रावबहादुर** : विचार तो अच्छा है । मुझे भी पसन्द है । आज तक सभी लड़कियों ने विवाह किये । अब कुछ लड़कियाँ अविवाहित ही क्यों न रहें ? कितनी ही बाल-विधवाएँ आज अविवाहित स्थिति में पवित्र जीवन बिता रही हैं । वे भी क्या अविवाहित लड़कियाँ ही नहीं हैं ?

**मंजरी** : और लड़कों को क्या करना चाहिए पिता जी ? क्या उन्हें भी बाल-ब्रह्मचारी नहीं बने रहना चाहिए ?

**रावबहादुर** : लड़के यदि विवाह न करें, तो यह दुनिया कैसे चलेगी ? लड़कों को विवाह करना ही चाहिए । तू पगली है, मंजु ! लड़कों के विवाह रोक कर, क्या दुनिया का व्यवहार ही बंद कर देने का इरादा है तेरा ?

**मंजरी** : पर पिता जी, यदि लड़कियाँ अविवाहित रहें, तो लड़कों के विवाह किन के साथ होंगे ? क्या पेड़-पौधों के साथ ?

**विष्णुपंत** : यह बात नहीं है, ताई साहब ! सभी लड़कियाँ विवाह न करें, यह हम नहीं कहते । परन्तु जिन्हें पुत्र हैं, उन बापों की लड़कियाँ यदि विवाह करती हैं, तो क्या वे अपने प्रिय पिता को संकट में ही नहीं डालती ?

**मंजरी** : हाँ । समझ गयी । घर में दहेज आए, पर घर से दहेज न जाने पाए—इसी की यह पूर्व तैयारी है शायद ? यही बात है न, विष्णुपंत ?

**रावबहादुर** : विष्णुपंत क्या जानें इन बातों को । बिना समझे कुछ भी बक देते हैं । बस ! मैं यह नहीं कहता कि सभी लड़कियाँ विवाह न करें । पर जो लड़की यह सोचती है कि विवाह करना आवश्यक नहीं है, उसके विचारों का हमें स्वागत करना चाहिए । समाज को उसे प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे वह अपने निर्णय पर अटल रहे । समाज में लड़कियों की संख्या आज भी लड़कों से अधिक है । इसलिए लड़कियों के पिता को वर खोजने में बड़ी कठिनाई हो रही है...

**मंजरी** : और दहेज के कारण कोई कठिनाई नहीं हो रही है क्या ?

**रावबहादुर** : छि ! छि ! बिल्कुल नहीं । यह विचार ही बिल्कुल भ्रामक है । दहेज का अर्थ है—वर-दक्षिणा, जिसे शास्त्रों ने ही निश्चित कर रखा है...

**मंजरी** : और जिसके नीलाम की बोली को वर के पिताओं ने काफी बढ़ा रखा है...

**रावबहादुर** : पहिले पूरा सुन तो ले । शास्त्रों द्वारा निश्चित की हुई

एक रूढ़ि—नहीं आचार है वह । दक्षिणा दिये बिना कोई भी दान सफल नहीं होता । इसलिए कन्यादान के बाद वर-दक्षिणा अत्यन्त आवश्यक है । खैर, छोड़ो उन बातों को—मैं क्या कह रहा था—हाँ, लड़कियों की संख्या बढ़ रही है । लड़कियों की संख्या बढ़ रही है इसलिए... (निशा और उषा आती हैं ।)

**मंजरी** : इसलिए यहाँ दो और कुर्सियाँ लाना जरूरी हो गया है । क्यों जी निशा, यह नयी लड़की कौन है ?

**उषा** : कौन मैं ? मैं उषा हूँ ।

**मंजरी** : कौन उषा ? किस अरुण की बहिन है यह, क्यों निशा ?

**निशा** : यह मेरी फुफेरी बहिन है ।

**उषा** : और यह मेरी ममेरी बहिन है । और क्या पूछा था तुमने, मंजरी दीदी ? यही न, कि किस अरुण की बहिन हूँ मैं ? जरा ठहर जाओ, अरुण भी देखने को मिल जायेगा तुम्हें । अरुणोदय होने में अब अधिक देर नहीं है दीदी ।

**मंजरी** : मेरा नाम भी जानती है यह ! अच्छा उषा, यह बतलाओ कि तुम आई कब और कहाँ से ? और तुमने जो अरुणोदय कहा, उसका क्या मतलब ? जरा साफ-साफ भी बताओगी या नहीं ?

**उषा** : तुम्हीं ने अभी पूछा न, कि मैं किस अरुण की बहिन हूँ ? फिर मेरा भाई अरुण ही हुआ या नहीं ! हाँ,

अरुण चाहे वह न हो, पर अरुणोदय के समय खिलने वाला गुलाब वह अवश्य है ! मेरे भाई का नाम है डाक्टर गुलाब ।

मंजरी : अरे बाह ! यह तो कविता बनाने लगी !

रावबहादुर : अच्छा, यह बात है ? यह लड़की दिगम्बरपन्त की भान्जी है शायद ? उनका एक भान्जा मेडिकल कालेज में पढ़ता है, ऐसा मैंने सुना जरूर था । कहते हैं, लड़का बहुत होशियार है ।

उषा : होशियार ? हमारे दादा के समान होशियार त्रिभुवन में भी कोई न मिलेगा ?

रावबहादुर : अपने भाई पर ही सारा प्यार दिखता है इस लड़की का ।

उषा : मेरा दादा है ही ऐसा । जो भी आकर उससे मिलता है, उसकी दादा से फ्रेंडशिप हो ही जाती है । है न निशा ?

निशा : हाँ । है तो बात ऐसी ही । गुलाब दादा हमारे पिताजी की आँखों के तारे हैं । वे अब आते ही होंगे । तुम्हारे बसंत दादा के बड़े घनिष्ठ मित्र हैं वे । दोनों जैसे दो देह और एक प्राण हैं ! पिताजी कह रहे थे कि वे दोनों एक साथ ही आने वाले हैं ।

मंजरी : गुलाब—? पिताजी, यह 'गुलाब' नाम हमारी रूढ़ि के जरा विरुद्ध ही दिखता है न ? अपनी जाति में कम-से-कम मैंने तो यह नाम कभी नहीं सुना !

रावबहादुर : और शायद इसीलिए यह नाम तुम्हें अच्छा लगता है ?

विष्णुपंत : हाँ, जो भी बातें रूढ़ि के विरुद्ध होती हैं, वे हमारी ताई साहिबा को निश्चित ही अच्छी लगती हैं ।

उषा : पर हमारे गुलाब दादा का असली नाम गुलाब थोड़े ही है ? उसका नाम तो है नारायण । पर उसने गुलाब जैसा स्वभाव जो पाया है—सदा खिला हुआ प्रसन्न मुख ! इसीलिए उसके मित्र और साथी सब उसे गुलाब कहकर पुकारते हैं ।

मंजरी : हाँ, अगर ऐसी बात है, तो ठीक है ।

निशा : तुम्हारे बसंत दादा कब आ रहे हैं, मंजरी दीदी ?

उषा : हमारे गुलाब दादा के साथ ही आयेंगे न ?

निशा : पर गुलाब दादा कब आ रहे हैं ?

मंजरी : बसंत दादा के साथ । अरी पगली, मुझसे क्या पूछती हो यह ? क्या हमारा दादा कभी भी पहिले हमें खबर देता है अपने आने की ? आज तक तो यही हुआ है कि हम बाहर निकले और देखा तो दादा सामान उतार रहा है । पर यह सच है कि रिजल्ट खुलते ही वह आ जाएगा और रिजल्ट आज खुलने वाला है ।

उषा : फिर कल हमारा दादा भी आएगा ।

निशा : और तुम्हारे दादा भी कल ही आयेंगे ।

मंजरी : हाँ ! तब तो मुझे एक गाड़ी ले आनी चाहिए । दो-दो दादा मिल गये हैं मुझे गाड़ी में जोतने के लिए ।

उषा : उन्हें गाड़ी में जोता जायेगा या किसी जुती गाड़ी में उन्हें जोड़ी से बिठाया जायेगा, यह आगे दिखेगा ।

मंजरी : क्या मतलब ?

उषा : मतलब फिर बताऊँगी । वह बात चार लोगों के सामने कहने की नहीं है, यह मेरे दादा ने मुझे जता दिया है ।

मंजरी : कौनसी बात जता दी है ?

उषा : उसने कहा था कि अपनी यमू दीदी का विवाह तुम्हारे बसंत दादा के साथ तय कर देंगे । पर यह बात किसी से न कहने के लिए दादा ने मुझे जता दिया है ।

रावबहादुर : (स्वगत) बसंत का विवाह क्या उस भिखारी की लड़की से ? छि ! छि ! छि ! (प्रगट) उषा, ऐसी ऊँट-पटाँग बात नहीं कहनी चाहिये । कहाँ हमारा बसंत, और कहाँ तुम्हारी यमुना ! बसंत के लिए तो अच्छे अच्छे लोग मेरी देहली सूँघ रहे हैं । और फिर बसंत की पत्नी अच्छी पढ़ी-लिखी भी होनी चाहिए ।

विष्णुपंत : और तुम्हारी यमुना है ढपॉरशंख, निरी मूर्ख, जिसे काला अक्षर भैंस बराबर है ।

निशा : मुँह सँभालकर बात करो, विष्णुपंत ! तुम जानते क्या हो कि हमारी दीदी को क्या-क्या आता है ? इतनी मोटी अँग्रेजी की किताब धड़ाधड़ पढ़ती हैं ।

संस्कृत में लिखी भागवत के वह कई पारायण करती है ।

विष्णुपंत : वे पुस्तकें नहीं, घास के पूले होंगे । वह उन्हीं पूलों की गंजी रचा करती होंगी शायद ।

निशा : जाओ । अब मैं कुछ भी नहीं बोलूँगी । यह क्या बात है, मंजरी दीदी, बीच-बीच में मुँह मारने के लिए किसने कहा विष्णुपंत से [ रोने लगती है । ]

रावबहादुर : चुप हो जाओ, बेटी ! रोओ नहीं । फिर भी विष्णुपंत ने जो कहा वह बिल्कुल झूठ नहीं है । यमुना को अँग्रेजी या संस्कृत की वू-बास भी हो, यह सम्भव ही नहीं ।

मंजरी : यहाँ आप गलती कर गए, पिताजी ! काव्य-प्रकाश का अध्ययन करते समय जहाँ-जहाँ भी मुझे कठिनाई आई, मैंने यमुना से पूछा और यमुना ने ही मेरी कठिनाइयाँ दूर कीं ।

रावबहादुर : यह क्या बकती है ? यमुना को कालेज जाते मैंने कभी नहीं देखा ।

मंजरी : कालेज जाने से ही पढ़ाई हो सकती है, यह बात नहीं है, पिता जी ! दिगम्बरपंत से जितना बना, उतनी शिक्षा उन्होंने यमुना को स्वयं ही दी है । वह यद्यपि मेरी तरह कालेज नहीं गयी, फिर भी मेरा ख्याल है कि वह बी० ए० की परीक्षा पास कर सकती है— इतनी तैयारी है उसकी । छः लड़कियों के विवाह की चक्की में पिसते-पिसते बेचारे दिगम्बरपंत की नौकरी

चली गयी । फिर सातवीं को कालेज में पढ़ाने का खर्च कहाँ से लाते ?

**रावबहादुर :** बेचारा ! बड़ी बुरी हालत हो गई है बेचारे की । इस दहेज ने कितने ही परिवारों को धूल में मिला दिया है । पर किया भी क्या जाए ? हिन्दू धर्म-शास्त्र के विरुद्ध तो जा नहीं सकते । (दीर्घ साँस छोड़कर) धर्म की आज्ञा बड़ी विकट होती है, इसमें शक नहीं । अधर्म करने का पाप यदि पल्ले न आता, तो इस धर्माज्ञा को, बड़े आनन्द से तोड़ने का काम, सबसे पहिले मैं करता । राम ! राम ! बड़ा कठिन प्रसंग है । 'दया धर्म का मूल है'—कहने वाले कबीर मुसलमान थे । मुसलमानों में उल्टे लड़कियों को ही स्त्री-धन देना पड़ता है । वही यदि हिन्दू होते—दहेज देने का शास्त्राधार यदि उन्हें...

**मंजरी :** और दहेज लेने का शास्त्राधार ?

**रावबहादुर :** दोनों ही मार्ग एक समान विकट हैं । समझी ?

**मंजरी :** सच है । दहेज की रकम गिन-गिन कर लेते समय लेने वाला बिल्कुल बीमार पड़ जाता होगा । है न ? हजारों रुपए की थैली का बोझ बेचारे के कलेजे को फोड़ देता होगा ?

**रावबहादुर :** अनुभव के बिना ये बातें समझ में नहीं आयेंगी । अब यह प्रसंग स्वयं मुझ पर भी आनेवाला है । उस समय मुझे क्या कष्ट होंगे, यह तुम्हें प्रत्यक्ष ही दिख जाएगा ।

**मंजरी** : और मैं भी देखूँगी । खैर, छोड़िये भी इस बकवास को । हाँ, निशा, अब यह बतला कि तू किसी काम से आई थी या यूँ ही ...?

**उषा** : दीदी ने आपसे यह कहला भेजा है कि... (परदे के... भीतर से—‘रावबहादुर काले वकील घर में हैं क्या’ आवाज आती है ?)

**मंजरी** : ( चट से उठकर ) दादा पास हो गया, पिताजी ! तार आया है । (तार वाला आता है और मंजरी तार लेती है ।)

**रावबहादुर** : वह पास होगा ही, इसमें शक क्या है ? क्या कहता है तार ?

**मंजरी** : पास्ट फर्स्ट क्लास कमिंग टुमारो मेल ।

**उषा** : कल आ रहे हैं क्या ? तो हमारा दादा भी कल ही आयेगा ।

**रावबहादुर** : अरे वाह ! इस लड़की को भी अँग्रेजी आती है । बड़ी होशियार जान पड़ती है । हाँ, तो बसंत कल आयेगा । विष्णुपंत, बसंत कल आ ही रहा है, इसलिये उन दीवान महाशय को पक्का उत्तर देने का काम कल तक के लिए रोक रखना चाहिये । समझे । उन्हें लिख दो कि बसंत फर्स्ट क्लास में पास हो गया है, इसे ध्यान में रखकर जल्द जवाब दें । उसके बाद ही बसंत लड़की देखने जायगा । अच्छा मंजरी, मैं अब घूमने जाता हूँ—तार के लिये ही अब तक रुका था । वैसे तार की राह देखने की जरूरत तो न

थी। पर मन जो है—वह माना नहीं। ठीक है न विष्णुपंत ?

विष्णुपंत : सोलहों आने ठीक है—कौन से ब्लास में पास होते हैं, बस यही तो जानना था।

( रावबहादुर कपड़े पहिन कर चल देते हैं। उन्हीं के पीछे-पीछे विष्णुपंत का भी प्रस्थान । )

मंजरी : हाँ, निशा, अब बोलो क्या कहना चाहती हो ?

उषा : दीदी ने आपकी एक साड़ी और एक ब्लाउज माँगा है।

मंजरी : साड़ी और ब्लाउज ?—किसलिये ?

निशा : कल उन्हें कोई देखने के लिये आ रहा है।

मंजरी : कौन आ रहा है ?

उषा : कल उन्हें देखने के लिये जानवर आ रहा है।

निशा : याने जानवरों का डाक्टर न ?

मंजरी : बहुत से जानवर आकर उसे देख गये। यह और कौन सा जानवर बच रहा था जो अब आ रहा है ?

उषा : यह बात नहीं। जो देखने आ रहे हैं वे जानवरों के डाक्टर हैं ! हमारे दादा उन्हें 'जानवर' कहकर पुकारते हैं।

मंजरी : यह 'देखना-देखना' क्या होता है, एक बार मैं भी यह देखना चाहती हूँ। कल जब वे देखने के लिए आवें, तो उस समय क्या मुझे भी खबर दे दोगी आकर ?

**उषा** : हाँ-हाँ ! अवश्य । मैं खुद आऊँगी बुलाने । तुम आ जाओगी, तो सच बहुत अच्छा रहेगा । क्योंकि यमू दीदी आज कई घंटे बालों में कंधी चलाती रहीं, पर बालों का जूड़ा ठीक से बाँध ही न सकीं । आप अगर आ जायेंगी, तो उनका जूड़ा ठीक से बाँध देंगी ।

**मंजरी** : एक घंटा पहिले आकर खबर देना, तो यमू का ही नहीं, तुम्हारा, निशा का और पार्वती चाची का भी उल्टा जूड़ा बाँध दूँगी मैं । आओ, तुम्हें साड़ी और ब्लाउज अभी दिए देती हूँ ।

(प्रस्थान)



## दृश्य २

[ पूना का एक रास्ता । विष्णुपंत और दिगंबरपंत का प्रवेश ]

विष्णुपंत : तुम्हारे दिमाग से तो अक्ल गायब हो गयी है, दिगंबरजी ! कहाँ रावबहादुर और कहाँ तुम ? कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली ! बात ऐसी कहनी चाहिये जो अच्छी लगे और जिसमें कुछ तुक हो । रावबहादुर के सामने अगर तुम्हारी बात का मैं जिक्र भी निकालूँ, तो उसी वक्त वे मुझे घर से निकाल देंगे ।

दिगंबरपंत : आप ठीक कहते हैं ! पर करूँ क्या ? मरता क्या न करता ऐसी हालत हो गयी है—मेरी ! छः लड़कियों के विवाह जैसे-तैसे मैंने निपटाये हैं । उनके घर बसाने में मेरा निजी घर बिक गया, पूर्वजों की जमीन चली गयी, साठ रुपये महीने की नौकरी थी, उससे भी हाथ धो बैठा । सब कुछ चला गया । और बचा क्या ? सिर्फ दो लड़कियाँ, जिनके विवाह का बोझ अब भी मेरे झुके कंधों पर बाकी है । वैसे छोटी लड़की के विवाह की तो मुझे विशेष चिन्ता नहीं है, क्योंकि मेरा भान्जा नारायण अब डाक्टर हो गया है और उस लड़की के विवाह की पूरी जिम्मेवारी उसने अपने ऊपर ले ली है । वह तो यमुना के विवाह में भी मेरा थोड़ा हाथ

२

बँटा देता, पर उसे अभी तक नौकरी नहीं मिली है । तो अब आप ही बताइये विष्णुपंत जी, मैं दहेज के लिए रुपये कहाँ से लाऊँ ? अगर कोई भला आदमी दहेज न लेनेवाला भी मिल गया, तो भी विवाह का खर्च कहाँ से जुटा सकूँगा, यही मेरी समस्या में नहीं आता ।

**विष्णुपंत :** यदि ऐसी बात है तो अब तुम्हीं बताओ कि राव-बहादुर का लड़का तुम्हें कैसे मिल सकेगा ? आज ही नरसिंहगढ़ के दीवान का पत्र आया है । वे दहेज में ढाई हजार रुपये देने के लिये बिल्कुल तैयार हैं । पर रावबहादुर माँग रहे हैं पूरे पाँच हजार । और लगता है कि यह रकम अभी और बढ़ेगी, क्योंकि आज ही तार आया है कि बसंतराव जी बी० ए० फर्स्ट क्लास में पास हो गये हैं ।

**दिगंबरपंत :** क्या कहा ? बसंतराव पास हो गए ? और फर्स्ट क्लास में ? (सिर पीट लेता है ।)

**विष्णुपंत :** क्या तुम्हें दुःख हुआ ? कैसे अजीब आदमी हो ?

**दिगंबरपंत :** झूठ क्यों बोलूँ ? यह सच है कि क्षण-भर के लिए मुझे दुःख का एक धक्का लगा था । यह गरीबी मन को इसी तरह तो दुष्ट बना देती है ! विष्णुपंत जी, मुझे क्षमा कीजिए । पर सच कहता हूँ कि अगर बसंत फेल हो जाता, तो मुझे बड़ी खुरशी होती ।

**विष्णुपंत :** सो क्यों ? बड़े चांडाल मालूम होते हो जी तुम तो !

**दिगंबरपंत :** मनुष्य में दुनिया-भर के ऐब पैदा कर देने की ताकत

सिर्फ एक गरीबी में है। उसी गरीबी ने मुझसे कहा कि बसंत अगर फेल हो गया, तो बड़े घरों में उसकी बात उतनी नहीं पूछी जायेगी और फिर मुझे अपनी बात आगे बढ़ाने की अधिक आशा रहेगी और अवसर भी मिलेगा।

विष्णुपंत : अक्ल के दुश्मन हो तुम दिगंबरपंत ! एक परीक्षा में फेल हो जाने से ही विवाह के बाजार में लड़के का भाव कोई एकदम नहीं उतर जाता। रिजल्ट के पहिले ही बसंतराव की बारह सौ (दाँतों तले जीभ चबा कर) टाई हजार कीमत लग चुकी है।

दिगंबरपंत : पर वह इसी आशा पर लगाई गयी होगी कि वह पास हो जायेगा।

विष्णुपंत : जो भी हो, पर वै आखिर पास तो हो गये न ? वैसे सब लोगों का पूरा विश्वास था ही कि वे जरूर पास हो जाएँगे। इसमें किसी को कोई शक ही नहीं था।

दिगंबरपंत : देखिए विष्णुपंत जी, अगर आप मेरा इतना काम जमा दें तो जिन्दगी-भर आपका अहसान न भूलूँगा।

विष्णुपंत : मुझे क्या दोगे ?

दिगंबरपंत : मेरा सारा वैभव मेरी यह गरीबी ही है...

विष्णुपंत : मतलब ? तो क्या अपनी गरीबी मेरे सिर मढ़ दोगे ? वाह, बड़ा अच्छा बदला चुकाओगे अहसान का !

दिगंबरपंत : मेरे पास क्या है, जो मैं आपको दे सकूँ। कुछ ट्यूशन कर ली हैं, उसीसे किसी तरह गुजर हो जाती है। इसी को मैं ईश्वर की कृपा समझता हूँ।

**विष्णुपंत :** फिर तुम लड़की का विवाह कैसे करोगे ? अच्छा, यह बताओ उसकी उम्र क्या है ?

**दिगंबरपंत :** आज तीन साल से लोगों से तो यही कह रहा हूँ कि उसे तेरहवाँ साल लगा है । पर सच बात यह है कि पिछले सावन में उसका सोलहवाँ समाप्त हो गया और सत्रहवाँ शुरू हुआ है ।

**विष्णुपंत :** अरे बाप रे ! क्या कहा ? सत्रहवाँ साल ? अजी, मेरी पत्नी को तो सत्रहवें वर्ष की उम्र में तीन बच्चे हो चुके थे और वह दुनिया से कूच भी कर चुकी थी । तुम्हारी हालत बहुत खराब है, इसमें शक नहीं ।

**दिगंबरपंत :** क्या मुझ पर आपको दया नहीं आती ? आपसे भीख माँगता हूँ—दया की भीख । मुझ पर इतनी दया कर ही दीजिए । इस कन्यादान का सारा फल आप ही को मिलेगा ।

**विष्णुपंत :** छः कन्यादानों का फल तो तुम्हें बहुत अच्छा मिला है । वह मैं देख ही रहा हूँ । क्या कहने ? मुझे कन्यादान का फल बता रहे हो ? इस कन्यादान के कारण लाखों परिवार मिट्टी में मिल गये हैं । अगर यही कन्यादान का फल है, तो वह तुम्हें ही मुबारक हो ।

**दिगंबरपंत :** तो फिर मैं अब आखिर करूँ भी क्या ?

**विष्णुपंत :** किसी नदी में जाकर डूब मरो । क्या अजीब आदमी हो ? भला मैं क्या बताऊँ कि तुम क्या करो ?

**दिगंबरपंत :** सच है । एक पत्थर लड़की के गले में और दूसरा

अपने गले में बाँधकर मुझे डूब मरना चाहिए । इसके सिवा दूसरा कोई चारा नहीं ।

**विष्णुपंत :** बहुत अच्छा विचार है । लड़कों के बाप तो कम-से-कम एक बला से छुटकारा पा जायेंगे ।

**दिगंबरपंत :** लड़की का बाप होने से ही क्या मानवता के नाम पर मेरा कोई मूल्य नहीं रहा ? यदि मैं मर गया और मेरी लड़कियाँ मर गयीं तो क्या इससे दुनिया की समस्याएँ हल हो जाएँगी ? क्या आपका यह ख्याल है विष्णुपंत, कि मेरे मर जाने से धरती का भार कम हो जाएगा ?

**विष्णुपंत :** कैसे मूर्ख हो तुम ? अजी, लड़की का विवाह न होने पर क्या किसी ने प्राण दिये हैं कभी ? अगर मानते हो तो एक उपाय बताता हूँ तुम्हें । एक विधुर से ब्याहोगे लड़की को ?

**दिगंबरपंत :** क्या उम्र है उसकी ?

**विष्णुपंत :** लो, अब तुम उम्र पूछने लगे ? उम्र पूछकर क्या करोगे ? तुम्हें तो यह देखना चाहिए कि किसी तरह लड़की के हाथ पीले हो जाएँ । मेरे पड़ोसी हैं एक । अभी-अभी ही उनकी पत्नी का देहान्त हुआ है । अच्छा, भला और भरा परिवार है । अपना निजी मकान है । उनका बड़ा लड़का सिर्फ चालीस साल का है । छः भाई हैं । पर बड़ा मेल है उनमें । चारों लड़कियों के विवाह हो चुके हैं—और...

**दिगंबरपंत :** पर विवाह किससे—उनके लड़के से ?

विष्णुपंत : नहीं जी । लड़कों के बाप से । अच्छा तगड़ा आदमी है । पचास रुपये पेन्शन भी मिलती है । पेन्शन लेते तेरह साल हो गये । पर किसी ने उसे खाट पकड़े नहीं देखा ।

दिगंबरपंत : पर बूढ़े काफी मालूम होते हैं...

विष्णुपंत : हाँ, हैं बूढ़े । फिर ? लड़की का विवाह तो होना ही चाहिए न ? मैं ऐसी कोशिश करता हूँ कि तुम्हें दहेज बिल्कुल नहीं देना पड़ेगा और अगर हो सका, तो मैं ऐसा प्रबन्ध भी कर दूँगा जिससे मंडप आदि में भी तुम्हारी एक कानी कौड़ी खर्च न होगी ।

दिगंबरपंत : ( स्वगत ) क्या करूँ ? हे भगवान, मैं क्या करूँ ? क्या अपने कलेजे के टुकड़े को जान-बूझकर वैधव्य की खाई में ढकेल दूँ ? फिर ऐसा विवाह करने की जरूरत ही क्या है ? इससे लाभ क्या होगा ? भगवान; बताओ-बताओ मैं क्या करूँ ? बेटी की पालकी उठते ही क्या दामाद की अर्थी उठाने को तैयार हो जाऊँ ? अगर ऐसा न करूँ, तो दहेज देने के लिए रुपये कहाँ से लाऊँ ? आज किसी तरह लड़की के हाथ तो पीले हो जायेंगे । तो कर ही दूँ यह विवाह—बिटिया की माँग तो भर जायेगी—भले ही चार दिनों के बाद उसका सिंदूर पुछ जाए । लड़की को अविवाहित तो नहीं रख सकता । विवाह के दूसरे ही दिन विधवा हो जाने वाली लड़की हमारे समाज को मंजूर है । पर प्रौढ़ कुमारिकायें हमारा समाज बिल्कुल बरदाश्त नहीं

करता । होगी विधवा, तो हों जाये । पर समाज का मुँह तो बंद हो जायेगा । हे भगवान मैं क्या करूँ ? क्या करूँ ? हाय री गरीबी, मेरा मन कितना कमजोर कर दिया तू ने ?

विष्णुपंत : क्या सोच रहे हो, दिगंबरजी ?

दिगंबरपंत : क्या करूँ, कुछ समझ नहीं पाता ? लड़की का विवाह तो करना ही होगा ! हाँ ! मुझे आपकी बात स्वीकार है । पर आज के दिन रुक जाइए । आज ही एक महाशय यमुना को देखने आ रहे हैं । उनके अंतिम निर्णय का पता लगने तक आप अपने पड़ोसी को रोंके रहिए । न जाने क्या लिखा है उस अभागिनी लड़की के भाग्य में । जो होना है होकर ही रहेगा ।

विष्णुपंत : ठीक है । मैं सब सिलसिला जमाता हूँ । ( स्वगत ) इस कंगाल से तो कोई आशा नहीं, पर उस बूढ़े खूसट गुंडीपंत से जरूर हजार-पाँच सौ रुपये ऐंठ सकता हूँ ! ( प्रकट ) अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ । ( सामने देखकर ) अरे ये कौन ? क्या बसंतराव जी हैं ? आज कैसे आए ?

दिगंबरपंत : अरे यह तो नारायण है । ( सूट-केस लिए बसत और गुलाब प्रवेश करते हैं । गुलाब दिगंबरपंत के चरण छूता है । ) अरे-अरे, यह क्या ? आम रास्ते पर ही मेरे पैर छूते हो !

गुलाब : आप बड़े हैं । और आम रास्ते पर बड़ों के पैर छूने में मुझे किसी के बाप का डर नहीं ।

**विष्णुपंत** : यह क्या दादा साहब ? आप तो कल आने वाले थे ।  
तार में भी यही लिखा था । और आ गये आज !

**बसंत** : गुलाब ने कहा, आज ही चलो । इसलिए मैं भी  
चला आया । वैसे और एक दिन वंबई में रह कर भी  
मुझे कौन-सा खास काम करना था ?

**विष्णुपंत** : आप ही हैं शायद दिगंबरपंत के भान्जे ?

**गुलाब** : जी, इसी 'देह' को डाक्टर गुलाब कहते हैं ।

**विष्णुपंत** : हँयः हँयः हँयः ! नमस्कार-नमस्कार ! अच्छा हुआ  
जो दादा साहब की कृपा से आप के दर्शन हो गये ।

**गुलाब** : (लम्बे हाथ जोड़कर) हँयः हँयः हँयः ! नमस्ते, दूर से  
ही नमस्कार । बसंत, यही महाशय हैं शायद तुम्हारे  
विष्णुपंत दीवान ?

**विष्णुपंत** : अजी दीवान कहाँ का ?—कहाँ का दीवान, मैं तो मुन्शी-  
गीरी करता हूँ रावबहादुर के घर । हाँ, वैसे दो मुन्शी  
हैं मेरे मातहत । रावबहादुर की कृपा से सब ठीक चल  
रहा है । दीवान कहाँ का ? हाँ, पर रावबहादुर को  
यदि हिज हाईनेस कहा जाए, तो मुझे भी दीवान  
कहने में कोई हर्ज नहीं । मेरी सलाह के बिना राव-  
बहादुर साहब यहाँ की सीक वहाँ भी नहीं सरकाते ।  
दादा साहब यह सब जानते ही हैं ।—दादा साहब,  
लाइए, वह सूटकेस मुझे दे दीजिए ।

**बसंत** : नहीं-नहीं । रहने दीजिए ।

**विष्णुपंत** : यह भी दादा साहब ? आने से पहिले कम-से-कम  
खबर तो दी होती ? मैं गाड़ी लेकर स्टेशन पर हाजिर

हो जाता। खैर, गाड़ी की बात छोड़िये। पर क्या स्टेशन पर तौंगे नहीं थे ? यह क्या, अपना सामान खुद ही टौंगे चले आए ! क्या स्टेशन पर कोई कुली भी न मिला ?

**गुलाब** : लोग कहते हैं कि अमीरी आदमी को कमजोर बना देती है। बसंत ने तय किया कि उस बात को झूठा साबित कर दिया जाए। इसलिए वह स्वयं कुली बन गया। उठाया अपना बेग और तेजी से चल पड़ा। शरीर भी अच्छा तगड़ा पाया है उसने। अगर मील भर अपना सामान खुद उठाकर ले भी आया, तो क्या हो गया। आखिर बारह आने की बचत तो हुई। वह कुली कितनी चिख-चिख कर रहा था। आखिर सीधा हो गया बेटा !

**विष्णुपंत** : मितव्ययिता कोई बुरी बात नहीं।

**गुलाब** : अमीरों के लिये जो मितव्ययिता कही जाती है, वही मितव्ययिता यदि गरीब करें, तो उसे कंजूसी कहा जाता है। पर दीवानजी, यह मितव्ययिता भी नहीं और कंजूसी भी नहीं। अपनी अमीरी दिखाने के लिए मनुष्य परावलम्बी बन जाता है। इसलिये जिस स्वावलम्बन को अमीर लोग कंजूसी जैसा निंदित नाम दिया करते हैं, वही यह स्वावलम्बन है।

**बसंत** : समझ गये विष्णुपंत ?

**गुलाब** : अच्छा बसंत, अब मैं मामा के साथ जाता हूँ। मुझे

घर खोजने की अब जरूरत नहीं और उसे दिखाने की तुम्हारी मेहनत भी बची ।

**दिगंबरपंत :** नहीं-नहीं । ऐसा क्यों करते हैं ? वसंतराव जी, आप भी हमारे ही घर चलिए । वहाँ थोड़ी चाय लीजिये और फिर अपने घर जाइये ।

**विष्णुपंत :** पर तुम्हारे घर में चाय होगी भी ?

**गुलाब :** गरीबी में मनुष्य का साथ सब छोड़ देते हैं, पर गृहस्थी की माया तो उसके साथ रहती ही है । गरीबों के घर में अतिथि-सत्कार को आज भी धर्म का अङ्ग माना जाता है । यदि अतिथि-सत्कार का कहीं अभाव है तो वह आप जैसे अमीरों के ही घर में है । समझे विष्णुपंत ?

**दिगंबरपंत :** नानू, ऐसी बात नहीं कहा करते, बेटा । हम लोगों को सदा सज्जनता से पेश आना चाहिए । दूसरों के दोष निकालना अच्छी बात नहीं और फिर सभी अमीर एक से तो होते नहीं हैं ।

**गुलाब :** पर यह क्या, ये हमें चाहे जो कहते रहें और हम वह सब सहन करते रहें । क्यों ? क्या इसीलिये कि हम गरीब हैं ? देखिए मामा, मेरा स्वभाव तो यह है कि अगर कोई मुझे छेड़ता है तो ईंट का जवाब मैं पत्थर से ही देता हूँ ।

**दिगंबरपंत :** अच्छा-अच्छा, अब घर चलो । सड़क पर खड़े-खड़े कब तक बातें करेंगे ? फिर तुम लोगों के हाथ में यह सामान भी है । चलो घर चल कर थोड़ा आराम कर लो ।

**बसन्त** : मुझे तो आप क्षमा कीजिये, दिगंबरपंतजी ! मैं तो अब सीधा घर ही जाना चाहता हूँ । यदि पिताजी को पता चल गया कि घर पहुँचने से पहिले मैं आप के घर गया था, तो वे आगबवूला हो जायेंगे ।

**दिगंबरपंत** : अजी, पर वहाँ ऐसी देर ही कितनी लगेगी ?

**बसंत** : ( गुलाब को एक तरफ लेजा कर धीरे से ) मुझे घर जाने जाने दो, यार । वरना हमारे ये दीवानजी पिताजी के उल्टे-सीधे कान भर देंगे और फिर भावी योजना के लिये एक बड़ी रुकावट पैदा हो जाएगी । ( प्रकट ) अच्छा, तो अब मैं चलता हूँ । कल मिलूँगा, यह बिल्कुल निश्चित है ।

**गुलाब** : मामा, उसे जाने ही दीजिए । फास्ट क्लास में पास जो हुआ है न ? इसलिये घर जाकर शेखी बघारने की जल्दी में है वह ! जाने दीजिए ।

**दिगंबरपंत** : ठीक है । जैसी तुम लोगों की इच्छा । विष्णुपंतजी, यमू के विवाह के बारे में आपने जो सुझाव दिया है उसे भूलियेगा नहीं । उस वर पर ध्यान रखियेगा । हमें सभी तरफ निशानें लगाते रहना चाहिए, क्योंकि वक्त ही ऐसा है । और क्या कर सकते हैं ?

**गुलाब** : कौन वर है ?

**विष्णुपंत** : है एक ।

**गुलाब** : मैं भी तो सुनूँ ।

**विष्णुपंत** : इस विषय में अधिक बातें न की जाएँ, यही अच्छा है ।

**बसंत** : सच तो है । आजकल नाटककार को अपने नाटक का कथानक और लड़की के पिता को दूँदा हुआ दामाद, काम पूरा होते तक कभी किसी को नहीं बताना चाहिए ।

**गुलाब** : मैं यह कुछ नहीं सुनना चाहता । मुझे बताने में कोई हर्ज नहीं । चूंकि वर विष्णुपंत ने सुभाया है इसी-लिये मुझे जरा शक होता है । हमारे मामा हैं सिध्दाई के अवतार । उन्हें पता ही चल जाये कि कहीं वर है तो वे चाहे जिसके गले पड़ जाते हैं ।

**विष्णुपंत** : पर मेरा सुभाव कोई बुरा तो नहीं है । सदाशिव पेट के हमारे गुंडीपंतजी पेंशनर...

**गुलाब** : क्या उनका छठा लड़का ? पर उसका विवाह तो अभी परसाल ही हुआ है .

**विष्णुपंत** : आप नहीं समझे । उनका लड़का नहीं ! वे खुद ।

**गुलाब** : क्या कहा ? वे खुद ? क्या यही वर सुभाया है तुमने ? बेशर्म । हमारी यमुना के वर के लिये अस्सी साल का मुर्दा बताते समय शर्म नहीं आई तुम्हें ? जीभ नहीं गल गयी तुम्हारी ? लड़की की उम्र बढ़ जाने से उसके प्रति पिता की ममता कम नहीं हो जाती और वह पिता कसाई नहीं बन जाता । समझे ? गुन्डी, पंत ? ले-देकर जिसके पास अब चार सौंसे बची हैं- उस बूढ़े को विवाह करने की जरूरत ? सुनो विष्णु-पंत, जिस दिन हम सब लोगों की कोशिशें बेकार हो जायेंगी, जिस दिन हम देख लेंगे कि बिना

दहेज लिए विवाह करने को कोई युवक तैयार नहीं होता, उस दिन सारी लोक-लज्जा ताक पर रखकर, हम सच्चे अर्थ में कसाई बनेंगे। उस दिन खाली कुर्सी को हाथ लगाए खड़ी यमुना का हम एक फोटो खिंचवायेगे। फिर फोटो के नीचे, जेल से भागे हुए कैदी के वर्णन की तरह यमुना की सुन्दरता का वर्णन लिखकर, खाली कुर्सी को भरने का एक विज्ञापन इसी पूना के किसी सचित्र समाचार-पत्र में, मोटे-मोटे टाइप में छपवा देंगे और नीचे यह सूचना लिख देंगे कि इच्छुक व्यक्ति अधिक जानकारी के लिए संपादकजी से संपर्क स्थापित करें ! चूंकि आज कल समाचार-पत्रों के प्रतिष्ठित संपादक मध्यस्थ का काम करने लगे हैं, इसलिये भूल कर भी यह न सोचना कि अब तुम जैसे मध्यस्थों की दाल गल सकेगी। जाओ, चार कोरे कागज लो और उन पर चाय, चीनी, नमक, मिर्च का हिसाब लिखते रहो। जाओ।

विष्णुपंत : (स्वगत) मूर्ख, उच्चका, पाजी कहीं का।

बसंत : चलिये विष्णुपंतजी। देर बहुत हो गयी है। अच्छा गुलाब, अब कल मिलूँगा। (दोनों का प्रस्थान)

गुलाब : चलिये मामा, आज मैंने काफी कान उमोठ दिये हैं बेटा जी के—

(प्रस्थान)



## दृश्य ३

[ दिगंबरपंत का घर । यमुना एक मासिक-पत्रिका लिये बैठी है । ]

यमुना : उस समय यह शंका मेरे मन में आई ही नहीं । मुझे यही लगा था कि भूल से एक अंक नहीं आया है । पर यह अंक अभी दादा के बेग में रखा मिला और सत्य क्या है, यह मैं समझ गयी । ( पढ़ती है ) 'स्नेहलता देवी की आत्माहुति' ( थोड़ी देर के बाद ) तो मतलब यह कि बंगाल में भी दहेज की राक्षसी प्रथा ने यहाँ से भी अधिक भयंकर अनर्थ मचाया है । स्नेहलता देवी ने अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा ली । बेचारी ने सचमुच ही आत्माहुति दी । उसने अपना मन और अपना शरीर दोनों जला डाले । उसकी उम्र कितनी थी ? चौदह वर्ष ! और मेरी है सत्रह वर्ष । याने मैंने पिता जी को तीन वर्षों तक बेकार सताया । मुझे इसके पहिले ही जल कर मर जाना चाहिए था । यह उपाय मुझे पहिले क्यों नहीं सूझा ? कितना सीधा और सहज उपाय है ? रात-दिन अन्तःकरण को चिन्ता से जलाते हुए जीवित रहने की अपेक्षा, मिट्टी के तेल से एक क्षण में जलकर भस्म हो जाना, क्या बुरा है ? कैसी पगली हूँ मैं ? ( फिर पढ़ती है । ) क्या मैं सचमुच पगली हूँ— या कि स्नेहलता ही पगली थी ? उसके इस

चित्र में उसकी आँखें बिल्कुल पागल की आँखों जैसी दिख रही हैं—या कि मेरी ही आँखें किसी पागल की आँखों की तरह हो गयी हैं और अपनी ही आँखों का प्रतिबिम्ब मैं स्नेहलता की इन आँखों में देख रही हूँ ? पिता जी ने अपनी छः बेटियों के विवाह किये, पर वे पागल नहीं हुए। उनका घर, जमीन और नौकरी—सब कुछ चला गया, फिर भी उन्होंने अपने आप को जीवित रखा है। माँ भी कितनी शान्ति से रहती है, जैसे हम लोगों को किसी प्रकार का कभी कोई दुख हुआ ही नहीं। नौकरी चली जाने से पिताजी पर एक बड़ी विपत्ति ही आ गयी थी। फिर भी उनका दिल नहीं टूटा। प्रत्युत, इस विपत्ति में भी, उन्होंने स्वयं मुझे इतनी अच्छी शिक्षा दी कि कालेज जानेवाली लड़कियाँ भी मेरी प्रशंसा करती हैं। यह सब पिताजी के धैर्य का फल है। मैं भी आखिर उन्हीं की बेटा हूँ ? मैं अपना दिल इतना कमजोर क्यों बनाऊँगी ? पिताजी तो व्यर्थ ही डर गये। उन्हें लगा कि स्नेहलता की तरह कहीं मैं आत्म-हत्या न कर लूँ ? ( हँसकर ) मैं स्नेहलता की तरह पगली नहीं हूँ। ईश्वर ने मुझे धीरज दिया है। पिताजी ने मुझे समझ दी है, और माँ ने मुझे सहनशीलता का पाठ पढ़ाया है। स्नेहलता की तरह मैं नहीं मरूँगी—मैं आत्म-हत्या हरगिज न करूँगी। दुर्भाग्य से मेरा विवाह नहीं हुआ तो -- ( बसंत का प्रवेश )।

**बसंत** : कौन ? यमुना—तुम—इन कपड़ों में ? मेरा ख्याल था कि तुम्हारे पिताजी को ऐसे कपड़े पसंद नहीं ।

**यमुना** : हाँ । पर अब समय बदल गया है । ऐसी बहुत-सी बातें हैं जो पिताजी को पसंद नहीं हैं । पर अपनी बेटियों के लिए आज उन्हें उन सब बातों को मजबूरन पसंद करना पड़ता है । उन्हीं में ये कपड़े हैं । और क्या बताऊँ ?

**बसंत** : ( स्वगत ) यमुना इतनी ढीठ पहिले तो नहीं थी । समय मनुष्य को ढीठ बना देता है, इसमें संदेह नहीं । ( प्रकट ) गुलाब कहों है ? पार्वती चाची का भी कहीं पता नहीं है ।

**यमुना** : माँ मंदिर गयी हैं । दादा भी गया है—गया है यूँ ही किसी काम से—पिताजी भी उसके साथ गये हैं ।

**बसंत** : ऐसी दांपहरी में चाची मंदिर गयी हैं ?

**यमुना** : आज पर्व ही ऐसा है । अब शर्म भी कहों तक खाऊँ ? आप नहीं जानते—हमारे घर में निगोड़ा यह नाटक प्रायः रोज ही हुआ करता है । आज भी एक महाशय मुझे देखने आ रहे हैं । एक समय था, जब देखने वालों का समाचार पाकर, शर्म से मेरा अंग सिंगिट जाता था । पर अब रोज-रोज वही नाटक होने के कारण मुझे उसकी आदत ही हो गयी है और मुझे अब इसमें भी अनूठापन नहीं लगता । घर के जूटे बर्तन माँजना और देखने आनेवाले के सामने आत्म-प्रदर्शन करना—ये दोनों बातें मुझे अब एकसी ही लगती हैं ।

**बसंत** : ( स्वगत ) यह कितनी बदल गयी है ? कहीं पहिले की वह लज्जाशील मुग्ध बालिका, और कहीं दुष्ट समाज की लड़की देखने की वृणित प्रथा में झकझोर दी गयी यह युवती ? ( प्रकट ) यमुना, मुझे तुम्हारी हालत पर बड़ी दया आती है ।

**यमुना** : आपने कोल्हटकर के मूकनायक नाटक में एक वाक्य पढ़ा होगा ?

**बसंत** : कौन सा ?

**यमुना** : दया और प्रेम दोनों पास-पास रहते हैं ।

**बसंत** : हाँ यमुना । परिस्थिति तो कुछ इसी तरह की उत्पन्न हो गयी है, इसमें शक नहीं ।

**यमुना** फिर ?

**बसंत** : फिर क्या ?—मुझे तो चारों ओर अँधेरा ही अँधेरा दिख रहा है । समझ नहीं पा रहा हूँ कि मेरा क्या होगा ? आज तुम्हें कोई देखने आने वाले हैं, इसीलिये क्या ये कपड़े पहिने हैं ?

**यमुना** : हाँ । आनेवाले महाशय जानवरों के डाक्टर हैं । उन्हें सम्भवतः इसी तरह के कपड़े पसंद हों । देखनेवाले प्रत्येक मनुष्य की इच्छा के अनुसार ही हम लड़कियों को सजना पड़ता है । समझे ? इस मामले में समाज ने हम लड़कियों को वेश्याओं की श्रेणी में लाकर बिठा दिया है, जो खरीददारों का मन लुभाने के लिए तन सजा कर बैठती हैं ।

**बसंत** : कितना कठोर सत्य है ?

**यमुना** : पर सत्य तो है न ?

**बसंत** : सत्य है इसीलिए कठोर भी है । यमुना, अपने वचन के दिन याद आते हैं तुम्हें ? उन दिनों की याद में कितनी मधुरता है, कितनी मादकता है । जब वे दिन याद आते हैं, तो ऐसा लगता है कि वह मस्ती भरा वचन फिर से लौट आवे । पर हमें कुछ भी लगे, हम लाख चाहें, पर जो स्थिति है वह थोड़े ही बदल जायगी ? वे दिन काल के प्रवाह में बह गए । अब वापिस नहीं आयेंगे । वे सीधे-सादे विचार वे सरल बातें, वह निष्काम प्रेम, वह भोला प्यार, यह सब उन्हीं दिनों के साथ खो गया ।

**यमुना** : हताश हो जाना कम-से-कम पुरुष को शोभा नहीं देता । निराशा को हृदय में दबाये आँसू बहाने के लिये ईश्वर ने हिन्दू-स्त्रियों को पैदा किया है । पुरुष केवल दीर्घ आँहें भरते रहें तो इसमें कोई बड़ा रस है, ऐसा कम-से-कम मैं तो नहीं समझती ।

**बसंत** : यमुना, तुम जो भी कह लो । पर मिलन के पहिले ही जो विरह के दिन आ जाते हैं, वे दुःसह होते हैं । ज्वाला निकलने से पहिले भी अग्नि में तपन होती है, यह जो जानता है...

**यमुना** : इसे सब जानते हैं ! प्रत्येक व्यक्ति जानता है । पर वह शब्दों में इसका वर्णन नहीं कर सकता । अग्नि जलती है, इनमें सन्देह नहीं । पर यह जानते हुए भी

कि वह अग्नि किस तरह बुझायी जा सकती है, मनुष्य सच्चे पानी की ओर नहीं दौड़ता । उस आग में अगर स्वाभिमान का पानी डाला जाए, तो ऐसी ज्वाला की फूटकारें दीर्घ निश्वास में परिणित नहीं होती ।

**बसंत** : तुम सच कहती हो, यमुना । सचमुच मैं डरपोक हूँ । मुझे साफ-साफ शब्दों में तुम से यह कहने की भी हिम्मत नहीं होती थी कि मैं बचपन से तुम्हें प्यार करता हूँ । यमुना, तुम्हारी यह स्थिति देखकर तो वह प्रेम अब दुगने वेग से बढ़ने लगा है । पर क्या करूँ ? मैं पराधीन हूँ । पिताजी की इच्छा के विरुद्ध मैं नहीं जा सकता ।

**यमुना** : तो जिस पर आपका प्रेम है, वह यदि दूसरी की हो जाये, तो आपको बड़ा सन्तोष होगा ? क्यों यही न ? आज जो मुझे देखने वाले आ रहे हैं, उनके साथ यदि मेरा विवाह न जमा, तो फिर एक बूढ़े की पत्नी बनकर, उसकी अन्तिम साँसें गिनना ही मेरे भाग्य से बँधा है ? क्या यह आप नहीं जानते ?

**बसंत** : जिस दिन मैं आया, उस दिन विष्णुपंत कुछ ऐसा कहते जरूर थे । क्या करूँ यमुना ? इस समय मुझे क्या करना चाहिए, मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ । एक तरफ पिता जी का भय है और दूसरी तरफ है बचपन से हृदय में सँजो कर रखा हुआ तुम्हारे प्रति मेरा प्रगाढ़ प्रेम । इन दोनों में भयङ्कर द्वन्द्व हो रहा है । पर मुझे कुछ-न-कुछ तो करना ही होगा । मैं करूँगा ।

यमुना । आज तुम्हें जो देखने आ रहे हैं, उन्हें तुम निराश लौटा दो । आगे की बात देखी जायगी ।

यमुना : ऐसी थोथी आशा पर आज टल रहे सङ्कट को मैं हमेशा के लिये क्यों बनाए रखूँ ? मुझे पहिले आश्वासन दो, वचन दो और...

बसंत : तुम्हें वचन दूँ यमुना ?—कैसे ? क्या करूँ ? अगर वचन दूँगा, तो क्या मैं उसे पूरा कर सकूँगा ?

यमुना : जहाँ चाह है वहाँ राह भी है ।

बसंत : यमुना, मुझे कुछ समय दो-थोड़ा सोच लेने दो । कम-से-कम गुलाब से ही पूछ लूँ । बोलो कैसे दूँ वन ? या कि वचन दे ही दूँ ? यमुना, क्या दे ही दूँ वचन ? बोलो, बोलो न ?

यमुना : निश्चय कर लेने से राह आप-ही-आप बनने लगती है ! सोचते बैठे रहने में सिर्फ वक्त की बरबादी है । देखिए, इतनी देर से मैं आप से बातें कर रही हूँ पर मुझे आपका नाम लेने की हिम्मत नहीं हुई । आपके भाई-बन्द जिस नाम से आपको पुकारते हैं, उस नाम से तो आपको पुकारने की मेरी हिम्मत ही नहीं हुई, ऐसा क्यों हुआ ? यह काहे का लक्षण है ?

बसंत : यमुना डरो नहीं ! मैं तुम्हें वचन देता हूँ । मुझे चाहे जो कष्ट हों, चाहे जैसी यन्त्रणायें हों, घर-द्वार, बाप, भाई, बहिन इन सब से भी मुझे वंचित हो जाना पड़े मुझे इसकी परवाह नहीं । इन सब आपत्तियों

का सामना करके मैं तुम्हीं से विवाह करूँगा ।

( पावती का प्रवेश )

**पार्वती** : कौन ? बसंत ? कब आये बेटा ? यमुना तू ने बैठने तक के लिये नहीं कहा ? ठूँठ की तरह खड़ी क्या है ? जा । कम-से-कम चाय के लिये पानी तो चढ़ा दे । बैठो बेटा बसंत । (यमुना जाती है ।)

**बसंत** : माफ कीजिए चाची, क्यों तकलीफ करती हँ ? मैं तो अभी चाय पीकर ही आ रहा हूँ ।

**पार्वती** : इसके पहिले तुमने चाय पी होगी, यह मुझे सच नहीं लगता । मैं समझ गई बात कुछ और है ! हम गरीबों के घर की चाय तुम्हें कैसे अच्छी लगेगी ?

**बसंत** : आपका इतना आग्रह है, तो मैं इंकार नहीं करूँगा । पी लूँगा थोड़ी-सी । पर व्यर्थ ही आपको चाय बनाने की तकलीफ होगी, यही सोचा था ।

**पार्वती** : इसमें तकलीफ काहे की बेटा ? मुझे चाय की तैयारी तो करनी ही थी । आज हमारी यमू को देखने आ रहे हैं । इसलिए उनके लिए तो कम-से-कम चाय बनानी ही होगी न ? इस तरह कितनी ही बार मैंने चाय बनाई, कितनी ही दावते हुई, कितने ही लोग देख गये । पर रोज हमारा यही चल रहा है । लोग आते हैं, देखते हैं, चाय पीते हैं और चले जाते हैं । फिर जब दहेज की बात आती है, तब अलबत्ता हमारी हिम्मत टूट जाती है और उधार का उत्साह जहाँ-का-तहाँ टंडा पड़ जाता है ।

**बसंत** : इस दहेज ने जाने कितने पाप कराये हैं, और भगवान जाने, अभी और कितने कराएगा ? (पास पड़ी पत्रिका उठा कर) अभी तक तो कुछ ही जातियों में इस प्रथा का विशेष रूप से अधिक जोर था। पर धीरे-धीरे हमारी जाति भी इस राक्षसी प्रथा का शिकार होने लगी है। (पढ़कर चौंकता है) यह क्या ? यह अंक यहाँ कैसे आया ? इसे यमुना ने तो नहीं देखा न ?

**पार्वती** : (घबड़ाकर) क्यों ? ऐसा क्या है इसमें ?

**बसंत** : इसमें दहेज के बलि की कहानी है। बड़ी करुण कहानी है। बंगाल में स्नेहलता नाम की एक लड़की थी। दहेज के कारण उसका विवाह नहीं हो पा रहा था। इससे तङ्ग आकर उसने अपने शरीर पर मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा ली। यही कहानी उस लड़की के चित्र सहित इस अंक में आई है।

**पार्वती** : अपने आप को जला लेंगी, जरूर जला लेंगी। यह प्रथा यदि इसी तरह जोर पकड़ती गयी, तो हमारी लड़कियाँ भी इसी तरह अपने आप को जलाकर भस्म कर डालेंगी। फिर भी दहेज ऐंठने वाले वर के बाप की आँखें किसी भी तरह नहीं खुलेंगी।...हे राम, कहीं यमुना ने तो यह पत्रिका नहीं देखी ? नहीं तो कुछ उल्टा-सीधा न कर बैठे ! हाँ बेटा, लड़की है बड़ी खबती ! मन में ठेस लगते ही कहीं अपनी जान पर ही न खेल जाये।

**बसंत** : मैं ऐसा नहीं सोचता। यह सच है कि पहिले मेरे मन

में भी यही बात आई थी । पर थोड़ा सोचने के बाद मेरी राय बदल गयी । कम-से-कम आज के बाद तो ऐसी कोई बात होने का भय नहीं ।

पार्वती : आज के बाद भय क्यों नहीं ?

बसंत : इसका कारण मैं बताता हूँ । पर उसे अपने ही मन में गाँठ बाँधकर रखिये । और तो और दिगम्बर चाचा को भी इसका पता न लगना चाहिये । मैंने यह वचन दिया है...

पार्वती : किसे ? कैसा वचन ?

बसंत : चाचीजी पहिले कसम खाइये कि आप यह बात किसी से भी नहीं कहेंगी ।

पार्वती : राम कसम खाती हूँ बेटा, कि तुम अभी मुझसे जो कहोगे, वह मैं किसी से भी नहीं कहूँगी । अब तो हुआ !

बसंत : मैंने यमुना को वचन दिया है कि चाहे कुछ भी हो मैं उसी से विवाह करूँगा ।

पार्वती : ईश्वर तुम्हें चिरायु करे बेटा ! ( आँखें पोंछती है । ) ईश्वर ने आखिर इस दुखिया की सुन ली । कौन कहता है भगवान, कि तुम बहरे हो गये ? बेटा बसंत, अपनी खाल के जूते बना कर तुम्हें पहिना दूँ, फिर भी तुम्हारे अहसान का बदला मैं न चुका सकूँगी । मेरी बिटिया बड़ी गुणवती है, यह अपने मुँह से क्या कहूँ ? अब अनुभव से तुम्हें पता चल ही जाएगा । जुग-जुग जियो मेरे लाल ! तुम्हारी गृहस्थी खूब फले-फूले ।

तुमने मेरा बड़ा भार उठा लिया । वरना वह भार मैं कैसे ढोती, यह एक बड़ी समस्या थी मेरे सामने आज-कल ।

**बसंत** : ( स्वगत ) दुखियों के आँसू पोंछने में कैसा स्वर्गीय आनन्द प्राप्त होता है, इसका अनुभव मुझे आज हुआ । पर इसे आँसू पोंछना भी कैसे कहूँ ? आँसू दुखियों के निरन्तर की निधि हैं । हमेशा आँसू दुख के होते हैं । परन्तु ऐसे अवसरों पर दुःख के आँसू आनन्द के आँसुओं में बदल जाते हैं । किस तरह सिसक-सिसक कर आनन्द के आँसू बहा रही है बेचारी !

**पार्वती** : फिर आज लड़की दिखाने का नाटक करके उसकी और विडम्बना करने की क्या जरूरत है ?

**बसंत** : देखिए, फिर यही बात ! यहीं तो आप गलती करती हैं । मैंने कहा न, कि यह बात चाचा जी को भी नहीं मालूम होनी चाहिए । अभी और कितनी ही कठिनाइयाँ आयेंगी । उन्हें दूर करने के उपाय सोचने होंगे । ( यमुना चाय लेकर आती है । )

**पार्वती** : यमुना, दे तो चाय अपने...

**बसंत** : फिर वही बात चाची । मैंने कहा न, अभी मुँह पर ताला लगा लीजिए ।

**यमुना** : मतलब ? क्या माँ से भी कह दिया आपने ?

**बसंत** : इस वक्त बिल्कुल चुप रहो । एक शब्द भी न बोलो । याद है बचपन में हम चुप्पी का खेल खेलते थे । जो पहिले बोलता था उसे सजा मिलती थी ! ( यमुना

चाय देती है । ) चाय की कसम, यह चाय बहुत ही बढ़िया बनी है...अनेक चाहों का संदेश बनकर आई है ।

**पार्वती** : संसार में सदा तुम्हारी चाह इसी तरह बनी रहे, यही मैं चाहती हूँ ।

**बसंत** : अच्छा, अब मैं चलता हूँ...अरे बाप रे...ये तो सामने से मंजरी आ रही है...ऐसा न हो कि वह मुझे देख ले, वरना काम बिगाड़ जाने की सम्भावना है...चाची सुनो, तुम जरा फौरन पिछवाड़े का दरवाजा दिखा दो जिससे मैं निकल भागूँ ।  
( बसंत और पार्वती का प्रस्थान । मंजरी का प्रवेश । )

**मंजरी** : कहिए यमुना जी, आप मेकअप करके नाचने के लिए तैयार हो गयीं ? अब नाटक कब शुरू होगा ?

**यमुना** : अभी तुम इस विडम्बना में फँसी नहीं हो, इसीलिए तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है ।

**मंजरी** : देख न, कल का वक्त यूँ ही गया । मैंने तुम्हें सजा-सँवार कर रखा । शाम तक राह देखती रही । पर तुम्हें देखने आने वाला वह दोर-डाक्टर आया ही नहीं ।

**यमुना** : बस यही तो होता रहता है । पहिले खबर आती है...आज आता हूँ । थोड़ी देर में फिर खबर आती है...आज नहीं, कल आऊँगा...बस । इसी तरह खबरों पर खबरें चलती रहती हैं । इधर उनकी रुचि का ध्यान रखकर, मैं रोज बन-सँवार कर बैठती हूँ और दर्शकों के न आने के कारण बंद हुए नाटक के

अभिनेता की तरह निराश होकर, अपना मेकअप समाप्त कर देती हूँ। बस यही होता रहता है। समझी ? फिर मेकअप भी कई तरह से करना पड़ता है। अगर पुराने विचार के कोई पंडितजी देखने आते हैं, तो बालों को तान-तान कर इस तरह चोटी गूँथनी पड़ती है कि गरदन भी अकड़ जाय। पुराने ढंग के गहने पहिनने पड़ते हैं। नौगजी कौँछ वाली साड़ी और माथे पर कुंकुम का इतना बड़ा टीका कि सौ गज से साफ दिखाई दे...

**मंजरी** : और समूचे गालों पर जवरदस्ती खींच-तानकर लज्जा के भाव अंकित करने पड़ते होंगे। है न ? क्योंकि लज्जा तो माल का लेबिल है। उसी को देखकर ग्राहक माल की परीक्षा करता है।

**यमुना** : उनके सामने जाना है, तो एकदम जाने से काम नहीं चलता, धीरे-धीरे जाकर समय नष्ट करने से भी काम नहीं चलता। उनके सामने पहुँचते ही दो घुटनों के बीच गर्दन छिपाकर बैठना पड़ता है। गर्दन तनिक भी न दिखनी चाहिए।

**मंजरी** : वधू-पक्ष है न ? लड़कियाँ कैसे अपनी गर्दन तान कर रख सकती हैं। उन्हें कहों से आया मान ?

**यमुना** : बेशक ! लड़कियों का कोई मान नहीं। अगर मान होता, तो यह लड़की देखने का तमाशा कभी का बंद हो जाता। तुम बड़ी अभागिनी हो मंजरी, जो तुम्हें अभी तक इसका अनुभव नहीं हुआ।

- मंजरी : लड़की देखने की यह प्रथा विवाह की शायद पहिली विधि है ?
- यमुना : अजी, विधि नहीं—विधियाँ कहो ।
- मंजरी : हाँ, ठीक तो है । आज तक तुम्हें पन्द्रह-बीस आदमी तो जरूर देख गये होंगे ?
- यमुना : दस-पन्द्रह...क्या कहती हो मंजरी...मैंने हिसाब रखा है । अभी तक पूरे इक्यानवे लोग देख गये । आज आने वाले बानवे नंबर के हैं ।
- मंजरी : क्या कहा—नाईन्टी-टू ? तो अब सेंचुरी के लिए आठ और रहे हैं ! आज तक तूने कैसे उनका सामना किया तू ही जाने । ...ले वो नये देखने वाले भी आ गये...देख...यह तो बता । इन दोनों में तेरे भाई साहब कौन से हैं ?
- यमुना : जो चश्मा लगाये हैं न, वही है मेरा गुलाब दादा । उठ, चल ! हम अंदर चलें ।  
( दोनों का प्रस्थान । गुलाब, मनोहर तथा दिगंबरपंत का प्रवेश । )
- गुलाब : आइए मनोहर जी ! पधारिए । मामा जी, आप यमुना को बाहर ले आइए । ( दिगंबरपंत का प्रस्थान )
- मनोहर : छिः कितनी गन्दी जगह में है यह मकान और मकान का यह सामान भी बिल्कुल गन्दा दिखता है ।
- गुलाब : और इस गन्दे सामान के बीच तुम घूरे पर पड़े हीरे के टुकड़े की तरह शोभा दे रहे हो ! ओ ह्वाट ए ब्युटिफुल ब्रू यू आर !

**मनोहर** : देखो गुलाब, तुम्हें कहे देता हूँ...कम-से-कम इस जगह पर यदि तुमने मुझसे बूट या जानवर कहा, तो सहने का नहीं । नाराज होकर चला जाऊँगा । समझे ?

**गुलाब** : नहीं-नहीं ! अरे भाई, माफ करना तुम तो एकदम आपे से बाहर हो गये । मैं भूल गया कि दामाद का मतलब है काला नाग । एकदम काट खायेगा, या कम-से-कम सींग ही मार देगा ।

**मनोहर** : देखो...फिर जताये देता हूँ... होता हूँ नाराज ? बोलो, जाऊँ ?

**गुलाब** : नहीं-नहीं, मेरे हुजूर ! यह तो मजाक है । अरे यार, मजाक करना तो साले का जन्म-सिद्ध अधिकार है ।  
( दिगम्बरपंत यमुना और मंजरी का प्रवेश । पार्वती दरवाजे की आड़ में खड़ी दिखती है । )

**दिगम्बरपंत** : आ बेटा यमुना, यहाँ बैठ । आओ मंजरी, तुम भी आओ । तुम यहाँ बैठो ।

**गुलाब** : मामाजी, ये शायद वसंत की बहिन हैं । बैठिए मंजरी देवी, इस कुर्सी पर बैठिए ।

**मनोहर** : हूँ...तो अब...( धीरे-से जेब से एक प्रश्नावली निकाल कर पढ़ता है । )...जी...आपका नाम ?

**यमुना** : यमुना ।

**मनोहर** : आपके पिताजी का नाम ? जरा जोर से बोलिए ।

**यमुना** : दिगंबर भिकाजी खरे ।

- मनोहर : आप कितने भाई-बहिन हैं ?
- यमुना : हम आठ बहिनें हैं ।
- मनोहर : (स्वगत) आठ बहिनें—‘अरे बाप रे !’ (प्रकट) आपकी सभी बहिनें जीवित हैं न ?
- यमुना : जी हाँ ।
- मनोहर : आपके पिताजी तो जीवित हैं न ? यदि नहीं हैं तो, उनकी मृत्यु किस रोग से और कब हुई ?
- गुलाब : अजी जानवर साहब क्या भूल गये कि यह हमारे मामाजी की लड़की है ।
- मनोहर : (स्वगत) ओफ प्रश्नावली ने धोखा दिया ! (प्रकट) अच्छा यह प्रश्न रहने दीजिये । अब यह बताइये कि आपको पढ़ना आता है या नहीं ?
- यमुना : जी हाँ आता है ।
- मनोहर : तो जाइए । एक पुस्तक लाइये तो देखूँ । (यमुना तीन चार पुस्तकें लाती है ।) यह क्या ? रघुवंश । बाप रे, यह नहीं ! यह क्या ? केनिलवर्ड ? माई गाड ! यह क्या ? हीरोज एन्ड हीरोवर्शिप-कारलाईल ? ये किसकी पुस्तकें हैं ?
- मंजरी : यमुना की ही हैं । क्यों ?
- मनोहर : कोई अपनी भाषा की पुस्तक नहीं है क्या इनके पास ? आज कल अँग्रेजी का इतना महत्व बढ़ गया है कि लड़कियाँ भी अपनी भाषा की उपेक्षा करने लगी हैं । मैं अपनी भाषा में ही परीक्षा लेना चाहता हूँ । मुझे

ऐसी ही एक पुस्तक लाकर दीजिए । (मंजरी एक हिंदी पुस्तक लाती है । मनोहर उसे खोल कर यमुना को देता है ।) हाँ । यहाँ से पढ़िये ।

यमुना : (पढ़ती है) “पृथ्वी पर ऐसे अनेक घर हैं जो आज श्मशान-वत हो गये हैं । वहाँ गतायु की आशाओं और प्रेम के भूत नृत्य करते दिखाई देते हैं ।”

मनोहर : गतायु का क्या अर्थ है ?

यमुना : गतायु याने बीती हुई आयु या जीवन ।

मनोहर : गलत—बिल्कुल गलत ! गतायु का अर्थ है...गत याने सितार की गत और आयु (स्वगत) आय और व्यय (प्रकट) आयु याने आय या आमदनी । इसलिये गतायु का मतलब हुआ...सितार की गत बजाकर प्राप्त होने वाली आमदनी ।

गुलाब : (स्वगत) हिन्दी के प्रोफेसर की जगह कहीं खाली है या नहीं, इसका मुझे पता लगाना होगा ।

मनोहर : आगे पढ़िये ।

यमुना : (पढ़ती है) “बचपन में जब हम राम, सीता, सत्यवान और सावित्री की कथाएँ सुनते हैं तब सुख और दुख के अवसरों पर अचल निष्ठा के दृश्य दिखाने वाला—”

मनोहर : ठीक से पढ़िए ! अचल नहीं...अंचल होगा ।

यमुना : यहाँ अचल निष्ठा ही लिखा है...अंचल निष्ठा नहीं ।

मनोहर : आप समझती नहीं । वहाँ अंचल निष्ठा ही होना

चाहिये । शायद प्रेस के भूत अनुस्वार खा गए होंगे ।  
गो ऑन ।

यमुना : (पढ़ती है ।) “अंचल निष्ठा के दृश्य दिखानेवाला संसार एक सुन्दर नाटक है । ऐसी एक मीठी कल्पना निरन्तर हमारे अन्तःकारण में थिरकती है । परन्तु संसार का जैसे-जैसे अनुभव होने लगता है, वैसे-वैसे मुख के वे सपने टूट जाते हैं और हमारी आँखें खुल जाती हैं ।”

मनोहर : अच्छा, अब पुस्तक बन्द कर दीजिये और अभी जो आपने पढ़ा उसका भावार्थ कह दीजिये ।

गुलाब : वह बेचारी क्या भावार्थ बतायेगी ? तुम्हीं बताओ न ?

मनोहर : क्या मजाक है ! जो पढ़ा उसका भावार्थ भी नहीं बता सकती ? इसका क्या मतलब ?

गुलाब : तुम्हारा भाषा-ज्ञान देखकर बेचारी के छक्के छूट गये हैं ।

मनोहर : हिन्दी भाषा का मेरा अनुसङ्ग या कि क्या कहते हैं उसे, बड़ा जबरदस्त है ।

मंजरी : आप शायद व्यासङ्ग कहना चाहते हैं ।

मनोहर : आप हिन्दी क्या जानें ?

गुलाब : तो आप भावार्थ बताइये न ?

मनोहर : स्वयं पढ़ने पर जो नहीं समझ सका, दूसरे के बताने से वह क्या खाक समझेगा । अच्छा, अब आप यह पुस्तक अन्दर रख खाइये । (यमुना जाने लगती है)

वहाँ से नहीं, यहाँ से जाइये । (उस ओर मे जाती है (स्वगत) चाल तो ठीक है । लँगड़ी नहीं मालूम होती (फिर प्रश्नावली जेब से निकालकर पढ़ता है और जेब से सुई धागा निकालता है ।) अच्छा, अब आप सुई में यह धागा तो डालिये । (यमुना हँसती हुई धागा डालती है) आँखें भी ठीक हैं । दिखता तो है । (उषा और निशा का प्रवेश)

**गुलाब** : स्कूल से आ गयीं तुम लोग । देखो, चुपचाप बैठो... शैतानी बिल्कुल नहीं ।

**मनोहर** : ये किसकी लड़कियाँ हैं ?

**मंजरी** : क्यों, क्या इनकी भी परीक्षा लेना चाहते हैं डाक्टर साहब, फिलहाल एक ही की परीक्षा निपटाइये । विवाह अभी सिर्फ इसी लड़की का होना है ।

**मनोहर** : अच्छा, आपको खाना बनाना आता है ?

**उषा-निशा** : हाँ । आता है । खूब आता है ।

**उषा** : आपके घर यदि पन्द्रह-बीस आदमी भी हों तो उनका सारा खाना चुटकियों में बनाकर फेंक दूँगी ।

**मनोहर** : ( यमुना से ) मैं आप से पूछ रहा हूँ । आप खाना पका सकती हैं क्या ?

**यमुना** : हाँ ।

**मनोहर** : ( प्रश्नावली देखकर ) चटपट का भात बना सकती हैं क्या ?

**उषा** : चटपट का भात ? भात बनता है चाँवलों का । उप-

वास के दिन देवधान का, कहीं-कहीं कोदों और कुटकी का भी बनता है । पर यह चटपट का भात मुआ क्या बला है ?

**मनोहर** : नहीं बना सकतीं न ? दफ्तर जाने की यदि जल्दी हो, तो बड़ी मुश्किल होगी । अच्छा, अब आप अपना हाथ दीजिए । मैं आपकी नाड़ी देखूँगा ।

**मंजरो** : अजी डाक्टर साहब, वह आपकी पेशेंट नहीं है । बेचारी गरीब गाय । ... अभी आपके चंगुल में नहीं फँसी है ।

**गुलाब** : गरीब गाय है, इसीलिए तो नाड़ी देखने के लिए हाथ मांग रहे हैं । पर सावधान डाक्टर, गाय कहीं लात न फटकार दे ।

**मनोहर** : मैंने ऐसी कई लात मारने वाली शैतान गायों को ठीक कर दिया है । खैर, छोड़िये इसे । इनका स्वास्थ्य तो अच्छा मालूम होता है । आप लोगों ने इनकी खुराक कम नहीं की शायद । बहुधा जवान लड़कियों की खुराक कम कर देते हैं, जिससे वे मोटी न हो जायें । खैर ! बस, अब मैं खत्म ही करता हूँ अपनी परीक्षा । अच्छा, अब जरा गर्दन ऊँची करके दो मिनट मेरी ओर देखिए जिससे मैं आपकी छवि अच्छी तरह से निरख सकूँ । ( घड़ी निकाल कर मिनट देखता है । ) अच्छा, अब बताइए ! मेरे साथ विवाह करके आपको कैसा लगेगा ?

**उषा** : लगेगा कि विवाह हो गया ।

**मनोहर** : ऐ लड़की, तू बीच में न बोल, ... ( यमुना से ) हां, बोलिए ! क्या आप मुझसे प्रेम करती हैं ? ( यमुना उठकर अन्दर चली जाती है । ) हाँ, प्रेम है इसमें संदेह नहीं ! इसीलिए तो आँखों पर लज्जा का भार लिये भाग गयीं ।

**दिगंबरपंत** : ये क्या बेहूदा सवाल पूछते हैं आप लड़की से ?

**मनोहर** : बेहूदा ? क्या यह बेहूदा सवाल है ? वाह ! प्रेम के ज्वालामुखी का उद्योग ... नहीं उद्रेग हुए बिना ...

**मंजरी** : उद्रेक होगा शायद ।

**मनोहर** : आपको हिन्दी नहीं आती । उद्रेग हुए बिना विवाह सफल नहीं होता और प्रेम पहिले दर्शन में ही हुआ करता है । प्रत्येक नाटक और उपन्यास में हमें यही दिखायी देगा ।

**गुलाम** : खैर, इन बातों को छोड़िये अभी । लीजिए, पहिले चाय पीजिए । ( चाय का कप देता है । )

**मनोहर** : ( चाय पी कर ) अच्छा, दिगंबर जी, अब आप मुझे यह बताइए कि आपके माता-पिता, चाचा-चाची, मामा-मामी, चचेरे भाई ... फुफेरे भाई याने जो भी आपके कुटुम्बी मरे ... किन-किन रोगों से मरे और कब मरे ? उसी तरह यह भी बताइए कि उनमें से किसी को तपेदिक, गलित कुष्ठ, रक्त-चाप अथवा इसी तरह की कोई भयंकर बीमारी तो नहीं थी ? यही जानकारी मुझे आपकी पत्नी के परिवार की भी चाहिए ।

दिगंबरपंत : यह सब जानकारी मैं आपको बाद में लिख भेजूँगा ।

गुलाब : ऐसा क्यों ? बीमा कम्पनी का एक फार्म ही भर कर आपके पास भेज दिया जायेगा ।

मनोहर : ठीक है । अब मैं चलता हूँ । इन सब प्रश्नों का उत्तर आने पर मैं अपना निर्णय आप को बताऊँगा । उसके बाद दहेज की बात तय करेंगे । ( जाता है । )

मंजरी : सोच रही थी कि इतनी सारी विडम्बना होने के बाद तो कम-से-कम दहेज शब्द अब कानों में नहीं पड़ेगा । पर नहीं । दहेज की बात निकालने को वह नहीं भूला । चाचा जी, अभी तक मेरा निश्चय था कि विवाह नहीं करूँगी । परन्तु इस नाटक को देख कर मेरा निश्चय ढहने लगा है । डाक्टर जैसे मूर्ख को देख कर मेरे मन में आने लगा है कि मैं विवाह कराने को तैयार हो जाऊँ । देखने-दिखाने के इस नाटक को जलटा करके देखूँ और ऐसे बेवकूफों को अच्छा सबक सिखा दूँ ।

गुलाब : ( स्वगत ) अच्छा यह बात है ! कहती थी...विवाह ही नहीं करूँगी...और अब इतना जोश !

दिगंबरपंत : बेटा मंजरी, कहना बहुत सरल है पर करना कठिन होता है । प्रसंग आने पर सारी विडम्बना चुपचाप सहने के लिए बाध्य हो जाना पड़ता है ।

मंजरी : अच्छा चाचा जी, तो आपको किसी दिन यह फार्स करके दिखा ही दूँगी ।

उषा : मंजरी दीदी...सच कहिए, आपका विवाह अभी

तक क्यों नहीं हुआ ? आपके पिता जी तो बहुत धनी हैं । वे तो खूब दहेज दे सकते हैं... फिर ?

मंजरी : मुझसे विवाह करने वाले को पहिले अपना बीमा कराना होगा । समझी ?

दिगंबरपंत : ऐसी बात नहीं कहते बेटी ! उषा-निशा, तुम दोनों मंजरी के घर तक चली जाओ । शाम हो गयी है । उसका अकेला जाना ठीक नहीं ।

गुलाब : उषा, जरा रुकना ! मेरी यह नोट-बुक बसंत को दे देना ।

मंजरी : मुझे दीजिए न ! मैं ही दे दूँगी । मुझे साथ की क्या जरूरत ? मैं तो रोज शाम को घूमने जाती हूँ । अकेली चली जाऊँगी । ( मंजरी को छोड़ कर सब का प्रस्थान ) क्या है इस नोट-बुक में ? कवितायेँ दिख रही हैं । वाह, डाक्टर और कवि ! यह तो बड़े आश्चर्य की बात है ! पहिले मैं ही पढ़कर देखूँगी इन कविताओं को । आजकल तो जहाँ देखो वहाँ ये मुए कवि ही बरसाती मेंढकों की तरह टरते मजरे आते हैं ।

( परदा गिरता है । )



## दूसरा अंक

### दृश्य १

[ स्थान बैड-गार्डन । वसन्त और गुलाब का प्रवेश । ]

**गुलाब** : देखी मेरी कवितायें ?

**वसन्त** : सच बताऊँ गुलाब ? आज दो दिन से मेरा मन ठीक नहीं है । यह सच है कि मैंने तुमसे वादा किया था कि रिजल्ट के बाद तुम्हारी कवितायें पढ़ूँगा । पर अब यह नहीं हो सकेगा । परसों एक ऐसी नासमझी कर बैठा हूँ कि किसी भी काम में जी नहीं लगता । ठीक से खाना भी नहीं खाया जाता ।

**गुलाब** : तुम नासमझी करोगे ? यह हो ही नहीं सकता ।

**वसन्त** : नासमझी तो उसे नहीं कह सकते । पर थोड़ी जल्द-बाजी जरूर हो गयी है । परसों तुमसे मिलने के लिये जब मैं तुम्हारे मामा के घर गया था, उस समय कुछ ऐसा विचित्र संयोग हुआ कि घर में सिवा यमुना के और कोई था ही नहीं । बातचीत के सिलसिले में कुछ ऐसा बह गया कि यमुना के दुखों को दूर करने का उसे वचन दे बैठा ।

**गुलाब** : उससे विवाह करने का ही वचन दिया है, न तो इसमें नयी कौनसी बात हुई ? बंबई से चलने के पहिले हम लोग यह निश्चय ही कर चुके थे ।

**बसंत** : मैं कुछ इससे भी आगे बढ़ गया । मैंने सारी बात चाची से भी कह दी है । मेरी बात सुनकर उन्हें इतना आनन्द हुआ कि कह नहीं सकता । उनकी आँखें पाँच मिनट तक आनन्द के अश्रु बरसाती रहीं ।

**गुलाब** : पर मामी ने मुझसे तो इस विषय में कुछ भी नहीं कहा ।

**बसंत** : मैंने उन्हें कसम खिलाई है कि यह बात वे किसी से भी न कहें । पर गुलाब, मैं सच कहूँ । मैंने वचन तो दे दिया है पर उसे पूरा कर सकूँगा या नहीं, इसी का मुझे अब शक हो रहा है । पिताजी के क्रोध का ध्यान आते ही...

**गुलाब** : बसंत, तुम इतने कमजोर हो, यह मैं नहीं सोचता था । एक भले काम के लिये—एक अच्छे आदर्श के लिये पिता का विरोध करने में हमें क्यों डरना चाहिए ? प्रह्लाद ने पिता का और विभीषण ने अपने बड़े भाई का विरोध भले काम के लिये ही तो किया था । सत्य का पक्ष लेने में हमें किसी से नहीं डरना चाहिए । सत्य नारायण का मूर्त स्वरूप है । और नारायण के लिए किसने क्या नहीं छोड़ा ? अतएव सत्य-स्वरूप नारायण के लिये हमें भी हर विरोध को सहने के लिए तैयार रहना चाहिये । तुम्हारे पिता अधिक-से-अधिक क्या करेंगे ? बहुत हुआ तो तुम्हें घर से निकाल देंगे । इसीसे शायद तुम डर रहे हो । पर अब इसमें डरने की क्या जरूरत ? तुम बी० ए० हो ही गये हो । दो

का पेट भरने के लिये चार रोटियाँ। कहीं भी कमा सकते हो।

**बसंत** : पर क्या लोग मुझ पर अँगुलियाँ नहीं उठाएँगे ? ये कहेंगे कि मैंने पत्नी के लिए अपने पिता को ठुकरा दिया। परन्तु सत्य कुछ और ही है। यह सच है कि तुम जैसे व्यक्ति, जो भीतरी बात जानते हैं, मुझे कोई दोष न देंगे; पर आम लोग तो यही उलहना देंगे कि अपनी पसन्द की पत्नी पाने के लिये मैं पिता से लड़कर घर से निकल गया। आजकल के उच्च शिक्षा-प्राप्त लोगों के आचार-विचारों से पुराने लोग पहिले से ही अकारण चिढ़े हुए हैं और उस उच्च शिक्षा को चुनौती दे रहे हैं। होगा यही कि उन लोगों को उच्च शिक्षा को बदनाम करने के लिये मेरा एक उदाहरण और मिल जायेगा। वे बात की गहराई तक तो जायेंगे नहीं और मेरे कार्य का उल्टा-सीधा अर्थ लगाकर अपनी बात गला फाड़-फाड़कर दोहरायेंगे।

**गुलाब** : यह होगा—जरूर होगा, मैं मानता हूँ। क्षण-क्षण में परिस्थिति बदल रही है, इस ओर किसी का भी ध्यान नहीं जाता। पुराने लोगों के लिये पुराना जमाना था, नये लोगों के लिये नया जमाना, यह कोई नहीं देखता कि अब कड़वे चिरायते के दिन लद गये हैं और आज का बुखार भी कुनैन चाहने लगा है। बदले हुए जमाने के साथ यदि पुराने लोग भी अपनी विचार-धारा बदल दें तो नए और पुराने के बीच आज जो अमंगल-

कारी खींचा-तानी हो रही है, वह आप-ही-आप समाप्त हो जाएगी। परन्तु पुराने लोग पहिले यह समझें तो कि परिस्थिति बदल रही है, तभी तो यह होगा।

**बसंत** : और यही समस्या बड़ा भयानक रूप धारण कर मेरे सामने खड़ी है। पिताजी के दिमाग में तो आजकल यही घूम रहा है कि दहेज कितना लिया जाए, अग-वानी और बारात आदि का ठाठ कैसा रहे, बैंड कहाँ से बुलाया जाये, विवाह पूना में करें या बंबई जाकर। आजकल उनके पास बात करने के लिए इसके सिवा दूसरा कोई विषय ही नहीं है।

**गुलाब** : मैं सोचता हूँ, उन्हें शायद ऐसा लगता है जैसे बी० ए० पास लड़का सोने की खदान है। जितना खोदो उतना ही लाभ ! पर बसन्त, तुम्हारे पिताजी के विचार कुछ भी रहें, अब वह समय आ गया है जब कि हमें अपना काम शुरू कर देना चाहिए। (मंजरी आकर चुपचाप उन दोनों के पीछे खड़ी हो जाती है) चूँकि अब परिस्थिति बदल गयी है, इसलिये हमें अपने विचार भी बदल देने चाहिये। तुम इसी वक्त मेरे साथ मामा के घर चलो और खुद उनसे कहो कि तुम यमुना से विवाह करना चाहते हो।

**बसंत** : मैं खुद यमुना से विवाह करने की बात कहूँ ?...पर आगे क्या होगा ? पिताजी को भी तो वह लड़की पंसद होनी चाहिये न ?

- गुलाब** : तुम पिताजी से व्यर्थ मत डरो । तुम्हारे विचारों के आगे झुकने के लिए हम उन्हें बाध्य कर देंगे ।
- बसंत** : गुलाब, मेरा तो दिमाग घूम रहा है । समझ में नहीं आता क्या करूँ ? हिम्मत ही नहीं होती । क्या करूँ ... बताओ न ... मैं क्या करूँ ?
- मंजरी** : (सामने आकर) मैं बताती हूँ कि आप क्या करें ? ये मेरे हाथ की चूड़ियाँ निकालकर अपने हाथों में पहिन लीजिए । आपके हाथ सुन्दर दिखने लगेंगे !
- गुलाब** : अहाहा ! क्या मौके से आई है आप ?
- मंजरी** : आप लोगों के षड्यंत्र की मुख्य बात कैसे ठीक मौके पर जान ली मैंने ? आप दोनों जब वहाँ चुपचाप चोंच मिला रहे थे और किसी से कुछ न बताकर वहाँ से सटक गये, तभी मैं ताड़ गयी थी कि जरूर कुछ दाल में काला है । मैं भी तुरन्त उठी और आप लोगों के पीछे-पीछे ही चल पड़ी और ठीक वक्त पर यहाँ आ धमकी ।
- गुलाब** : इसमें शक नहीं कि आप ठीक मौके पर आई हैं । इस समय कोई ऐसा आदमी चाहिये ही था जो अपनी अधिकार-पूर्ण वाणी से बसंत में जोश भर दे । वह काम आपने कर दिया । हमने क्या विचार किया है, यह भी सुना आपने ?
- मंजरी** : सुना । पर केवल विचार करने में ही क्या पुरुषार्थ है ? उस विचार को उचित रीति से कार्य में भी परिणत करना चाहिए । यदि आप कुछ पुरुषार्थ नहीं कर

सकते, तो लीजिये ये मेरी चूड़ियाँ हाजिर हैं... इन्हें पहनिए ।

**गुलाब** : सुना बसंत ? बोलो अब क्या स्वीकार हैं तुम्हें ?

**मंजरी** : दादा, जाने आपने कैसे बी० ए० पास कर लिया ? कहीं किसी का डिप्लोमा चुराकर तो नहीं ले आये ? क्या कालेज की उच्च शिक्षा ने यही पढ़ाया है आप को ? क्या नीति और धैर्य की बातें भी आप नहीं समझ सकते ? क्या आपकी बहादुरी और सारी डींगें पत्रों तक ही सीमित थीं ? कालेज में आप ऐसे लड़कों की खोज में रहते थे जो दहेज न लें और अनेक गरीब माँ-बापों की मदद करते थे । और अब खुद आप ही... अहा हा ! मुँह तो देखिये इनका ? ऐसा लंबा मुँह करके आखिर इतना सोचते क्या हैं आप ?

**बसंत** : मंजू, तुम मेरी कठिनाईयों को नहीं समझ रही हो । मुझे इसका डर नहीं कि पिताजी मुझे घर से निकाल देंगे । मुझे डर इस बात का है कि लोग मेरे स्वार्थ-त्याग को गलत समझ लेंगे और मुझ पर अँगुलियाँ उठाकर कहेंगे कि एक सुन्दर लड़की से विवाह करने के लिए मैं पिता से झगड़ बैठा ।

**मंजरी** : लोग कहेंगे, मैं मानती हूँ । पर लोगों के भय से यमुना की नाक काट कर उसे क्या कुरूप कर दोगे ? लोगों के सिर्फ कहने से ही आपके स्वार्थ-त्याग का महत्व नहीं घट जायेगा ? लोग किसी के नहीं होते दादा !

वे आज आपका विरोध करेंगे और कल आपका पक्ष लेकर वे ही शायद आपकी तारीफ भी करेंगे। आप को लोगों से क्या करना है ?

**गुलाब** : महाभारत-काल में एक अजातशत्रु धर्मराज हुए थे और इस बीसवीं सदी में ये अजातशत्रु वसंतरावजी हैं। बस यही दोनों तो पापभीरु हुए हैं अभी तक ! भैया वसंत, मैं यह नहीं कहता कि रावबहादुर के बिना पूछे तुम छिपकर यमुना से विवाह करो। हम चलकर मामा से कहेंगे कि वे रावबहादुर मिलें और उनके पास यमुना के विवाह की बात निकालें। मैं इतना ही चाहता हूँ कि जब रावबहादुर और मामा में इस विषय की बातें होती हों, उस समय तुम भी वहाँ रहना और रावबहादुर से साफ-साफ कह देना कि तुम यमुना से ही विवाह करना चाहते हो। बस, इतना ही चाहता हूँ।

**मंजरी** : दादा, मुझे लगता है, आपके दिमाग का कोई पेंच ढीला हो गया है। मैं कहती हूँ कि मैं आपकी जगह होती, तो कब की यमुना से विवाह कर चुकी होती। अभी तो आपने उच्च विचारों से यह प्रेरणा पायी है। पर मैं कहती हूँ कि इन उच्च विचारों के बिना भी यमुना जैसी पत्नी पाने के लिए आप स्वार्थ-त्याग करें, तो वह भी आपके लिए शोभनीय होगा।

**गुलाब** : दिखता है यमुना के प्रति आपकी बड़ी श्रद्धा है।

**मंजरी** : हाँ, वह है ही ऐसी ! वह कितनी गुणवती है... उसमें

कितनी योग्यता है, इसका पता अनुभव के बिना नहीं चल सकता। यों तो कई बातों में मैं उससे सहमत नहीं होती। फिर भी मेरे हृदय में उसके प्रति आदर है। मैं आदर्शवादी हूँ और वह है पूरी यथार्थवादी। पर उसके यथार्थवाद के पीछे विचारों की जो शक्ति है उसे देखकर मैं दंग रह जाती हूँ। कल की बात है। बंगाल में दहेज के लिए आत्म-बलिदान कर देनेवाली एक स्नेहलता नाम की लड़की के बारे में बातें करते समय उसने मुझसे कहा था—स्नेहलता मूर्ख थी। उसका सिर फिर गया था। उसने यह भी कहा कि शहीद बनकर केवल एक ही दिन सारे हिन्दुस्तान में सनसनी मचाकर, दूसरे ही दिन भुला दिये जाने की अपेक्षा, आजन्म अविवाहित रहकर, हमारे दकियानूसी समाज के वह अच्छी तरह से कान उमेठ सकती थी।

**गुलाब** : यह तो मैं भी मानता हूँ। स्नेहलता का आत्म-बलिदान कितना भी करुण माना जाए, पर वह यथार्थ से दूर है। प्रथम-दर्शन में ही यथार्थ दिखने वाली यमुना की यह कल्पना ही अधिक परिणामकारी होती, इसमें संदेह नहीं।

**बसंत** : मैं तो स्नेहलता के उत्सर्ग का पुजारी हूँ। उसके चित्र का नित्य दर्शन करके ही मैं अपने मन को आज इतना तैयार कर सका हूँ।

**मंजरी** : वाह ! क्या कहने ? क्या खूब तैयारी है आपके मन

की ? मेज पर रखे चित्र अथवा दीवार पर लगे चित्र सिवा कमरे की सजावट के, किसी के मन पर कोई प्रभाव डालते हों, ऐसा मैं नहीं समझती । स्नेहलता के चित्र ने ऐसा कौन-सा जादू कर दिया है आपके मन पर, जरा मैं भी तो सुनूँ ! जब सच्चा मनोधैर्य दिखाने का अवसर आता है, उस समय मन में स्वाभाविक रीति से जो कमजोरी पैदा होती है, वही कमजोरी मैं आपकी रग-रग में भरी देख रही हूँ ।

**गुलाब** : स्नेहलता के प्राण-त्याग के विषय में आपके क्या विचार हैं ?

**मंजरी** : मेरे विचार वही हैं जो स्नेहलता के थे । उसका वह पत्र मुझे इतना अच्छा लगा कि मेरा मन होता है कि मुझ पर भी वैसा समय आए और मैं भी वैसा ही एक पत्र लिखूँ ।

**बसंत** : चुप रह ! उल्टा-सीधा जो मन में आया बक देती है ।

**मंजरी** : अपनी बहिन की केवल काल्पनिक विपत्ति से ही आपके रोंगटे खड़े हो गये । पर यमुना की यथार्थ मुसीबतों को सामने देखकर भी आपका हृदय नहीं हिलता । यह स्वार्थ नहीं तो क्या है ? ये नाते ही हमें कर्तव्य-पथ से विचलित कर देते हैं । दूसरे की उपेक्षा करने के लिए हम उसकी उलझनों के पर्वत को राई और अपनी राई को पर्वत... ! सच कहूँ डाक्टर साहब... मन में आता है कि पिता जी की सारी संपत्ति चली जाए, उनकी वकालत डूब जाए, उनकी रावबहादुरी

छिन जाय, मेरा विवाह करने के लिए स्नेहलता के पिता की तरह उन्हें भी अपना घर गिरवी रखना पड़े। उसके बाद, मैं भी एक चुभने वाला पत्र लिख कर, उसी तरह मिट्टी का तेल अपने ऊपर डालकर आग लगा लूँ।

**गुलाब** : दिखता है ऐसा काव्यमय जीवन; जीवन क्यों, काव्यमय मृत्यु ही आपको बहुत रुचती है।

**मंजरी** : कविता ही मेरा जीवन है। इसीलिए दादा ने रूढ़ि और आचार के विरुद्ध यमुना की मँगनी का जो इरादा किया है, वह मुझे बहुत पसंद आया।

**गुलाब** : ( स्वगत ) अच्छा तो इन्हें कविता से प्रेम है। ( प्रकट ) चलिए ! काफी देर हो गयी है। अब चलना चाहिए। मुझे भी मामा के पास जाकर आगे की बात पक्की करनी है।

**मंजरी** : अरे हाँ, अच्छी याद आयी ! मुझे आपसे क्षमा माँगनी है।

**गुलाब** : क्षमा ! कैसी क्षमा ?

**मंजरी** : दादा को आपने जो कविता की कापी दी थी, वह मैंने खोल कर पढ़ ली।

**गुलाब** : यह अच्छा ही हुआ। बसंत जैसा अरसिक डिग्रीधारी उन्हें पढ़कर उन पर अपनी रूखी सम्मति दे, इससे तो आप जैसी काव्यानुरागिनी का मत मेरे मतलब का होगा।

- मंजरी** : इतनी बुद्धि मुझमें कहाँ जो उन कविताओं पर कुछ कह सकूँ ? उसमें की कुछ कवितायें मैंने पहिले भी एक प्रसिद्ध मासिक-पत्रिका में पढ़ी थीं और पढ़कर उनमें अपने को खो भी दिया था । ( हँसकर ) खैर, अभी नहीं । फिर कभी इस पर बातें करूँगी ।
- बसंत** : यह बहुत अच्छा हो गया, गुलाब ! मेरे पीछे की एक झंझट छूटी । इसके बाद तुम अपनी कवितायें मंजरी के सिर पर ही मढ़ते जाना । कम-से-कम एक बला से तो मुझे छुट्टी मिली ।
- मंजरी** : आपकी कवितायें सचमुच सीधे हृदय पर चोट करने वाली होती हैं ।
- गुलाब** : थैंक यू फार युअर काईड ओपीनियन । अच्छा, मैं अब चलता हूँ । चलो बसंत ! अब उठो, चला जाय ! ( जाते-जाते ) बसंत के साथ ही कहीं मेरे विवाह का भी तो संयोग नहीं । ( दोनों का प्रस्थान )
- मंजरी** : अविवाहित रहने की मेरी प्रतिज्ञा क्या टूटकर रहेगी ? आज तक मैं सोचती थी कि मेरा मन बिल्कुल निश्चल है । पर आज वह इतना चंचल क्यों हो रहा है ? इन कविताओं ने सचमुच ही मेरे मन पर जैसे जादू कर दिया और अब कवि ने भी... मुझे कोई रोग तो नहीं हो गया ? क्या इन्हीं डाक्टर साहब से अपनी सेहत की जाँच करवा लूँ ? पर क्लाइमेट चेंज करने के लिए यदि उन्होंने अपने ही घर के वार्ड में हमेशा के लिए रहने को मुझे मजबूर कर दिया तो पगली

मंजरी, आज तू अपना दिल दे बैठी...आज तू खुद को हार गयी। ( चौंककर ) अरे पर यह क्या ? मैं इतनी आपसे बाहर क्यों हो रही हूँ। अभी-अभी दादा को मैंने कितना प्रोत्साहित किया और मैं स्वयं यह क्या कर रही हूँ ? यह कुछ नहीं ! नहीं-नहीं...ऐसा नहीं होना चाहिए। जब तक यमू और दादा का विवाह नहीं हो जाता, तब तक इस गुलाब की कली को...प्रेम के इस उफान को...मुझे अपने हृदय में ही छिपाकर रखना चाहिए जिसे कोई देख न पाये।

( प्रस्थान )

## दृश्य २

[ स्थान—दिगंबरपंत का घर ]

दिगंबरपंत : आखिर यह आशा भी जाती रही । दहेज के लिए वारह सौ रुपये कहाँ से लाऊँ ? सोचा था...उनका एक ही लड़का है । इसलिए शायद दहेज न माँगें । यही आशा हृदय से लगाये खुश था । पर मनोहरपंत का यह संदेश मेरे हृदय पर बज्र की तरह आ गिरा... पर मेरे लिए यह कोई पहिला बज्र तो है नहीं...ऐसे सैकड़ों बज्राघात सहन करके मेरा हृदय बज्र से भी कठोर हो गया है...बस ! अब कोई दूसरा दरवाजा झोंकना होगा । पर कौनका ? किसका ? क्या गुंडोपंत पेंशनर का ? क्या उस बूढ़े के गले में अपनी प्यारी यमू बाँध दूँ ? जिसे शिक्षा देने में मैं नौकरी जाने के अपने दुःख को भी भूल गया, जिसे मैं अपनी सब बेटियों से अधिक प्यार करता हूँ, जिसने आज तक कभी मेरे प्रेम की उपेक्षा नहीं की, अभी तक विवाह न होने के कारण अन्य लड़कियों की तरह मन-ही-मन घुल कर जिसने मेरा दुःख नहीं बढ़ाया, वह मेरी यमू • मेरी प्यारी यमू...मेरी लाड़ली यमू उस बूढ़े मुर्दे को कैसे सौंप दूँ ?

( पार्वती का प्रवेश )

पार्वती : इस तरह सिर पर हाथ धरे कैसे बैठे हो ?

दिगंबरपंत : जिस दिन भगवान् ने हमें आठ लड़कियाँ दीं, उसी दिन उसने हमारे सिर और हाथ का गठ-बन्धन कर दिया है ।

पार्वती : मनोहरपंतजी ने कोई जवाब दिया क्या ? उनका क्या हुआ ?

दिगंबरपंत : होगा क्या ? वही जो हमेशा होता है । वही जवाब जो हमेशा आता है । दहेज माँगते हैं बारह सौ रुपये । अब तो कोई मुझे ही खरीद ले तो अच्छा । यदि हरिश्चन्द्र की तरह अपने आप को बेचकर भी समाज के अष्टण से मुक्त होना चाहूँ, तो मनुष्यों को मोल लेने के अब दिन नहीं रहे । जिनके पास मनुष्य हैं, देने वाले उन्हें मुफ्त देना चाहते हैं, पर लेने वाले ऊपर से और दक्षिणा भी माँगते हैं । क्या यही सनातन हिन्दू धर्म है ?

पार्वती : लड़की के भाग्य की बात है । अब कोई दूसरा लड़का खोजिए ।

दिगंबरपंत : कहाँ खोजूँ ? मन में आता है किसी बूढ़े को देकर छुट्टी पाऊँ ।

पार्वती : कैसी अशुभ बात कहते हैं आप ?

दिगंबरपंत : फिर क्या करूँ ? तुम्हीं बताओ न ! भिखारी को कौन अपनाता है ?

पार्वती : भिखारी को भगवान् अपनाता है और दूसरा कौन अपनाएगा ? कभी-कभी मेरी बात भी सुना कीजिए ।

मैं सोचती हूँ कि एक बार आप रावबहादुर काले वकील से भी पूछ देखिए । क्या हर्ज है ?

दिगंबरपंत : ठीक है । जिससे कि वे मुझे सीधे पागलखाने भेज दें । बड़ा अच्छा सुझाव दिया है तुमने !

पार्वती : अगर आप बसंत से ही पूछ लें, तो क्या हर्ज है ?

दिगंबरपंत : मान लो वह राजी भी हो गया...

पार्वती : तो फिर बात बन गयी समझिए ।

दिगंबरपंत : इससे बात बनेगी नहीं, पार्वती ! वह और बिगड़ जाएगी । मेरा टूटा हुआ घर भले ही मिट्टी में मिल जाए, पर दूसरे के घर को तोड़ने की मैं कभी कोशिश न करूँगा ।

पार्वती : इसमें किसी के घर तोड़ने का प्रश्न ही कहाँ है ? कोई जबरदस्ती करके तो हम बसंत से “हाँ” कराएँगे नहीं ।

दिगंबरपंत : जबरदस्ती न भी करें, तो भी बात नहीं बनती । उसका फल बसंत के लिए बुरा ही होगा न ! यदि बसंत रावबहादुर की इच्छा के विरुद्ध यमुना से विवाह करेगा, तो वह घर से निकाल दिया जाएगा ।

पार्वती : वह अपने पिता को समझा दे और वे मान लें तो...

दिगंबरपंत : तो मैं समझूँगा कि समुद्र में पहाड़ तैरने लगा ।

पार्वती : बात इतनी असंभव तो नहीं है जितनी आप समझ रहे हैं ।

**दिगंबरपंत :** तुम रावबहादुर का स्वभाव नहीं जानती । उनसे किसी तरह की बात करना ही कठिन है । वे अपनी ही हाँकते हैं । दूसरे के पैर जमने ही नहीं देते । ऐसी मीठी-मीठी बातें करते हैं कि सुनने वाला ठंडा पड़ जाता है और अपनी बात भूल जाता है ।

**पार्वती :** उनसे यदि हम भी मीठी-मीठी बातें करें तो काम बन सकता है ।

**दिगंबरपंत :** तुम यह भूलती हो कि हम लड़की वाले हैं । लड़की का बाप कितना भी मीठा क्यों न बोले, लड़के के बाप को वह कड़वा ही लगता है ।

**पार्वती :** पर मेरी बात तो मान लीजिये और एक बार जाकर पूछ दें।

**दिगंबरपंत :** तुम व्यर्थ ही हठ कर रही हो । मेरा आज तक जो अपमान हुआ है उससे शायद तुम्हें संतोष नहीं हुआ । ठीक है, यदि तुम्हारी यही इच्छा है तो जाता हूँ रावबहादुर के पास और आता हूँ उनकी भी दो लातें खाकर ।

(गुलाब और बसंत का प्रवेश)

**गुलाब :** किसकी लातें खाने की बात चल रही है मामा ?

**दिगंबरपंत :** लड़कों के बाप की ! और दूसरे किसकी ? इस काम में हम भगवान् की बराबरी करते हैं । भगवान् विष्णु को भृगु ऋषि ने लात मारी थी और विष्णु भगवान् ने लात खाकर भी ऋषि के पैर दबाये थे इसलिये कि लात मारने में उनके पैर दुखे होंगे । उसी तरह

लड़की के बाप को लड़के के बाप की लाते खाकर, यह कहकर उनका स्वागत करना पड़ता है, कि वाह मितनी मीठी लगती हैं ये और फिर उसके पैर भी दाबने पड़ते हैं। बैठिये बसंतजी, आप खड़े क्यों हैं ?

**गुलाब** : तो आपका मतलब यह है कि लड़की का पिता होने से मनुष्य देवत्व को प्राप्त हो जाता है और यह देवत्व दिलवाता है वह लड़का होनेवाला दामाद।

**दिगंबरपंत** : हाँ ! यही समझ लो। पर वह देवत्व लाते खाने तक ही सीमित रहता है। आगे क्या रखा है ?

**गुलाब** : क्यों भला ? देव में और आप में क्या फर्क है ? वह क्षीरसागर में रहता है, आप दुख-सागर में डूबे रहते हैं। लक्ष्मी उसके चरणों में रहती है, आपके भी वह नीचे रहती है, क्योंकि वह कभी आपके हाथ नहीं लगती। ऋषि-मुनि देवताओं का गुणगान करते हैं और लड़कों के बाप रूपी महर्षि आपकी विरुद्धावली गाते हैं। देव गरुड़ पर सवारी करते हैं पर लड़की देखने आनेवाले लड़कों के बाप और लड़के पद-पद पर आपको ही गरुड़ बनाते हैं।

**दिगंबरपंत** : (हँसकर) बसंतराव, देखा आपने मेरा गुलाब कितना अच्छा कवि है !

**बसंत** : गुलाब सचमुच में गुलाब है, इसमें शक नहीं। उसे देखकर दुखी मनुष्य प्रफुल्लित हो जाता है। मुझे ही देखिये न, एक धंटा पहिले मैं बड़ा खिन्न हो गया था।

पर एक क्षण में ही उसने मेरी खिन्नता खुशी में बदल दी ?

दिगंबरपंत : आप खिन्न थे ? भला आपको खिन्न होने के लिए क्या हो गया था ! ईश्वर की कृपा से आपको किसी चीज की कमी नहीं । फिर आप उदास क्यों थे ?

बसंत : वही बताने के लिये मैं यहाँ आया हूँ ।

पार्वती : भगवान भला करे ! तुम पर कौनसा दुख आ पड़ा है बेटा ?

बसंत : कहने की मेरी हिम्मत नहीं हो रही है—जीभ लड़-खड़ा रही है ।

पार्वती : कोई अशुभ बात तो नहीं—सब ठीक तो है ?

गुलाब : यह क्या मजाक कर रहे हो बसंत ? अजीब पागल मालूम होते हो ! अरे भाई, खुशी की बात को इस तरह नहीं खींचा करते ।

पार्वती : खुशी की बात ? क्या वही, वही जो मुझसे परसों कही थी ?

दिगंबरपंत : तुमसे परसों क्या कहा था इन्होंने ?

बसंत : जी चाची । वही बात है ।

गुलाब : उनसे चाची क्या कहते हो ? मामी कहो—मामी ?

दिगंबरपंत : तुम्हारी मामी बसंतराव की मामी कैसी होगी ?

बसंत : गुलाब, अब तुम्हीं समझा दो । मुझे तो शर्म आती है ।

गुलाब : तो कम-से-कम एक अदा ही दिखा दो । शर्म आती है कहने में तुम्हें शर्म नहीं आयी ? मैं क्यों बोलूँ ? जाओ, मैं भी नहीं बोलूँगा ।

बसंत : क्या करूँ ? अब तो बड़ी मुश्किल आ पड़ी !

पार्वती : क्यों इनकी झंझट बढ़ाते हो ? मैं ही कह देती हूँ ?

गुलाब : नहीं—नहीं मामी ! ऐसा न करना । आप एक शब्द भी न बोलना । जो कहना है, इसी को कहना होगा ।

बसंत : अच्छा भाई, मैं ही कहे देता हूँ । दिगंबरपंतजी, मैं आपकी लड़की—( रुकता है ) लड़की कहने में कोई हर्ज तो नहीं ।

गुलाब : सचमुच यार, तुम लड़की ही हो !...

बसंत : मैं यमुना के पाणिग्रहण की याचना के लिए आया हूँ ।

गुलाब : शाबास पट्टे ! जियो मेरे शेर ! अब कौन कह सकता है कि हमारा बसंत कालिदास नहीं ?

दिगंबरपंत : यह कहने से पहिले तुमने रावबहादुर से पूछ लिया है क्या ?

बसंत : जी नहीं ।

दिगंबरपंत : फिर तुम्हारी याचना का कोई मतलब नहीं ।

**बसंत** : मुझे विश्वास है कि आज नहीं तो कल मुझे पिताजी की अनुमति मिल जायगी ।

**दिगंबरपंत** : पहिले आप अपने पिताजी से अनुमति ले लीजिये और फिर मेरे पास आइये या मुझे बुलवा लीजिये ।

**गुलाब** : (स्वगत ) मेरे शाबास मामा ! जियो-जियो !

**बसंत** : मेरी एक प्रार्थना है ।

**दिगंबरपंत** : अब यह विषय ही खत्म कीजिये न !

**बसंत** : मेरी एक प्रार्थना है ।

**दिगंबरपंत** : अब यह विषय ही खत्म कीजिए न !

**बसंत** : गुलाब, अब क्या करूँ ?

**गुलाब** : आगे क्या कहना चाहते हो अब वह भी कह डालो ।

**बसंत** : दिगंबरपंतजी, मैंने यह प्रतिज्ञा की हैं कि यदि विवाह करूँगा तो यमुना से ही करूँगा । चाची को सब कुछ मालूम है ।

**दिगंबरपंत** : (पार्वती से) क्या तुम्हें यह मालूम है ? तो मतलब यह कि ऐसी प्रतिज्ञा बसंतराव ने तुम्हारी ही अनुमति से की है ? क्यों, यही न ? कितनी ना समझ हो तुम ? इतनी नादान हो सकती हो, यह मैंने कभी नहीं सोचा था ।

**पार्वती** : (रोकर) मुझसे भूल हो गयी । माता की ममता ने मुझे उस आनन्द के समय नासमझ बना दिया था । क्षमा कर दीजिए मुझे ।

**दिगंबरपंत :** शायद इसीलिए तुम इस विवाह के लिए मेरे पीछे पड़ गयी थीं ? सच तो यही है कि औरतें नासमझ होती हैं । वे देखती पीछे हैं और बात आगे की करती हैं ।

**पार्वती :** (रोकर) अब बस भी कीजिये । कह तो रही हूँ कि मुझसे भूल हो गयी । मुझे क्षमा कर दीजिये । मैं भला रावबहादुर के स्वभाव को क्या जानूँ ? मैं यह कैसे सोच सकती थी कि पिता अपने पुत्र का हठ पूरा नहीं करेगा । उस समय यह बात मेरे ध्यान में ही नहीं आयी थी और मैंने उन दोनों को आशीर्वाद भी दे दिया था ।

**यमुना :** (प्रवेश करते हुए) यह क्या ? माँ, तुम रो रही हो ?

**दिगंबरपंत :** तेरे लिये रो रही है ।

**यमुना :** मेरे लिये रोना तो माँ का रोज का काम हो गया है । पर यूँ चार आदमियों के सामने रोते माँ को पहिले मैंने कभी नहीं देखा था ।

**दिगंबरपंत :** तो आज देख ले । लड़की के पिता के घर ऐसा कौन-सा दुःख है जो नहीं हो सकता ? ...हाँ, तो तुमने दोनों को आशीर्वाद भी दे दिया । याने एक तरह से दोनों का विवाह ही तय कर दिया तुमने !

**यमुना :** दोनों का याने किनका ?

**दिगंबरपंत :** तुम्हारी पूज्य माताजी ने तुम्हारा विवाह बसंतराव से तय कर दिया !

गुलाब : जोड़ी चिरायु हो । लाओ दोनों अपने हाथ बढ़ाओ ।  
हाँ-कहो—“धर्मेच, अर्थेच, कामेच, नातिचरामि...”

दिगंबरपंत : नानू, यह क्या बचपना कर रहे हो ?

गुलाब : मैं आखिर लड़का ही तो हूँ मामा ! मैं बचपना नहीं करूँगा तो फिर कौन करेगा ? और फिर मैं कोई बेकार बचपना तो कर नहीं रहा हूँ । किसी उद्देश्य से ही कर रहा हूँ । बचपने के कारण ही उपमन्यु को क्षीरसागर प्राप्त हुआ, बचपने के कारण ही भ्रुव ने अचल पद पाया, बचपने के कारण ही बालि को पाताल देखना पड़ा और बचपने के कारण ही प्रह्लाद ने लकड़ी में से भगवान को बाहर निकाला । फिर ऐसे संकट के समय मैं भी बचपना क्यों न करूँ ?

दिगंबरपंत : पर इसके लिए उचित अवसर भी तो देखना चाहिए ।

गुलाब : यही वह अवसर है मामाजी ! ऐसा अवसर फिर नहीं आयेगा । यही शुभ घड़ी है विवाह की । ऐसा सुहावना समय—यह गौधूलि बेला ! यह नारायण ऐसे शुभ मुहूर्त पर ही इस अर्जुन का इस सुभद्रा से विवाह कर देगा । इधर लाओ तुम दोनों के हाथ । यमुना, यह पति तुम्हें पसंद है न, बोलो ? कहो—हाँ । कहो । और बसंत, तुम तो इसे पहिले ही स्वीकार कर चुके हो—चिर जीवै यह जोरी—(उन दोनों के हाथ खींचने लगता है ।)

दिगंबरपंत : बस-बस, अब बंद करो यह खेल ।

**गुलाब** : मामा यह खेल नहीं है । विवाह हो चुका । इ महाबाह्य की बात कभी असत्य नहीं होगी अब आप ही रावबहादुर के घर जाइये और इस विवाह के लिए खुद ही उनसे अनुमति प्रा कीजिये ।

**दिगंबरपंत** : बिना दहेज के रावबहादुर पीठ पर हाथ नहीं रख देंगे ।

**गुलाब** : यह मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । आप रावबहादुर को समझाइए । यदि आप चाहें तो उन्हें रास्ते लाने के लिए बसंत भी चार बातें उनसे कह देगा ।

**दिगंबरपंत** : चार बातें कहने से क्या होगा ? चार हजार रुपयों की झनकार सुने बिना रावबहादुर के कान न खुलेंगे ।

**गुलाब** : क्या करूँ ? कोकणस्थ जाति का होने से सर्वना हो गया, मामी ! सचमुच मुझे ऐसा लगता है । अपनी जाति छोड़कर किसी दूसरी जाति में जा मिलूँ ।

**पार्वती** : सो क्यों बाबा ?

**गुलाब** : आप दोनों पर मैं ४२० की नालिश करूँगा ।

**दिगंबरपंत** : (हँसकर) सो क्यों, भाई ?

**गुलाब** : आपके विवाह में मेरी माँ ने आपको रोका था न अच्छा, आपने उस समय यह स्वीकार किया था कि अपनी बेटी का विवाह आप उसके बेटे के स कर देंगे । बोलिये, सच है न ? मेरे व्रतबंध के स भी आपने मुझे क्या वचन दिया था ?

दिगंबरपंत : अरे बाबा, वे तो सिर्फ विधियाँ हैं ।

गुलाब : आप तो उन्हें विधियाँ कहकर छुट्टी पा गये । पर यहाँ मेरा सब घुटाला हो गया । हमारी जाति को छोड़कर प्रायः सभी जातियों में इन वचनों को पूरा किया जाता है । हमारे दैनिक शांतिपाठ में भी कहा है—  
“तृप्तां जुहुर्मातुल स्येव योषा भागस्ते पैतृष्वसे इवऽ पाभिवः” । इसीलिए कहता हूँ कि या तो इस विधि को ही समाप्त कर दो, या फिर अपने भान्जे को दामाद बनाओ जिससे कि कठिनाई के किले का कम-से-कम एक द्वार तो खुल जायगा । वरना मुझ जैसा कोई उद्दण्ड भान्जा अपने मामा को सचमुच अदालत की हवा खिला देगा ।

दिगंबरपंत : हमारा नानू निःसंदेह मुर्दे को भी हँसा देगा । मेरा सारा गुस्सा एक क्षण में उतार दिया इसने ।

गुलाब : पर हाँ । इससे कहीं आप यह न समझ बैठिए कि मैं यमू से विवाह करने के लिए तैयार हो गया हूँ ! वरना मामी शायद अभी से दत्तक की योजना का सुझाव देने लगे । ऐसी मनहूस सूरत वाली लड़की के लिए बसंत जैसा बुद्धू पति ही ठीक रहेगा और अब तो वह सचमुच ही उसकी सहधर्मचारिणी हो गयी है । ऐसी मोर्निङ्ग फ़ेसेड गर्ल को कौन पसन्द करेगा ?

यमुना : दादा, फिर आपको कैसी लड़की चाहिए ?

गुलाब : मुझे ऐसी पत्नी चाहिए जो हमेशा हवा पर सवार रहे । मैं अगर जरा जोर से बोलूँ तो वह बिजली बन-

कर मुझ पर टूट पड़े। मैं तो बिजली चाहता हूँ...  
बस, बिजली !

बसंत : फिर तो तुम्हारे लिए हमारी मंजरी ठीक रहेगी। उससे  
विवाह कर लो न ?

गुलाब : अच्छा, तो इस तरह आप मेरा कर्ज चुकाने का इरादा  
कर रहे हैं शायद ! इस तरह दूसरे की इच्छा या  
सलाह से मेरा विवाह नहीं होगा। खैर, अब छोड़ो  
इन बातों को। अब यह बताओ कि अपने विवाह के  
मामले में तुम मेरी हर बात मानोगे या नहीं ?

बसंत : हाँ। मनुँगा क्यों नहीं ? अवश्य मनुँगा।

गुलाब : मामा, तो चलिए हम दोनों रावबहादुर के घर चलें।  
उनसे चार बातें करें। अगर दहेज की बात ही निकली  
और उस पर वे डटे रहे, तो चार हजार रुपये का  
इन्तजाम करने का जिम्मा मैं लेता हूँ।

बसंत : क्यों, क्या कहीं डाका डालोगे ?

गुलाब : हाँ। यही समझ लो। पर मैं ही क्यों डालूँगा ?  
इस काम के लिए तुम जैसा तगड़ा पहलवान भी तो  
मेरे साथ है।

दिगंबरपंत : पर ये रुपये लाओगे कहाँ से ?

गुलाब : आप यह जानकर क्या करेंगे ? आप तो चुपचाप मेरे  
साथ चलिए। यमुना का विवाह बसंत से अब हो हा  
चुका है। ब्रह्मा का बाप भी अब इस विवाह को नहीं  
तोड़ सकता। अच्छा यमुना, अपने विवाह की तुम

कोई दावत नहीं दे रही हो ! खैर दावत न सही,  
कम-से-कम एक कप चाय तो पिलाओगी ?

**पार्वती** : अरे, यह भी कोई वक्त है चाय पीने का ? मालूम है रात के आठ बजे हैं ।

**गुलाब** : मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । मैं आज बेहद खुश हूँ । बस, यमुना को हमारे लिए चाय बनानी ही होगी । चलिए मामी, उठिए हम भीतर चलें । इस अमीर-जादे को गरीब के घर की चाय का स्वाद तो चख लेने दो जरा । वरना यह अमीर कैसे जानेगा कि गरीब के घर का सुख क्या होता है ?

( सब का प्रस्थान )



## दृश्य ३

[स्थान—रावबहादुर का बैठकखाना । रावबहादुर और विष्णुपंत ।]

रावबहादुर : आज का मेरा भाषण कितना जोशीला था ? तुमने सुना था विष्णुपंत ! सारी सभा सोंस रोके बैठी हुई थी । स्नेहलता का नाम लेते ही इतनी जोर से तालियाँ बजीं कि कुछ न पूछो । अहा ! वह अवसर ही बड़ा मजेदार था ।

विष्णुपंत : आपके भाषण का सारांश मॉगने के लिए एक रिपोर्टर अभी-अभी आया था । मैंने उसे थोड़ी देर के बाद आने के लिए कह दिया है ।

रावबहादुर : रिपोर्टर ? याने किसी समाचार-पत्र का संवाददाता ? वह सरकारी रिपोटर तो नहीं था न ?

विष्णुपंत : नहीं सरकार ! वह सरकारी रिपोर्टर नहीं था । समाचार-पत्र का ही रिपोर्टर है । मेरा अच्छा दोस्त है वह ।

रावबहादुर : ( स्वगत ) हौं भाई, कहीं ऐसा न हो कि इतना कष्ट करके और हजारों रुपया खर्च करके जो रावबहादुरी मैंने प्राप्त की है, वही खटाई में पड़ जाये । ( प्रकट ) कोई भी आया हो, मुझे क्या ? मैं तो खरी-खरी सुनाने वालों में से हूँ । इसलिए मैं किसी के भी बाप से नहीं डरता । अपने सच्चे मतों को जनता-जनार्दन के

सामने निर्भीकता से रख देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ और इस कर्तव्य का पालन करते समय मैं किसी की भी परवाह नहीं करता ।

**विष्णुपंत :** हाँ सरकार ! आपकी निर्भीकता का सभी लोहा मानते हैं । आपका स्वभाव है ही ऐसा । आप क्यों किसी की परवाह करेंगे ?

**रावबहादुर :** वेशक ! मैं लल्ला-चप्पा पसन्द ही नहीं करता । आज के भाषण की ही बात लो न ? दहेज की प्रथा के कारण जो अनर्थ हो रहे हैं, उन्हें मैंने कितनी आज-पूरा भाषा में सभा के सामने रख दिया । यह देखो, (जेब से एक कागज निकाल कर पढ़ता है ।) स्नेहलता का आत्म-बलिदान अन्धकार में विचरण कर रहे हमारे समाज को मार्ग दिखाने वाला एक ज्योति-स्तंभ ही है । जिस प्रकार तूफान में फँसी नौका के नाविक को ज्योति-स्तंभ पर दृष्टि जमाये अपनी पतवार चलानी चाहिए, उसी तरह रूढ़िरूपी समुद्र में, अनिश्चितता के तूफान में फँसकर भटकी हुई समाज-नौका को ठीक मार्ग पर लाने के लिए उसके कर्णधारों को, स्नेहलता की प्रज्वलित दीप-शिखा पर दृष्टि जमाये ( तालियों की प्रचंड गड़गड़ाहट ) अपनी पतवार चलानी चाहिए । तभी हमें कुछ छुटकारा मिलेगा । अहा ! कितने स्मूर्तिजनक वाक्य हैं मेरे ?

**विष्णुपंत :** वाह साहब, क्या कहने ? इन्हें तो चुने हुए शब्द-सुमनों के सुन्दर हार ही कहना चाहिए । यह वाक्य-रचना देखकर चिपलूनकर की याद हो आती है ।

रावबहादुर : अजी कहाँ प्रसिद्ध निबन्धकार चिपलूनकर और कहाँ हम ? हाँ, पर कुछ लिखते हैं !... यह है मेरा भाषण ... इसकी एक नकल उस रिपोर्टर को दे देना (विष्णुपंत कागज ले लेता है और दूसरा पत्र खोलकर रावबहादुर के सामने रख देता है । रावबहादुर पत्र पढ़कर) अच्छा, तो उस दीवान का आदमी आज ही आ रहा है ? देखो विष्णुपंत, अब तो मैं कुछ भी न बोल पाऊँगा ... सारी बातचीत तुम्हें ही करनी होगी । मुझे तो ऐसी ही बातें करनी होंगी जो मेरे आज के भाषण के अनुरूप हों । मैं चुप रहूँगा या दहेज लेने से इंकार करता रहूँगा पर तुम्हें अलबत्ता तगड़ी दलीलें देश करके मेरा मुँह बन्द कर देना चाहिए ।

विष्णुपंत : आप यह चिन्ता छोड़ दीजिए । आपका मुँह मैं अपनी मुट्ठी में ही रखूँगा ।

रावबहादुर : इस पत्र में वै ठाई हजार तक पहुँच गये हैं । अगर थोड़ा और दबाओगे, तो रकम दूनी होने में कुछ देर न लगेगी । जब यह सुनकर ही कि लड़का पास हो गया है, उन्होंने अपनी पहिली रकम दूनी कर दी, तो मैं सोचता हूँ कि यदि उन्हें थोड़ा और दबाया जाये तो...

विष्णुपंत : पर ऐसा करने से कहीं काम न बिगड़ जाये !

रावबहादुर : तुम बिल्कुल बेवकूफ हो, विष्णुपंत ! यह कैसी बेहूदी बात कह रहे हो ? काम नहीं बिगड़ेगा । और मान लो बिगड़ भी गया, तो अपना क्या बिगड़ता है ?

एक नहीं, दूसरा । हमारा माल खरा होना चाहिए ।  
ग्राहकों की क्या कमी ?

**विष्णुपंत :** (आहट लेकर) शायद वे ही आ गये । (रावबहादुर  
सिगार निकालकर जलाते हैं और एक अँग्रेजी अखबार  
पढ़ने में खो जाते हैं ।) (तारवाला आता है ।) तार  
है क्या ? लाऊँ, देखूँ ? नामदेव पटेल का दिखता है ।  
कल उसकी पेशी है न ? (तारवाला तार देकर चला  
जाता है ।)

**रावबहादुर :** किसका तार है ? इधर लाओ, देखूँ !

**विष्णुपंत :** हो गया । मैंने जो कहा था आखिर वही होकर  
रहा ।

**रावबहादुर :** देखूँ तो क्या है ? (तार देखता है ।) लड़की का  
विवाह कहीं और जगह तय हो गया ? ठीक है । कोई  
परवाह नहीं । हाँ, पर कुल मिलाकर यह सम्बन्ध  
अच्छा था । रुपये ऐंठने के लिये रियासतों के ये  
दीवान अच्छे होते हैं । खैर, जाने दो । इसकी कोई  
परवाह नहीं । कोई दूसरा आयेगा । पता भर लगने  
दो कि दीवान के घर की बात पक्की नहीं हुई है कि  
फिर देखना कितने प्रार्थना-पत्र आते हैं हमारे पास ।  
सरकारी नौकरी के किसी खाली पद के लिए भी इतने  
प्रार्थना-पत्र नहीं आते, जितने लड़के के बाप के पास  
उसके अविवाहित लड़के के लिए आते हैं । क्या  
समझे विष्णुपंत ! हम लड़के वाले हैं । हमें कोई  
चिन्ता नहीं ।

**विष्णुपंत :** बेशक ! हमें क्या चिन्ता है, अन्नदाता ? (आहट लेकर) लगता है, जीने से और भी कोई आ रहे हैं। पर अभी तो मुक्किलों के आने का वक्त है नहीं। (रावबहादुर अखबार उठा कर फिर से पढ़ने लगते हैं।) कौन होगा भला ? क्या कोई दूसरा वर-याचक आ रहा है ? (दिगंबरपंत और गुलाब का प्रवेश) आइए-आइए दिगंबरपंत जी—

**रावबहादुर :** (बिना देखे) बैठिये ।

**विष्णुपंत :** और कौन ? डाक्टर साहब ? आइये डाक्टर साहब !

**रावबहादुर :** कौन डाक्टर गुलाब ? आइए । ऐसे आइए । ऐसे यहाँ आकर ऊपर बैठिए ।

**गुलाब :** जी, रहने दीजिए । मैं यहाँ अपने मामाजी के पास ही ठीक हूँ ।

**रावबहादुर :** वाह कितना विनय है आप में । सच है विद्या विनयेन शोभिते । यह विनय तो आपकी विद्वत्ता में चार चाँद लगा देती है । अच्छा, इस वक्त कहाँ से आ रहे हैं आप ? आज मेरे भाषण में तो आप आये होंगे । कहिए, सुना भाषण ? कैसा लगा आपको ?

**गुलाब :** जी उसी भाषण को सुन कर ही तो हमें यहाँ आने का प्रोत्साहन मिला ।

**रावबहादुर :** मतलब ? मैं कुछ समझा नहीं ! मेरे भाषण से और आप लोगों के यहाँ पधारने से क्या सम्बन्ध है ?

दिगंबरपंत : आपके आज के भाषाण ने हमारी आँखें खोल दीं ।  
 हमें आपके सच्चे मतों का पता चला । आप के विषय  
 में हमारी गलत धारणा समाप्त हो गयी । आज तक  
 हम आपको गलत समझ रहे थे ।

रावबहादुर : मैं कहता हूँ आजकल यही तो होता है । लोग  
 हमेशा वाह्य रूप देखकर धोखा खा जाते हैं । कसौटी  
 पर कैसे बिना मनुष्य की सच्ची परख नहीं होती ।  
 अच्छा बताइए आपकी क्या सेवा करूँ ? कोई मुक-  
 दमा-मामला लेकर आये हैं आप ? किसी पर  
 कुर्की का कोई वारंट जारी कराना है क्या, या क्या है,  
 बताइए ।

दिगंबरपंत : (स्वगत) मेरे भगवान, यह सारी विडम्बना कैसे सहन  
 करूँ ? (प्रकट) अपना काम बताने में मुझे कुछ  
 संकोच हो रहा है । आप से मेरी हालत तो छिपी  
 नहीं है । लोगों से कहता हूँ, मेरी लड़की तेरह  
 वर्ष की है । पर आप से सच कहता हूँ, वह सोलह  
 की पूरी हो गयी है । उसका सत्रहवाँ शुरू हो  
 गया है !

रावबहादुर : क्या कहा ? लड़की सत्रह वर्ष की है ? विवाह की  
 लड़की सत्रह वर्ष की ? अभी तक क्या घोड़ा बेचकर  
 सो रहे थे तुम ? तुमने तो कमाल कर दिया भाई !  
 मुझे तो आश्चर्य होता है दिगंबरपंत जी, कि इतने  
 दिन तुम किस तरह सीने पर यह पत्थर रखे  
 रहे ?

**गुलाब :** जी मेरा ख्याल है, आपकी पुत्री मंजरी देवी की उम्र भी तो करीब-करीब वही है ।

**रावबहादुर :** उसकी बात दूसरी है । वह मेरी लड़की है । वह अभी कालेज में भी पढ़ती है । उस पर कौन अँगुली उठा सकता है ? वह बात इनके घर में नहीं है और न हो सकती है ।

**विष्णुपंत :** हाँ । किसकी शामत आई है जो रावबहादुर पर अँगुली उठाये । एक तो पहिले से ही हमारे सरकार प्रौढ़ विवाह के कट्टर समर्थक हैं । प्रौढ़ विवाह के समर्थन में हमारे सरकार ने जाने कितने भाषण दे डाले हैं । इस विषय में दिगंबरपंत ने दिया है कभी क्या कोई भाषण ? बताइए न, दिया है भाषण ? फिर इनकी लड़की उतनी पढ़ी-लिखी भी नहीं है !

**दिगंबरपंत :** यह बात ठीक है कि मैंने लड़की को पढ़ने के लिए कालेज नहीं भेजा, क्योंकि कालेज का खर्च उठाने की ताकत मुझमें नहीं । फिर भी मेरी लड़की बिल्कुल ही पढ़ी-लिखी न हो, यह बात भी नहीं । उसे हिंदी अच्छी आती है । अँग्रेजी का भी उसने काफी अध्ययन किया है और संस्कृत में तो वह इतनी निपुण है कि बड़े-बड़े शास्त्रियों और पंडितों से भी नहीं हारेगी ।

**विष्णुपंत :** अजी अपने छोंछ को खट्टा कौन कहता है ?

**रावबहादुर :** ऐसा नहीं कहना चाहिए विष्णुपंत ! बिना जाने किसी

की योग्यता के विषय में हम क्या कह सकते हैं ? फिर भी मंजरी से उसकी तुलना ठीक नहीं होगी इसमें संदेह नहीं ।

दिगंबरपंत : मैं भी यह नहीं चाहता । मेरी प्रार्थना तो यह है कि लड़की इतनी बढ़ गयी है । उसके लिये बहुत से लड़के देखे, बहुत सिर पटका, पर कहीं भी उसका विवाह तय न हो सका । हर जगह दहेज की समस्या रुकावट डाल देती है । मेरी आर्थिक दशा क्या है, सो आपको विदित ही है । ऐसी दशा में...

रावबहादुर : ठीक है, ठीक है । मैं समझ गया आप क्या चाहते हैं ? पर अभी मुझे ऐसा कोई लड़का याद नहीं आ रहा है, जहाँ आपकी लड़की का विवाह आसानी से तय हो जाये ।

दिगंबरपंत : दूसरा लड़का नहीं साहब—आप—

रावबहादुर : हरे राम ! हरे राम ! क्या मेरी यह विवाह की उम्र है ? इस उम्र में विवाह करना मुझे शोभा नहीं देगा, दिगंबरपंत !

दिगंबरपंत : जी वह बात नहीं, पर—

रावबहादुर : ठीक है । समझ गया । तुम शायद यही कहना चाहते हो कि मैं अपना जोर डालकर कहीं तुम्हारी लड़की का विवाह जमा दूँ ? अगर तुम्हारी यही इच्छा है, तो बड़ी खुशी से मैं तुम्हारी मदद करूँगा । अपनी तरफ से पूरी कोशिश करके कोई तुम्हारी हैसियत का लड़का तुम्हारी लड़की के लिए खोज

दूंगा । क्या बताऊँ ? तुमने पहिले नहीं कहा ? वरना हमारे रसोईया का एक भाई था—काफी तगड़ा भी था --

दिगंबरपंत : जी आप समझे नहीं । मेरा मतलब है आपके बसंत-राव --

रावबहादुर : हाँ, हाँ जरूर ।

दिगंबरपंत : सच ? क्या मैं इतना भाग्यवान हूँ ?

रावबहादुर : क्यों नहीं ? मैं बसन्त से भी कह दूँगा । वह बड़ा समझदार लड़का है । बम्बई में उसके बहुत से मित्र हैं जिनके अभी विवाह नहीं हुए हैं ? तुम्हारी दयनीय दशा देखकर उसका हृदय पिघल जायेगा । मैं ऐसा प्रबन्ध किए देता हूँ जिससे वह तुम्हारे लिए पूरी दौड़-धूप करेगा ।

दिगंबरपंत : यह बात भी नहीं है । मेरा मतलब है कि—अभी आपके बसंत राव का भी तो विवाह होना है—

रावबहादुर : हाँ भाई ! फिलहाल इसी से तो मैं परेशान हो गया हूँ ! बहुत से प्रस्ताव आते हैं । जाने कितने आदमी रोज चक्कर काटते हैं । जितना माँगिए उतना दहेज देने को तैयार हैं । पर मेरा निश्चय है कि दहेज के रूप में मैं कुछ नहीं लूँगा ।

गुलाब : ( स्वगत ) तो “डोनेशन” के रूप में लेने का इरादा है शायद ?

दिगंबरपंत : तो इसीलिए मैं अर्ज करता हूँ कि ऐसे समय मेरा ध्यान—

रावबहादुर : ठीक है । समझ गया । पर इस परेशानी से मुझे वक्त कहाँ मिलेगा ? यह सच है कि कुछ दिनों से इन लड़कियों के बापों ने मेरी नाक में दम कर रखा है । फिर भी कोई हर्ज नहीं ! तुम्हारे लिए सिर्फ तुम्हारे लिये किसी तरह थोड़ा वक्त निकालकर तुम्हारी लड़की के लिये कोई लड़का खोज दूँगा ।

गुलाब : (स्वगत) यहाँ मामा की दाल गलती दिखती नहीं । (प्रकट) लड़कियों के बाप आपकी नाक में दम कर रहे हैं, उन्हीं में से हमारे मामा जी को भी आप समझ लीजिये ।

रावबहादुर : तुम्हारा क्या मतलब ?

गुलाब : मतलब साफ है । हमारी इच्छा है कि यमुना का विवाह आपके पुत्र बसंतराव से हो जाये । (विष्णुपंत जोर से हँस पड़ता है ।)

रावबहादुर : हँसते क्यों हो विष्णुपंत ? बिल्कुल मूर्ख हो तुम । हर लड़की का बाप अनुरूप लड़के के बाप पर इसी तरह टूटता है । तो इसमें बुरा क्या है ? इसके लिए यूँ हँसने की क्या जरूरत ? (उसे आँख से इशारा करता है ।)

विष्णुपंत : नहीं सरकार ! मेरा मतलब था, कहाँ आप और कहाँ ये ? बीना आकाश छूना चाहता है ! भला आपसे इनका सम्बन्ध कैसे हो सकता है ?

रावबहादुर : क्यों नहीं हो सकता ? मैं कहता हूँ, क्यों नहीं होना चाहिए ? मैं किसी रियासत का राजा नहीं हूँ ।

विष्णुपंत : वह तो ठीक है, कृपानिधान ! पर आपकी प्रतिष्ठा के अनुसार दहेज देने की इनमें ताकत कहाँ है ?

रावबहादुर : राम ! राम ! इस दहेज ने हमारी कितनी बुरी हालत कर रखी है ?

गुलाब : ( स्वगत ) वाह, क्या सिद्ध-साधक बने हुए हैं ! पर अभी तक बसंत क्यों नहीं आया ?

विष्णुपंत : इसमें बुरी हालत का क्या सवाल है, सरकार ! हर व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा का ध्यान तो रखना ही होगा । दुनिया की रीति और नीति के विरुद्ध भी तो हम नहीं चल सकते ।

रावबहादुर : मुझे आपका यह प्रस्ताव बुरा नहीं लगा, दिगंबरपंत जी । बुरा लगने का कोई कारण ही नहीं है । परन्तु इस मामले में मुझे बसंत की इच्छा जानना बहुत जरूरी है । पहिले उसकी अनुमति प्राप्त करनी होगी । आप तो जानते हैं कि आज-कल के पढ़े-लिखे लड़के जरा अजीब ढंग के होते हैं । ऐसा न हो कि हम तो सब कुछ तय कर दें, और ऐन मौके पर वह मुँह फुला कर बैठ जाये !

गुलाब : यदि कोई अड़चन न हो तो अभी बुला कर उससे पूछ लीजिए ।

रावबहादुर : पर अभी इतनी जल्दी क्या है ? और हो सकता है

कि आप लोगों के सामने साफ-साफ कहने में उसे कुछ संकोच भी हो ।

गुलाब : जी नहीं । उसे कोई संकोच न होगा । मैं उसे अभी बुलाये लाता हूँ ।

रावबहादुर : नहीं-नहीं । तुम क्यों तकलीफ करते हो । मैं आज ही रात को उससे पूछ लूँगा । आप कल आकर मुझ से मिलिएगा । ( बसंत का प्रवेश ) ( स्वगत ) ओह, यह तो आ ही गया । अब किया इसने सारा मामला चौपट ।

गुलाब : आओ बसंत । अभी तुम्हारी ही बात निकली थी । ठीक मौके पर आ गये तुम ।

रावबहादुर : बैठो बसंत ! अजी आओ इस कुर्सी पर बैठो । अरे भाई... प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्र वदाचरेत । अब तुम्हें मुझसे इतना नहीं शर्माना चाहिए । ( वह नीचे बैठता है । ) अच्छा दिगम्बरपंत जी, आप जाइए । और डाक्टर साहब आप भी । कल तो आप जरूर आकर मिलियेगा न ? अच्छा, तो अब नमस्ते !

गुलाब : कल पर क्यों टालते हैं । आज ही सब तय हो जाता, तो अच्छा था ।

बसंत : क्या तय हो रहा है ?

गुलाब : हमारे प्रस्ताव के बारे में । दूसरा और क्या तय करेंगे ? हमारे मामा जी की इच्छा है कि हमारी यमुना तुम्हारी पत्नी बने ।

- बसंत** : अहा हा ! इस शुभ समाचार को सुनने के लिए यदि आज मेरी पूजनीया माता जी जीवित होतीं, तो उन्हें कितना आनन्द होता ? यूँ तो बचपन से ही उन्होंने हम दोनों का विवाह पक्का कर रखा था ।
- गुलाब** : ( स्वगत ) शाबास मेरे शेर, जियो ! ( प्रकट ) तो फिर लड़की तुम्हें पसन्द है ?
- बसंत** : गुलाब, अब पसंद नापसंद की बात पूछना बेकार है ।
- विष्णुपंत** : मैंने कहा नहीं था, कि हमारे बसंत दादा से यह पूछना ही बेकार है कि तुम्हारी लड़की उन्हें पसंद है या नहीं ? एक कंगाल की लड़की हमारे बसंत दादा को कैसे पसंद आ सकती है ?
- बसंत** : विष्णुपंत, लड़की मुझे पूरी तरह पसंद है ।
- विष्णुपंत** : यह क्या कह रहे हैं आप दादा साहब !
- बसंत** : जो आप सुन रहे हैं । मेरी स्वर्गीया माता जी की यही इच्छा थी कि मेरा विवाह यमुना से हो और अपनी माता जी की इच्छा ही अब मेरी इच्छा है । मैं भी उसी से विवाह करना चाहता हूँ ।
- रावबहादुर** : बेचारी छोड़ गयी मुझे ! सच्चे सुख के दिन देखना उसके भाग्य में न था ! बेचारी गयी ! और साथ ही उसकी सारी अधूरी इच्छाएँ भी गयीं ।
- बसंत** : पर पिताजी, उनकी याद तो अब तक बनी है और उस याद के साथ उनकी इच्छाओं की याद भी मेरे हृदय में बसी है । मैंने प्रतिज्ञा की है कि चाहे कैसी

मुसीबतें क्यों न आवें, मैं उनकी यह इच्छा अवश्य पूर्ण करूँगा। यदि आप किसी दूसरी जगह मेरा विवाह तय करते, तो यह बात मैं आप से साफ-साफ कह देता।

**विष्णुपंत :** (स्वगत) फिर गया सारी आशाओं पर पानी। मैंने पहिले ही कहा था कि लड़के कालेज में जाकर बिगड़ जाते हैं। पर साहब ने माना नहीं।

**दिगंबरपंत :** बसंतराव, अपनी स्वर्गीया माता के प्रति आपकी यह असीम श्रद्धा देखकर मैं गद्गद हो गया। मैं बड़ा दुखी था। आपके इस निर्णय ने मुझे भी उबार लिया। मैं एक महान संकट से मुक्त हो गया।

**रावबहादुर :** (स्वगत) अरे ये सब अंधे मिलकर आपस में ही रेवड़ियाँ बाँटने लगे। अब ? ठीक, अब मुझे भी पैतरा बदलना चाहिए। (प्रकट) यह देखकर कि अपनी प्रिय पत्नी की इच्छा पूरी करने का यह स्वर्ण अवसर मुझे मेरे जीते जी प्राप्त हो गया, मैं अपने को बड़ा भाग्यशाली समझता हूँ। सचमुच, मैं कृतार्थ हो गया।

**बसंत :** (स्वगत) मैं यह क्या सुन रहा हूँ ? क्या यह पिताजी ही बोल रहे हैं ?

**गुलाब :** (स्वगत) इसमें जरूर कोई चाल है।

**दिगंबरपंत :** आज मैं भी कृतार्थ हो गया।

**विष्णुपंत :** सभी कृतार्थ हो गये। परन्तु दहेज क्या मिलेगा ?

रावबहादुर : हरे राम ! हरे राम ! यह क्या बक रहे हो विष्णुपंत ?  
दहेज से मुझे बड़ी वृणा है ।

विष्णुपंत : सरकार, आप यदि दहेज नहीं लेंगे तो बसंत दादा  
को विलायत कैसे भेजेंगे ?

रावबहादुर : हाँ, तुम भी तो ठीक कहते हो । यह भी बसंत की  
माँ की ही इच्छा थी और जिस तरह उसकी पहिली  
इच्छा पूरी करने के लिए मैं बाध्य हूँ उसी तरह  
उसकी यह दूसरी इच्छा भी मुझे पूरी करनी होगी ।

गुलाब : कम-से-कम मैं तो यह नहीं समझता कि आपकी  
आर्थिक दशा इतनी खराब है कि बिना दहेज की  
रकम पाये आप बसंत को विलायत न भेज सकें ।

रावबहादुर : आप को कुछ नहीं मालूम डाक्टर साहब ! आप भ्रम  
में हैं । आप यह समझिए कि मुँछों पर घी चुपड़कर  
शान दिखाई जा रही है... बस इससे ज्यादा कुछ  
नहीं । आप तो जानते हैं कि आजकल बरसाती  
मेंढकों की तरह वकीलों की संख्या बढ़ रही है ।  
हमारी आमदनी अब पहिले जैसी नहीं रही । और  
फिर यह रावबहादुरी भी कुछ कम मँहगी नहीं ।  
इसके कारण जमाने भर की सभाओं को चन्दा देना  
पड़ता है और वहाँ भी अठन्नी-चवन्नी देने से काम  
नहीं चलता । बिना दस का नोट लिए लोग मानते  
नहीं । इधर आमदनी घट रही है, और उधर घर-  
खर्च दिन-दिन बढ़ता जा रहा है । मैं कहता हूँ यह  
समझिए किसी तरह इज्जत ढकी है । बस ।

- बसंत : यदि ऐसी बात है तो मुझे विलायत न भेजिए ।
- रावबहादुर : राम ! राम ! यह कैसे होगा ? वह भी तो तुम्हारी माँ की ही इच्छा है न ? वह पूरी होनी ही चाहिए ।
- गुलाब : ( स्वगत ) अच्छा, इस तरह पकड़ा है हमें ? ठीक है । मैं भी अब आखिरी बरण छोड़ता हूँ ।
- विष्णुपंत : इसके अलावा यह भी तय है कि लड़की के बदन पर चार गहने तो होना चाहिए ।
- दिगंबरपंत : मेरी लड़की को गहने की हबस बिल्कुल नहीं । सोने से तो उसे बड़ी चिढ़ है ।
- विष्णुपंत : यह तो सिर्फ कहने की बात है । जब तक तुम्हारे घर में है तब तक ही वह ऐसा कह सकती है । पर कल जब वह हमारे घर में बहू बनकर आयेगी, तब उसके ये विचार बिल्कुल बदल जायेंगे ।।
- रावबहादुर : अपने घर में बहू को क्या बिना गहने के रखेंगे ? चार-छः गहने तो बनवाने ही होंगे । कुछ गहने बसंत की माँ के भी हैं घर में । पर उसकी इच्छा थी कि वे सिर्फ मंजरी को ही पहिनाये जायें ।
- गुलाब : ( स्वगत ) उनकी और क्या-क्या इच्छायें थीं सो भगवान जाने !
- विष्णुपंत : अच्छा, विवाह के खर्च का क्या होगा ?
- रावबहादुर : हाँ । यह बात भी सोचने की है । विवाह तो बड़े ठाठ-बाट से होना चाहिए, भाई ! हमारा इकलौता लड़का है ।

**बसंत** : पिताजी मैं चाहता हूँ कि मेरा विवाह बिना किसी ठाठ-बाट के बिल्कुल सादगी से हो। शास्त्र के अनुसार जितनी बातें करना आवश्यक हैं, सिर्फ उतनी ही की जायें... अधिक कुछ नहीं।

**रावबहादुर** : यह तो हुई तुम्हारी इच्छा। पर कुछ हमारी भी इच्छा है। इतने दिनों से जो कुछ देखने के लिए ये बूढ़ी आँखें आस लगाये बैठी हैं, उसे हम कैसे टाल दें ? नहीं-नहीं... विवाह तो शानदार ही होना चाहिए। इस विषय में तुम कुछ नहीं समझते। दिगम्बरपंत, दहेज से तो मुझे बड़ी घृणा है। पर आप ही बताइए... डाक्टर साहब आपही बताइए कि बिना रुपयों के यह सब कैसे होगा ? हमें तो बसंत की स्वर्गीया माता की सभी इच्छायें पूरी करनी होंगी। आपकी यमुना से बसंत का विवाह हो, यह तो उसकी अनेक इच्छाओं में से एक इच्छा थी। सिर्फ यही एक इच्छा पूरी होने पर ही उसकी स्वर्गस्थ आत्मा को संपूर्ण संतोष प्राप्त होगा, ऐसा मैं नहीं समझता।

**विष्णुपंत** : फिर एक और बात भी सोचने की है। घर का इकलौता लड़का है। उसके लिए कई मन्त्रें मानी थीं। उन्हें पूरा किया था। अनेक जप-जाप जैसे महारुद्र, महाभिषेक, शतचंडी, तुलाभार इत्यादि कराये गये थे। ऐसी अनेक मन्त्रें पूरा करने में तीन हजार रुपये लग गये...

**गुलाब** : विष्णुपंत जी, आप जरा इधर आइए। ( एक ओर

ले जा कर) अभी आपने जितनी बातें बतायीं, उन सबका अलग-अलग हिसाब तो आपने रखा ही होगा। उसी रकम में एक खर्च और जोड़लीजिए।

**विष्णुपंत :** कौन-सा ?

**गुलाब :** आपको सब बातें तो याद आ गयीं और यही बात आपके दिमाग से कैसे छूट गयी ? खैर, वह बात मैं ही बताये देता हूँ। सुनिये, बसंत इनका लड़का है... यह बात दूसरी है कि उसकी माँ अब नहीं है। पर दोनों ने ही उसे जन्म दिया है न ? उन दोनों ने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया। दोनों ने ही उसकी बीमारी आदि में उसकी सेवा की। अपने लड़के के लिए इन दोनों ने इतने साल तक जो कष्ट उठाये... जो परिश्रम किया, तो उनकी मजदूरी का हिसाब भी आपने कहीं लिखकर रखा होगा। वह रकम भी तीन हजार में जोड़ दीजिए और बताइए कुल रकम कितनी हुई ? हम दहेज देने को तैयार हैं। हमारा खर्च एकदम एक मुश्त बता दीजिए।

**विष्णुपंत :** बेवकूफ हैं आप ! बिल्कुल मूर्ख... बैल के बाप !

**रावबहादुर :** यह क्या असभ्यता है, विष्णुपंत ? गंदी भाषा का उपयोग कर रहे हो ? सभ्यता से बातें करनी चाहिए।

**विष्णुपंत :** कुछ नहीं सरकार ! इन्होंने कहा कि हम दहेज देने को तैयार हैं। इसीलिए मुझे एकदम गुस्सा आ गया। दिगंबरपंत जैसे भले आदमी से दहेज लेने के लिए क्या हम कसाई हैं ?

रावबहादुर : दहेज न लेना तो हमारा दृढ़ निश्चय ही है । फिर वह किसी से भी क्यों न हो ?

गुलाब : तो फिर खर्च के लिए आप कितना रुपया चाहते हैं ?

विष्णुपंत : दिगंबरपंत इतने धनी कब से हो गये ?

गुलाब : मामा का क्या ? वे तो जैसे पहिले थे, अपने नाम के अनुरूप आज भी सचमुच दिगंबर ही हैं । पर मुझे अलबत्ता खुदा ने आजकल छप्पर फाड़ कर दे दिया है । आफ्रिका में मेरे एक चाचा थे । व्यापार करते थे वहाँ । हाल ही में उनका स्वर्गवास हुआ है । उनके कोई संतान नहीं थी । इसलिए अपनी सारी जायदाद, जो करीब डेढ़ लाख की है, वे मेरे नाम पर कर गये हैं...

रावबहादुर : क्या ? कहते क्या हैं आप ? ऐसे आइये । यहाँ बैठिये कुर्सी पर । बड़े भाग्यवान हैं आप, इसमें संदेह नहीं । आइए, इधर बैठिये इस कोच पर । खड़े कब तक रहेंगे ?

दिगंबरपंत : ( गुलाब से ) तुम्हें आज यह हो क्या गया है नानू ? यह क्या उटपटाँग बक रहे हो ?

गुलाब : इसलिए यमू के विवाह के लिए चार-पाँच हजार रुपये खर्च कर देना मेरे लिए कोई मुश्किल नहीं ।

रावबहादुर : मुझे भी एक बात सूझ रही है । हमारी मंजरी भी अब विवाह योग्य हो गयी है...

गुलाब : ( स्वगत ) यह है मेरी उधार की रईसी का प्रभाव !

**रावबहादुर :** इसलिए बसंत के विवाह के साथ तुम दोनों का विवाह भी निबटा दूँ। शान से कम खर्च में दोनों के विवाह निबट जायेंगे।

**गुलाब :** (स्वगत) अपनी बेटी के विवाह में किफायतसारी कर रहे हैं।

**बसंत :** पर मंजरी तो विवाह करना ही नहीं चाहती, पिताजी !

**रावबहादुर :** देखिए डाक्टर, मेरी मंजरी जरा मनमौजी-सी है। आप ही उसे थोड़ा समझाइएगा। आप अच्छे पढ़े-लिखे हैं। वह भी अगले साल बी० ए० हो जायेगी। थोड़ी जिदी है। पर आपसे जब अच्छी पहचान हो जायेगी और उसे जब आपके मृत चाचा की बात मालूम हो जायेगी, तो वह आप-ही-आप विवाह करने को तैयार हो जायेगी। ऐसे मामले में मेरे मत बड़े उदार हैं। लड़का और लड़की...दोनों के विवाह में दोनों की सम्मति लेनी चाहिए, ऐसा मेरा भी मत है। इसीलिए मैंने अब बसंत के विवाह के लिए अपनी अनुमति आखिर दे ही दी न? वरना उसके लिए दूसरी लड़कियों के क्या कोई कम प्रस्ताव आ रहे हैं? परन्तु एक बार मैं जो निश्चय कर लेता हूँ उसमें फिर कोई रद्दोबदल नहीं करता। यही मेरी टेक है।

**गुलाब :** आप स्वभाव से बड़े दृढ़ निश्चयी जान पड़ते हैं।  
(स्वगत) सिर्फ दहेज के मामले में।

**रावबहादुर :** लड़की मेरी देखी-सुनी है। इसलिए उसे देखने का

सवाल ही नहीं उठता । उसके बाद की जितनी बातें हैं, वे सब विष्णुपंत आपको समझा देंगे ।

**विष्णुपंत :** हाँ, हाँ, हाँ ! वह मेरा काम है । चलिए डाक्टर साहब, आप ही के घर चलता हूँ ।

**दिगंबरपंत :** मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि मेरी लड़की को इतना अच्छा घर मिलेगा । परन्तु ईश्वर की कृपा से...ईश्वर की कृपा क्यों...आपकी ही कृपा से मैं एक बड़ी उलझन से मुक्त हो गया । अच्छा, अब चलता हूँ । नमस्ते !

**रावबहादुर :** ठीक है । पर देखिए, पहुँचते ही तिलक की तैयारी कर डालिए । ( गुलाब रावबहादुर के चरणों पर सिर रखकर प्रणाम करता है । ) अरे-अरे, यह क्या ? नमस्ते ही काफी है । पर सज्जनता इसे ही कहते हैं । देखा विष्णुपंत ? अच्छा डाक्टर साहब, इसी तरह आ जाया करो । आने-जाने से ही परिचय घरोबे में बदलना है । मंजरी से मिलते रहिए...उसे समझाइये । ठहरिए , मैं भी चलता हूँ आपके साथ दरवाजे तक । विष्णुपंत, मेरी टोपी तो देना । ( बसंत को छोड़कर सब का प्रस्थान )

**बसंत :** माता लक्ष्मी ! तुम्हें दूर ही से प्रणाम करता हूँ । तेरे प्रभाव से क्या नहीं हो जाता ? सिर्फ रईस का स्वाँग करने से ही मनुष्य को मान मिल जाता है ! जब देखता हूँ कि दिखावटी ऐश्वर्य और क्षणभंगुर मान-सम्मान तेरी कृपा के कारण प्राप्त होते हैं, तो मैं तेरी

कृपा से डरने लगता हूँ । तेरी कृपा से प्राप्त होने वाले इस थोथे सम्मान की अपेक्षा समाज से दुरदुराये जाने वाले गरीब मनुष्य के संतोष का सुख कितना आनन्द-दायी होता है ? हमारे पिताजी को देखो और गुलाब के मामा को देखो...जैसे कि हैमलेट कहता है यह चित्र देखो और वह चित्र देखो ! नहीं, माता लक्ष्मी, तू समझदार को भी अधोगति के गर्त में ले जाती है...मैं तुझसे दूर ही रहना चाहता हूँ ।

( प्रस्थान )



## दृश्य ४

[ स्थान—दिगंबरपंत का घर । यमुना और मंजरी ]

**मंजरी** : यमुना, अब तुम्हें किसी भी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए । अब सब काम ठीक से हो ही जायेगा ।

**यमुना** : यदि मैं चिन्ता पाले रहती तो आज तक जीती कैसे ? पिताजी, निराश न हों और माता जी का धीरज न टूटे, इसलिए मुझे हमेशा प्रसन्न ही रहना पड़ता है । और अब तो आदत ही हो गयी है । हमेशा प्रसन्न रहना मेरा स्वभाव ही बन गया है । वायु की मंद झकोर से ही झूम जाने वाली आम्र-मंजरी की तरह तुम अल्प कारण से ही प्रसन्न हो उठती हो और ऐसी झकोरें तुम्हें हमेशा मिलती हैं । मेरे विषय में यद्यपि यह बात नहीं है, फिर भी अन्य वयस्क अविवाहित लड़कियों के समान सदा दुखी कम-से-कम मैं नहीं दिखूँगी, यह निश्चित है ।

**मंजरी** : तुम्हें देखती हूँ तो मुझे पूर्णजला सरिता की याद हो आती है । लगता है जैसे तुम शान्त, गंभीर और मंथर गति से बहने वाली यमुना नदी ही हो, अथवा बच्चों को उपदेश देने में कभी न थकने वाली बूढ़ी नानी हो !

**यमुना** : विपत्तियों के कारण मनुष्य असमय में ही बूढ़ा हो जाता है । ऐसा मेरे विषय में भी हो गया है, यही

समझ लो । और जैसा कि तुमने अभी कहा कि उप-  
देश देना मुझे अच्छा लगता है, तो उसी के अनुसार  
मैं तुम से कहती हूँ मंजरी कि तुम फिसल गई !

मंजरी : फिसल गई ! सो कैसे ? मेरे सैंडिल्स की जोड़ी नयी  
नहीं है ।

यमुना : पर कहीं नयी जोड़ी जमने का संयोग हो तो ?

मंजरी : नयी जोड़ी जमने का, या नयी जोड़ी मिलने का ?

यमुना : देखो, अभी लजा गयीं न ? मुझसे तुम कुछ भी नहीं  
छिपा सकोगी । समझीं ?

मंजरी : मैं कभी किसी से कुछ छिपाती ही नहीं । इसीलिए तो  
लोग मुझे वाचाल कहते हैं ।

यमुना : और इसीलिए तुम अभी लजा रही हो । सच है,  
तुम कुछ भी नहीं छिपा सकती । और फिर जिस  
बात से वाचालता मूक हो जाती है, उसी तरह का  
कोई भ्रम तुम्हें हो गया हो, तो तुम कैसे बोल  
सकोगी ?

मंजरी : मुझे कोई भ्रम नहीं हुआ ।

यमुना : वह भ्रम न हो, सत्य ही हो शायद । यदि सत्य में  
का सत्य उदित हो गया हो तो ?

मंजरी : सत्य में का सत्य ? यह क्या चीज है ?

यमुना : अरी पगली, वह सत्य जो इस असत्य जगत के परे  
है, किन्तु जो उसकी असत्यता को सत्य बना देता  
है...याने प्रेम !

- मंजरी** : प्रेम ? ( जोर से हँसती है । ) यमुना जी, यहाँ तुम पूरा धोखा खा गयीं । तुमने तो ठीक दुर्योधन जैसा किया । उसे जिस तरह सब मनुष्य अपने जैसे ही लगते थे, उसी तरह तुम्हें भी लगने लगा है कि दुनिया के सब लोग तुम्हारी तरह प्रेम में उलझे हुए हैं । मेरी प्यारी नानी जी, आपका सिद्धान्त बिल्कुल गलत हो गया ।
- यमुना** : मेरा सिद्धान्त सृष्टि के अंत तक भी गलत नहीं होगा । तुम्हारे ब्लाऊस की जेब में वह क्या है ? जरा दिखाओ तो ?
- मंजरी** : कलमुँही कहीं की...कहाँ हैं...क्या है मेरी जेब में ? ( कविता की कापी धीरे-से निकालकर उसे छिपाने का प्रयत्न करती है । )
- यमुना** : खैर, यही गनीमत है, जो बच्चों की तरह मुझसे यह नहीं कहा कि 'देख वह ले गया कौवा !' यह देख । ( कापी निकालकर दिखाती है । ) पकड़ी गयी न ? यह है मेरे बसंत दादा की कविताओं की कापी ।
- मंजरी** : है तो क्या हुआ ? उन्होंने मुझे पढ़ने को दी थी । तो क्या मैं उसे लौटाऊँ भी नहीं ?
- यमुना** : जरूर लौटाओ । पर उसमें बिना पते का यह पत्र इस तरह रखकर कि वह सबको दिखायी दे, उसे छिपाने की कोशिश क्यों कर रही थी ?
- मंजरी** : उहँ ! उनकी कविता के दोष-भर लिख दिये हैं मैंने इस पुर्जे पर । व्यर्थ ही तुम्हें वे क्यों दिखाऊँ, इसीलिए

छिपा रही थी। ये निगोड़े कवि बातें करने में भले ही कोई संकोच न करें, पर जिस तरह कोई माँ उसके बच्चे को मार देने से क्रोधित हो उठती है, उसी तरह ये कवि अपनी कविता के दोष दिखाये जाने पर आपे से बाहर हो जाते हैं और अगर कहीं उनकी कविता के दोष उनके मित्र ही निकालकर दूसरों को दिखावें, तब तो कुछ पृष्ठों ही मत ! इसलिए सोचा कि मेरे द्वारा प्रकट किये गये विचार व्यर्थ तुम्हें क्यों दिखाऊँ ?

यमुना : अगर यह बात है तो फिर मैं उसे देखकर ही रहूँगी।

मंजरी : (घबड़ा कर) नहीं-नहीं। तुम्हें मेरी कसम, ला उसे। (पत्र लेने भ्रष्ट होती है। खींच-तान में पत्र का एक कोना फट जाता है।)

यमुना : अरे यह तो अतुकान्त कविता है। दादा की कविता कभी अतुकान्त नहीं होती। क्या लिखा है भला ?  
(उसका हाथ भिड़कार कर दूर जाती है।)  
काव्योद्यान में भ्रमण करते हुए जिस  
मंजरी का रंजन हुआ—  
उस मंजरी को क्या गुलाब  
अपने हृदय में धारण करने का  
आश्वासन देगी ?

मंजरी : दुष्ट-चांडाल-कलमुँही शैतान कहीं की...

यमुना : 'रंजन' शब्द यहाँ तुमने किस अर्थ में रखा है ?

क्योंकि रंजन का अर्थ रँगना होता है और मनो-  
रंजन भी ?

मंजरी : अब चुप रहो, और अधिक अपनी चतुराई में बधारे  
अब लाओ वह पत्र दो इधर ।

यमुना : अब कम-से-कम स्वीकार किया तुमने कि वह पुर्जा  
नहीं पत्र है !

मंजरी : पत्र का अर्थ है पत्ता क्या यह भी नहीं जानती ?  
और अपने को बड़ी संस्कृत की पंडिता कहती  
हो !

यमुना : संस्कृत का सिर्फ यही एक शब्द तुम्हें याद आया ?

मंजरी : जहाँ काव्य है, वहाँ संस्कृत शब्द मुँह में आता है ।  
( झपट कर पत्र छीन लेती है और उसे फाड़ डालती  
है । )

यमुना : वाह री पगली ! सुदेव ब्राह्मण की तरह मैं, इस  
रुक्मिणी की यह पत्रिका, उस नारायण को जाकर  
देने वाली थी और फिर वह मुझे कुछ इनाम देता ।  
पर तुमने सारा मजा किरकिरा कर दिया ।

मंजरी : इनाम तो तुम पहिले ही पा चुकीं । यमुना-तट पर तो  
बसन्त बहुत पहिले ही उतर कर छा चुका है ।

यमुना : वाह ! ऐसी ही कवयित्री हमारे कविदादा की सच्ची  
जीवन-संगिनी हो सकती है । क्या ही सुन्दर जोड़ी  
है ! दोनों समान-धर्मी हैं । दोनों मिलकर एक साथ  
कविताएँ रचेंगे ।

- मंजरी : बहुत हो गयी तुम्हारी यह काव्य-चर्चा । अब उसे बन्द भी करो न ?
- यमुना : क्यों बन्द करूँ ? क्या ईश्वर ने कविता का ठेका तुम दोनों को ही दे रखा है ? अच्छा यह बताओ, इस विवाह में दहेज के रूप में तुम कितने काव्य-संग्रह देने वाली हो ?
- मंजरी : तुम्हें दहेज को छोड़ कर और सूझता क्या है ?
- यमुना : और तुम्हें सिवा कविता के और क्या सूझता है ? अच्छा अब बताओ, तुम्हारे कालेज का क्या होगा ? अब तो तुम्हें कालेज छोड़ना पड़ेगा शायद ?
- मंजरी : कालेज क्यों छोड़ूंगी ? (गुलाब का प्रवेश)
- यमुना : इसलिये कि अब गुलाब का विवाह होगा ।
- गुलाब : मेरा विवाह ? और कहाँ तय हुआ है मेरा विवाह ?
- यमुना : और कहाँ का मतलब ? क्या पहिले भी कहीं तय हो गया है ?
- गुलाब : विवाह तय हो गया है, ऐसा तो नहीं कह सकते । परन्तु समुद्र होने के लिए उत्सुक एक सज्जन ने अपनी प्रार्थना भेजी है ।
- मंजरी : कौन हैं-कौन हैं-कौन हैं वे ?
- यमुना : अरे-अरे ! इतना घबरा क्यों गयीं ? होगा कोई भी । तुम्हें उससे क्या करना है ?
- गुलाब : वाह ! यह कैसे हो सकता है ? आज के जमाने में

विवाह के लिये लड़की और लड़के दोनों का राजी होना जरूरी है !

यमुना : मैं मतलब नहीं समझी !

गुलाब : इसमें समझना क्या है ? बात इतनी ही है कि रावबहादुर साहब मेरी रईसी पर रीझ गये हैं ।

मंजरी : पिताजी रईसी पर रीझ गए हैं !

यमुना : जी ननद जी !

मंजरी : बड़ी शैतान हो ननद जी तुम !

यमुना : दादा, सुना आपने ? मंजरी को स्वीकृति मिल गयी.....उसने मुझे अभी ननद कहा....सुना नहीं आपने ?

मंजरी : मैं तो भाभी कहने जा रही थी....पर 'स्लीप आफ टङ्ग' हो गयी ।

गुलाब : नहीं-नहीं ! "स्लीप आफ टङ्ग" होगी - वाचा की निद्रा ! प्रेम की मूकता ! क्यों यमू यही न ?

यमुना : मूकता क्यों कहते हैं ? (फाड़े हुए पत्र का टुकड़ा उठा-कर) दादा, जरा इसे देखिए--

[ काव्योद्यान में भ्रमण करते हुए जिस

मंजरी का रंजन हुआ

उस मंजरी को क्या गुलाब

अपने हृदय में धारण करने का

आश्वासन देगा ? ]

देखा यह प्रेम का प्रभाव ? पूरा पत्र फट गया, पर प्रेम के ये दो शब्द नहीं फटे । वैसे कवि कितने भी

वाचाल क्यों न हों, पर प्रेम के मामले में ये मूक ही रहते हैं ।

**गुलाब** : मेरी मूकता का यही एक कारण हो यह नहीं कहा जा सकता । बात यह है कि अकस्मात मुझ पर रईसी लद गयी है और इसलिये मैं आजकल यूँ भी मित-भाषी हो गया हूँ ।

**यमुना** : दादा, यह रईसी आप पर आज कब और कैसे लद गयी ?

**गुलाब** : तुम्हारे लिए आज मुझे रईस बनना पड़ा । मैं जब रईस बना, तभी रावबहादुर ने बसंत से तुम्हारा विवाह करने का वचन दिया ।

**मंजरी** : याने बसंत दादा के विवाह के लिए पिताजी तैयार हो गये ?

**गुलाब** : केवल बसंत के विवाह के लिये ही नहीं, मेरे विवाह के लिए भी ।

**मंजरी** : पर मैं तो विवाह करूँगी ही नहीं ।

**यमुना** : यहाँ तुम्हारे विवाह की बात कौन कर रहा है ? हम तो अपनी ही बातें कर रहे हैं । पर दादा, इस रईसी का रहस्य क्या है ?

**गुलाब** : दो दिन के अन्दर रावबहादुर के सामने चार हजार रुपये गिनने हैं । फिर क्या करता ? दूसरा चारा था ही नहीं । बन गया रईस । बस ।

**यमुना** : सिर्फ बन गया रईस कहने से ही यदि कोई रईस हो

सकता, तो पिताजी को इतने दुख ही क्यों सहन करने पड़ते ?

**मंजरी** : कवि की कल्पना में कोई रुकावट नहीं आती !

**यमुना** : कवि सिर्फ अपनी काव्य-कल्पना में ही किसी गरीब को एक क्षण में रईस बना सकता है । पर वास्तविकता पर कवि का कोई अधिकार नहीं होता । यदि ऐसा होता तो दुनिया में इतने अनर्थ कभी न होते ।

**गुलाब** : पर यमुना, आज इस कवि ने अपनी कल्पना से कम-से-कम एक अनर्थ तो टाला है । पर डर यह है कि कहीं दूसरा अनर्थ न हो जाए । अकस्मात् प्राप्त हुए एक वसीयतनामे से मुझे डेढ़ लाख की संपत्ति प्राप्त हुई है, ऐसा मैंने आज रावबहादुर साहब से कह तो जरूर दिया है । पर इन चार हजार रुपयों को जुटाने का काम मैं बसंत के जिम्मे लगाने वाला हूँ ।

**मंजरी** : बसंत को चार हजार रुपये कहाँ से मिलेंगे ?

**गुलाब** : रावबहादुर साहब की तिजोरी से !

**यमुना** : तो क्या आप उनसे चोरी कराएँगे ? नहीं-नहीं दादा, इस तरह विवाह होने की अपेक्षा मैं आजन्म कुंवारी रहना ही अधिक पसन्द करूँगी ।

**मंजरी** : पर मुझे इस सूझ पर मजा आ गया । मुझे यह उपाय बहुत पसन्द आया ।

**गुलाब** : बहुत दिन पहिले एक मासिक-पत्रिका में मैंने एक

चुटकिला पड़ा था । एक कंजूस बागवान था । वह अपने बाग के फल किसी को भी नहीं खाने देता था । उसका एक पड़ोसी रात को उसके बाग में घुसकर फल चुरा लेता और सुबह उन्हीं फलों को उस कंजूस बागवान को बेच देता । बाजार भाव से सस्ते फल पाकर वह कंजूस उन सब फलों को खरीद लेता । उसी चुटकिले ने मुझे यह प्रेरणा दी ! ऐसे कंजूसों को इसी तरह सीधा करना चाहिए । खुद न खाकर दूसरों को भी न खाने देने वाले खूँटे से बँधे कुत्तों को इसी तरह सबक सिखाना चाहिये !

**यमुना** : कम-से-कम सोच समझकर तो बोला करें दादा !

**मंजरी** : जो हो ! बड़ी फिक्र है तुम्हें । विवाह के पहिले ससुराल की इतनी फिक्र करने वाली एक तुम्हीं दिखती हो ।

**गुलाब** : यमुना, तुम्हारा कहना भले ही ठीक हो, पर समाज में आज हो रहे अनर्थ को देखकर, जो क्रोध आता है, उसे इसी तरह गालियाँ देकर शान्त कर लेना पड़ता है । (एक मासिक-पत्रिका का अंक दिखाकर) यह उदाहरण देख लो । इस अंक में स्नेहलता की आत्माहुति के बारे में समाचार प्रकाशित हुआ है । इसी अंक के ठीक दूसरे ही पृष्ठ पर, यह देखो विवाह होने योग्य लड़कियों के तीन चित्र छपे हैं जो चिल्ला रहे हैं—‘वर चाहिए ।’ बिना चित्र के तीन विज्ञापन और हैं, सो अलग ही ।

हमारी जो बेटियाँ विवाह न होने के कारण घर से बाहर मुँह दिखाने में भी शर्माती हैं, उन्हीं के ये चित्र अनेक भले-बुरे लोगों के हाथ पड़ेंगे और उन पर जाने कितनी गंदी फबतियाँ कसी जाएँगी। कितना भद्दा उनका मजाक उड़ाया जायेगा। कितनी उनकी हँसी होगी ! हमारी कुल-वधुओं की इस बिडम्बना के लिए कौन जिम्मेवार है, यमुना, इसका अब तुम्हीं जवाब दो ?

**मंजरी** : मेरी समझ में नहीं आता कि इस विज्ञापन और चित्र से कौन-सा लाभ होता है ? मैं एक लड़की को जानती हूँ। लगातार दो साल तक उसके वर के लिए विज्ञापन दिया गया, पर उनके बाद भी उसे वर नहीं मिला।

**यमुना** : इसका कारण आजकल के युवकों में नीति, धैर्य और मानवता का अभाव है। यदि ईश्वर इन लड़कों को अचानक लड़कियाँ और लड़कियों के बाप बना दे, तो खट-से उनकी आँखें खुल जायेंगी।

**गुलाब** : ठीक है। पर जब तक ईश्वर ऐसा कोई चमत्कार नहीं करता, तब तक के लिए तो कुछ-न-कुछ उपाय निकालना ही होगा। इसीलिए मैं एक आधुनिक शर्विलक निर्मित कर रहा हूँ। अपनी रमणी की मुक्ति के लिये चोरी करनेवाला मृच्छकटिक का शर्विलक कालान्तर से जिस तरह धीरोदत्त माना गया, उसी कार्य की सफलता के कारण हमारा यह आधुनिक

शविलक भी कल एक हीरो बन जायगा, इसमें संदेह नहीं ।

यमुना : पर दादा ...

गुलाब : यमुना तुम्हारे भावी पति की तुम्हारी अपेक्षा मुझे अधिक चिन्ता है ।

मंजरी : डरो मत यमुना ! इस योजना को सफल बनाने का जिम्मा मैं लेती हूँ । सब काम बिल्कुल चुपचाप हो जाएगा । किसी को कुछ पता तक न चलेगा ?

यमुना : पिताजी से तो इस योजना के बारे में नहीं कहा न ?

गुलाब : नहीं-नहीं ! उन्हें कैसे बताऊँगा ? अगर उनसे कह दूँ, तो वे अभी चार साल तक तेरा विवाह रोकने को तैयार हो जाएँगे. पर हमें ऐसा काम कभी न करने देंगे, यह मैं जानता हूँ । मामी जी को भी इसका जरा भी पता न चलना चाहिए ।

यमुना : आप दोनों ने यदि ठान ही लिया है तो ...

मंजरी : किन दोनों ने ?

यमुना : तुमने और गुलाब दादा ने । ऐसे दो साहसी जीव यदि विवाह-बन्धन में न बँधे, तो विधाता के कर्म लेख का पुरुषार्थ ही क्या रहा ?

मंजरी : पर ब्रह्माजी के मामले में हस्तक्षेप करने के लिए तुमसे किसने कहा है ?

यमुना : और कौन कहेगा ? स्वयं तुमने ही कहा है । वह कविता भूल गयी क्या ? क्यों दादा, अब क्यों चुप हो, बोलते क्यों नहीं ?

गुलाब : ज्ञानियों ने कहा है कि ऐसे समय चुप ही रहो ।

यमुना : आप कवि लोग भी बड़े विलक्षण प्राणी मालूम होते हैं । प्रेमालाप की कविताएँ लिखते समय तो आप लांगों की लेखनी अबाधित वेग से शब्दों की वर्षा करती है; पर प्रेमालाप करने का जब प्रत्यक्ष समय उपस्थित हो जाता है, तब...

गुलाब : मुँह पर ताला पड़ जाता है, यही न ?

यमुना : क्यों मंजरी, अब क्यों नहीं बोलती ?

मंजरी : सुनो, तुम्हारा विवाह देखे बिना मैं अपना विवाह नहीं कराऊँगी, यह निश्चित है ।

यमुना : चलो, रास्ते पर तो आई । अभी तक तो विवाह के लिए बिल्कुल इन्कार ही करती थीं । तब बेशक मामला बड़ा कठिन था । कवियों के विवाह इसी तरह की मौन-साधना में ही होते हैं 'नाति-चरामि' वाली शपथ भी अपने मुँह से कह दें तो बहुत है । वरना गूँगे का भाषण—सारे शब्द ही छोड़ दें ।

मंजरी : और वे मनोहरपंत कहों गये ?

यमुना : क्यों, क्या दिल उनमें भी उलभ गया है शायद ?

मंजरी : हाँ । जी चाहता है कि एक बार उनसे मैं अपने विवाह का प्रस्ताव कर देखूँ ।

- गुलाब : हाँ। समझ गया।
- यमुना : हाँ। आप तो समझ ही जायेंगे। दोनों मन जो मिल गये हैं न अब।
- गुलाब : उस पशु को लाकर तुमसे भेंट करा देने का जिम्मा मैं लेता हूँ।
- यमुना : तुम दोनों प्रेमी अप्रिय बात भी प्रेम से कर सकोगे, इस में संदेह नहीं।
- मंजरी : हाँ! एक तो डाका डालने के लिए तैयार ही हो गया है।
- यमुना : तो क्या दूसरे को अपनी पत्नी का ही विवाह कराने को तैयार हो जाना चाहिए ?
- मंजरी : तुम ये बातें नहीं समझोगी। जो हम करना चाहते हैं वह तुम्हारे सामने ही किया जायेगा और तब तुम मेरी तारीफ ही करोगी।
- गुलाब : अब किस-किस की क्या तारीफ होती है सो आप-ही-आप दिख जायगा। (उषा का प्रवेश)
- उषा : यमुना जीजी, जल्दी चलो। रावबहादुर के दीवान जी तुम्हारे विवाह की सगाई लेकर आये हैं। उठो, चलो।
- यमुना : अब तुम दोनों अपना प्रेम-गीत चलाओ! (उषा का यमुना को खींचते हुए प्रस्थान)
- मंजरी : मेरी यही कामना थी कि यह पत्र आप ही के हाथ में पड़े। पर यमुना ने सब घुटाला कर दिया। आपकी यह कापी लीजिये।

- गुलाब : हम दोनों का मिलन कराने वाले ये मुखर पन्ने मुझे  
प्राणों से भी अधिक सुरक्षित रखने चाहिये ।
- मंजरी : यमुना गई, यह अच्छा ही हुआ ।
- गुलाब : तुम ठीक कहती हो । गुलाब और मंजरी के मिलन में  
यमुना का प्रवाह बाधा बन रहा था ।
- मजरी : क्या बोलूँ, मुझे कुछ सूझ नहीं रहा है ।
- गुलाब : कुछ भी न बोलना ही सब में अच्छा है । नाटककार  
और उपन्यासकार लंबे-चौड़े प्रेम विषयक प्रसंग लाकर  
जीवन-नाटक में जो अस्वाभाविक चार चाँद लगाने का  
प्रयत्न करते हैं, वह कितना अप्रासंगिक होता है यह  
आज अनुभव से ही हमें ज्ञात हो रहा है । उनको  
मुँह-तोड़ जवाब देने के लिए हम कुछ भी न बोलकर  
एक दूसरे का पाणिग्रहण करें । दो मंजरी, तुम अपना  
हाथ मुझे दो । अहा हा...
- मंजरी : इस हस्तामिलन से ही परस्पर प्रेम का आदान-प्रदान  
हो, यही हमारी कामना है !  
[ एक दूसरे के हाथ पकड़ते हैं ! इसी समय यमुना  
आती है ! ]
- यमुना : यह जोड़ी चिरायु हो ।

( परदा गिरता है । )



## दृश्य ५

[ मनोहर और गुलाब ]

मनोहर : हो सकता है—हो सकता है। यह बात बिल्कुल असम्भव नहीं है।

गुलाब : स्वप्न में भी इसका शक न करो कि मैं कोई असम्भव बात कह रहा हूँ। स्वयं उसी ने मुझसे कहा है।

मनोहर : क्या स्वयं उसी ने तुमसे कहा है? तो क्या मित्र, मेरे चेहरे में इतनी मोहिनी है कि खासी पढ़ी-लिखी लड़कियाँ भी मुझ पर आसक्त हो जाती हैं?

गुलाब : इसका तो तुम्हें पहिले ही पता होना था। पर तुम्हारी दशा कस्तूरी-मृग की तरह ही हो गयी! कस्तूरी मृग के पेट में होती है पर उसकी सुगंध की खोज में वह बेचारा जङ्गल-जङ्गल भटकता है।

मनोहर : तुम्हारी बात छोड़ो भाई! तुम ठहरे कवि। जो भी कह दो सब ठीक ही है। पर देखो...

गुलाब : हाँ। बताओ, क्या देखूँ?

मनोहर : कम-से-कम ऐसे गंभीर मामले में तो मजाक न करना भाई! मैं तुमसे यह पूछता हूँ कि वह तैयार है, यह ठीक है। पर उसका बाप भी तैयार है या नहीं?

गुलाब : उसका बाप राजी हो जाएगा। तुम्हें जब देखेगा तो

उसका बाप ही क्या—उसके बाप का बाप भी राजी हो जायेगा !

मनोहर : यह सब सच है । पर दहेज का क्या सिलसिला रहेगा ?

गुलाब : दहेज देने के लिये उसका बाप काफी धनी है । वह कोई हमारे मामा के समान कंगाल थोड़े ही है ।

मनोहर : हाँ, यह रही कुछ बात । वरना बड़ी मुश्किल हो जाती । वह तो मुझे दिल दे बैठी है और अगर दहेज न मिलता तो फिर मुझे उसके प्रेम को ठुकरा देने के लिए मजबूर होना पड़ता, क्योंकि यह प्रतिष्ठा का प्रश्न है । ऐसे समय प्रेम-वैम को अलग हटा देना पड़ता है । क्या समझे ?

गुलाब : अरे भाई, वह तो अपने बाप की इकलौती बेटी है । उसकी भलाई के लिये उसका बाप जितना तुम माँगोगे उतना दहेज देने को तैयार हो जाएगा ।

मनोहर : पर यार, सुनता हूँ कि वह कालेज में पढ़ती है ।

गुलाब : हाँ ! अगले साल वह बी० ए० पास हो जाएगी ।

मनोहर : काफी पढ़ी है । कहीं मेरे सिर पर तो न चढ़ेगी ।

गुलाब : अगर तुम खुद ही सिर पर चढ़ाओगे तो कोई भी स्त्री सिर पर चढ़ेगी ही, फिर वह पढ़ी-लिखी हो या अपढ़ हो ।

मनोहर : नहीं-नहीं ? मैं सिर पर नहीं चढ़ाता किसी को । पैर

की जूती पैर में ही पहिननी चाहिये, यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ ।

**गुलाब** : फिर क्या बात है ! मेरा तो ख्याल है कि पढ़ी-लिखी स्त्री को अगर तुम ठिकाने से रखो तो इसमें तुम्हारा फायदा ही है । आजकल हमारे शिक्षा-विभाग में पढ़ी लिखी स्त्रियों की बड़ी माँग है ! अगर थोड़ी दौड़-धूप करके तुम उसे कोई नौकरी दिलवा दो, तो तुम्हारी पाँचों घी में रहेंगी । वह कमायेगी और तुम्हें कहीं नौकरी करने की जरूरत न होगी । बस, बैठे-बैठे सिर्फ रोब जमाया करना ।

**मनोहर** : बात तो ठीक कह रहे हो । चाहे और दूसरा कोई फायदा न हो, पर स्त्री-शिक्षा से इतना फायदा तो जरूर है ।

**गुलाब** : (स्वगत) कितना नीच है यह ? (प्रकट) तो फिर बात तय रही ।

**मनोहर** : पर एक बार मैं उसे देखना चाहूँगा ।

**गुलाब** : जब तुम यमुना को देखने गए थे उस समय तो वह भी वहीं थी । इसलिए उसे देखने का मौका तो तुम्हें पहिले ही मिल चुका है ।

**मनोहर** : जैः ! किसी लड़की को सिर्फ उड़ती नजर से देखना और विवाह के लिये देखना, दोनों तरह के देखने में जमीन-आसमान का फर्क है । इसका रहस्य तुम नहीं समझ सकते ।

- गुलाब : याने तुम इसे फिर देखना चाहोगे ?
- मनोहर : बेशक । देखना ही पड़ेगा । तुम तो हो अनाड़ी । अब तुम्हारा भी तो विवाह होगा । तब तुम क्या करोगे यही मैं नहीं समझ पाता ।
- गुलाब : तो कम-से-कम मुझे भी बता दो कि देखने में क्या-क्या करना पड़ता है जिससे ऐन मौके पर मेरी हँसी न हो ।
- मनोहर : विवाह के लिये देखी जाने वाली लड़की से पूछे जाने वाले प्रश्नों की एक तालिका मैंने बड़े परिश्रम से प्राप्त कर ली है । उस सूची में कुछ प्रश्न मैंने अपने दिमाग से भी जोड़ दिये हैं । उस प्रश्नावली की एक प्रतिलिपि ही मैं तुम्हें दे दूँगा । तुम्हारा काम बन जाएगा ।
- गुलाब : ठीक है । अब यह बताओ कि मंजरी को देखने क्या आज ही चलोगे ?
- मनोहर : मैं तो हर समय तैयार हूँ ।
- गुलाब : अभी वह मामाजी के घर आने वाली थी । वहाँ चलकर देखने मैं तुम्हें कोई ऐतराज तो नहीं ?
- मनोहर : बिल्कुल नहीं ।
- गुलाब : तो फिर चलो । चार कदम पर ही तो मामाजी का घर है । तुम थोड़ी देर रुक जाओ । मैं भीतर जाकर देख आता दूँ कि आई है या नहीं ? (प्रस्थान)
- मनोहर : अब मुझे अच्छी तरह से तैयार हो जाना चाहिए ।

प्रश्नावली को एक बार और ध्यान से देख लूँ। (प्रश्नावली निकालकर देखता है।) हाँ, उस दिन कौन-कौन से प्रश्न पूछने को रह गये थे ? हाँ। मैंने उस लड़की के हस्ताक्षर नहीं देखे थे। इस लड़की के हस्ताक्षर तो अच्छे होंगे ही, क्योंकि इसने कई परीक्षाएँ पास की हैं। इसलिए इससे पुस्तक पढ़ाने की भी जरूरत नहीं। अच्छा, कसीदा और सिलाई ? इसके बारे में भी यदि न पूछा तो कोई हर्ज नहीं ! अगर हो सका तो एक दो प्रश्न रसोई बनाने के बारे में पूछे जा सकते हैं। पर रसोई बनाना यह लड़की क्या जानती होगी ? अगर रसोई बनाते न बनती हो तो भी कोई हर्ज नहीं। कुकर खरीद देने से यह कठिनार्थ दूर हो जाएगी। परसों जल्दी-जल्दी में कुछ प्रश्न छूट ही गए थे ! मेरे खुद के प्रश्न—हाँ, उमर की जाँच ? उस दिन यह महत्वपूर्ण बात रह गई थी। उस लड़की से विवाह तय न हुआ, यह अच्छा ही रहा। वरना मैं धोखा खा जाता। (गुलाब का प्रवेश, उसे देखते ही वह अपनी प्रश्नावली भट से छिपा लेता है) क्यों, है क्या वह घर पर ?

**गुलाब** : पथ में पलकें बिछाए बैठी है जनाब !

**मनोहर** : सच ? अच्छा यह बताओ, जहाँ बैठेंगे हम वहीं बैठी है, या कहीं और ? अगर वहीं बैठी होगी, तो उसकी चाल में कितनी लज्जा है, यह मैं कैसे देख सकूँगा ?

**गुलाब** : इसकी चिन्ता न करो । वह घर के अन्दर है । उस दिन की बात और थी आज की बात और है । आज उसे बाहर आने में नानी याद आएगी । जल्दी चलो ! ( घर में प्रवेश करते हुए ) हाँ, यहाँ बैठो । उषा, जाओ मंजरी को यहाँ बुला लाओ !

( उषा मंजरी को खींचते हुए बाहर लाती है । मंजरी लाज से दबो-सिमटी धीरे-धीरे प्रवेश करती है । )

**मनोहर** : (स्वगत) अहा ! कितना अन्तर है ? परसों कितनी शैतानी कर रही थी और आज ? वाह रे मेरा प्रभाव, ( प्रकट ) आपका नाम क्या है ?

**मंजरी** : मंजरी !

**मनोहर** : आपके पिता का नाम ?

**मंजरी** : रावबहादुर कृष्णजी पंत काले ।

**मनोहर** : आपके पिताजी तो जीवित हैं न ? हैं-हैं—मुझे मालूम है !

**उषा** : और आपके पिताजी जीवित हैं या नहीं ?

**मनोहर** : नहीं ।

**उषा** : नहीं हैं ?

**गुलाब** : उषा, तुम बीच में मत बोलो ।

**मनोहर** : (स्वगत) अरे यार फिर भूल गया ? (प्रश्नावली देखकर प्रकट) आपके कितने भाई-बहिन हैं ?

**मंजरी** : (एक कागज निकाल कर मनोहर के सामने रखते हुए

लाज-भरे स्वर में) आपके सब प्रश्नों के उत्तर इस कागज में मैंने लिख दिए हैं ।

**मनोहर** : (स्वगत) बहुत होशियार है—बड़ी चतुर मालूम होती है ! (प्रकट) आपने तो अति उच्च शिक्षा प्राप्त की है इसलिए आपसे किसी ग्रंथ का पठन कराने की आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती । (स्वगत) यह पढ़ी-लिखी है इसलिये इससे ऐसी ही प्रौढ़ भाषा बोलनी चाहिये । (प्रकट) अब मुँह खोलकर जरा अपने दाँत तो दिखाइयेगा ।

**मंजरी** : ( लजाकर ) बिना विवाह के मैं घोड़ी जैसी बढ़ गई हूँ इसलिए आप मुझे घोड़ी ही समझ रहे हैं क्या ?

**मनोहर** : बिना दाँत देखे मैं आपकी उम्र कैसे जान सकता हूँ ?

**उषा** : दीदी, दिखाओ न दाँत, दाँत दिखा दो इन्हें, खूब मुँह बनाकर दाँत दिखाओ न ? (मंजरी दाँत दिखाती है) अजी, यह क्या कर रही हैं ? तुम तो इस तरह दाँत निकालकर दिखा रही हो जैसे बन्दर को दिखाते हैं । ये महाशय क्या बन्दर हैं ?

**मनोहर** : उम्र करीब..... कितनी उम्र है आपकी ?

**उषा** : दस वर्ष ?

**मनोहर** : हूँ । उतनी ही होगी ।

**मंजरी** : जी अठारह साल ।

- मनोहर : करीब-करीब उतनी ही होगी । बस मुँह अब बंद कर लीजिए—अच्छा, अब आप जा सकती हैं ! (वह नहीं जाती) गुलाब, अब इन्हें जाने दो न ? चश्मा ये लगाती ही हैं इसलिये अब इनकी नजर परखने की क्या जरूरत ? । आप जाइये न ।
- मंजरी : अब मुझे आपकी परीक्षा लेनी है ।
- मनोहर : मतलब ?
- मंजरी : समान अधिकार का युग है यह । मैं आपको पसन्द हूँ न ? तो अब क्या मुझे भी यह नहीं चाहिए कि आप मुझे पसन्द हैं या नहीं ?
- मनोहर : ( स्वगत ) अरे बाप रे ! यह क्या बला सिर पड़ी ? अब क्या करूँ...अब हुई चौपट इज्जत । ( प्रकट ) गुलाब ?...
- गुलाब : हिम्मत से काम लो । मैदान में आ गये हो तो डट कर सामना करो...
- मंजरी : आपका नाम ?
- मनोहर : मनोहर विनायक बापट ।
- मंजरी : आपका गोत्र क्या है ?
- मनोहर : गोत्र क्या है ? हमारा गोत्र-हमारा गोत्र-हमारा गोत्र है बापट ।
- मंजरी : आपके गोत्र में प्रवर कितने हैं ?
- मनोहर : ( गुलाब को एक ओर ले जाकर ) प्रवर का क्या मतलब होता है, यार ?

- गुलाब : ( धीरे से ) अरे, प्र और वर । प्र याने प्रकरषेण-याने  
बढ़ा हुआ और वर याने वधू का पुल्लिंग ।
- मनोहर : मैं प्रवर हूँ ।
- उषा : कहीं धीवर तो नहीं ?
- मनोहर : बिल्कुल नहीं ।
- मंजरी : आप अँग्रेजी कहाँ तक पढ़े हैं ?
- मनोहर : मैंने कोई परीक्षा पास नहीं की, पर अनेक वर्ष हाई  
स्कूल में बिताये हैं ।
- उषा : शायद इसलिए कि वहाँ बार-बार फेल होते रहे ?
- मंजरी : अच्छा, अब जरा यहाँ से वहाँ तक चलकर  
दिखाइएगा ।
- मनोहर : गुलाब, देख रहे हो तुम... यह सरासर मेरा अप-  
मान है ।
- उषा : जब यमुना दीदी को आपने इस तरह चलाया था,  
तब उनका अपमान नहीं हुआ था क्या ?
- मनोहर : पर वह तो लड़की हैं ।
- उषा : और आप लड़के हैं । मंजरी दीदी आपको देखने आई  
हैं । आपको चल कर दिखलाना ही होगा ।
- गुलाब : बात तो खरी मालूम होती है ।
- मनोहर : याने तुम्हारा भी यही ख्याल है कि मैं चल कर  
दिखाऊँ ?

- गुलाब : इसमें शर्माने की क्या बात है ? हम मदों को क्या औरतों के सामने शर्माना चाहिए ?
- मनोहर : अगर दूसरा चारा ही नहीं है तो चलता हूँ । देखिए ।  
( चलता है । )
- उषा : छिः छिः बिल्कुल ढोरों जैसी चाल है !
- गुलाब : चुप रह उषा ! मनोहर उसकी बात पर ध्यान न दो ।  
बड़ी शैतान है वह । यों ही बकती है ।
- मनोहर : मुझे तो यह सब बड़ा अजीब-सा लग रहा है,  
भाई !
- उषा : लड़कियों को भी ऐसा ही अजीब लगता है । अब  
समझ गए आप ?
- मंजरी : सिटडाउन । आप बाजार-हाट कर सकते हैं या  
नहीं ?
- मनोहर : मैं तो बाजार-वाजार कभी नहीं जाता । सब सामान  
घर का नौकर ही लाता है ।
- उषा : फिर गृहस्थी कैसे चलाएँगे ? नौकरों से बाजार करा-  
ओगे तो गृहस्थी चौपट हो जायगी ।
- मंजरी : आप बच्चों की देख-भाल कर सकते हैं क्या ?
- मनोहर : बच्चों से तो मुझे बड़ी घृणा है ।
- उषा : आप ढोरों की देख-भाल तो कर सकते हैं न ?
- गुलाब : मैंने कहा न उषा कि तुम मत बोलो ।
- मनोहर : मैं ढोरों की देख-भाल अच्छी तरह से कर सकता हूँ ।  
ढोरों का तो डाक्टर ही हूँ ।

- उषा : स्त्रियों को भी आप ढोर ही समझते हैं क्या ?
- मनोहर : हाँ । करीब-करीब ऐसी ही बात है ।
- उषा : फिर आप भी ढोर हैं ऐसा हमें लगता है !
- मंजरी : उषा, जरा चुप तो रह । (मनोहर से) विवाह आप क्यों करना चाहते हैं ?
- मनोहर : यह भी कोई पूछने की बात है ? सब पुरुषों को ईश्वर ने विवाह करने के लिये ही पैदा किया है । अन्य पुरुष विवाह करते हैं, इसलिये मैं भी करूँगा । विवाह करना पुरुष का जन्म-सिद्ध अधिकार है ।
- उषा : और शायद वह स्त्रियों का नहीं ?
- मनोहर : मैं तो नहीं मानता कि उनका ऐसा कोई अधिकार है !
- मंजरी : विवाह के बाद आप अपनी पत्नी से कैसा व्यवहार करेंगे !
- मनोहर : जैसा व्यवहार दूसरे लोग करते हैं । और फिर पत्नी से व्यवहार की बात ही क्या ! अच्छी डॉट-डपट से रखी जाए, तो हर पत्नी सीधी रहती है ।
- मंजरी : स्त्रियों के सम्बन्ध में आपके विचार पड़े अच्छे हैं । यदि स्त्री भी आप से इसी तरह का व्यवहार करे तो ?
- मनोहर : आप तो बहुत आगे बढ़ रही हैं । मेरे विचारों को आप ने ओझा कह दिया ?
- उषा : आप तो अभी से रोब जमाने लगे ।

- मंजरी** : स्त्रियों की मान-मर्यादा आप जानते ही नहीं ।
- मनोहर** : स्त्रियों की कोई मान-मर्यादा नहीं होती । स्त्री को मैं पैर की जूती—
- मंजरी** : बस कीजिये । आप मुझे बिल्कुल नापसंद हैं । यहाँ से रास्ता नापिए गेट अवे !
- मनोहर** : गुलाब...
- गुलाब** : चलो, अब चल दें चुपचाप । ( उसे खींचता हुआ ले जाता है । )
- उषा** : आज दुरुस्त हो गये बच्चू ! दूसरों को तंग करने में तो अच्छा लगता है, पर जब वही खुद पर बीता, तो छठी का दूध आ याद गया जनाब को ! ( यमुना का प्रवेश ) देख यमुना दीदी !
- यमुना** : मंजरी, यह अभी जो कुछ भी हुआ, वह मुझे अच्छा नहीं लगा ।
- मंजरी** : और जो परसों हुआ था, वह अच्छा लगा था ? मुझे तो खुशी है कि मैंने अच्छा पाठ पढ़ाया । उषा ने भी, जैसा मैंने उसे सिखा रखा था, ठीक उसी तरह पार्ट अदा किया । मेरा साथ दिया और काम बन गया । यमुना, लड़की को देखने आने वाले लड़कों के साथ जब हम सब लड़कियाँ ऐसा व्यवहार करेंगी, तभी उनकी आँखें खुलेंगी और लड़की देखने-दिखाने की यह प्रथा खत्म होगी । ये लड़के आकर हमारा मनचाहा मजाक उड़ायें और यदि हम ईंट का जवाब पत्थर से दें तो तुम्हें क्यों बुरा लगना चाहिए ?

**यमुना** : ईंट का जवाब पत्थर से देना सज्जनता नहीं समझी जाती । वे चाहे मनचाहा मजाक उड़ायें, पर हमें तो चुप रहकर अपनी सहनशीलता से ही उन्हें नीचा दिखाना चाहिए ।

**मंजरी** : अहा ! क्या बूढ़ी नानी बनकर हमें सिखा रही हो !  
( गुलाब का प्रवेश ) सुना आपने, यमुना को हमारा आज का नाटक बिल्कुल पसंद नहीं रुचा ।

**गुलाब** : उसे कभी रुच ही नहीं सकता । वह दूसरी ही मिट्टी की बनी है । परन्तु यमुना जैसी लड़कियाँ आज के समाज की आँखें नहीं खोल सकती । बहुत बिगड़ रहा है बेटा... बिल्कुल आपे से बाहर हो गया है । इस तरह बक रहा है कि अगर कोई सुने तो सोचे कि डाक्टर पागल हो गया है । यमुना को आज का नाटक भले ही न रुचा हो, पर ऐसी कोई बात किये बिना यमुना जैसी भली लड़की के दुख दूर नहीं होंगे । यह तो अच्छा हुआ जो मामा जी घर में नहीं थे । अब मुझे आगे की फिकर करनी है, क्योंकि राव-बहादुर साहब ने आज्ञा जारी की है कि कल सुबह तक उनके पास दहेज की रकम पहुँच जानी चाहिए ।

**मंजरी** : उसकी आप कोई चिन्ता न करें । मैंने सब कुछ ठीक कर लिया है । पिताजी की तिजोरी में रखी रकम मौके से निकालकर, दहेज का रूप धारण कर, आपके पास वक्त पर पहुँच जाएगी । उसके लिए मैं बसंत दादा को पूरी तरह सिखा-पढ़ाकर तैयार किये देती हूँ ।

यमुना : मंजरी, इतना साफ-साफ मत कहो। दीवाल के भी कान होते हैं। पर दादा, जो भी करोगे खूब सोच-समझ कर करना। वरना करने जाओगे कुछ और हो जाएगा कुछ। आप दोनों हमेशा मेरे लिए कुछ-न-कुछ अनोखी बात सोचा करते हैं। यह सब व्यर्थ क्यों करते हो? मुझे मेरे भाग्य पर ही छोड़ दो न? जो होना होगा होता रहेगा।

मंजरी : तुम दोनों इसी तरह भाग्य भरोसे रोते बैठे रहोगे और कुछ न होगा। दुनिया के सभी काम भाग्य भरोसे नहीं होते।

गुलाब : यमुना, तुम क्यों डरती हो? मैं खुद फाँसी पर लटक जाऊँगा, पर तुम्हारे बसंत का बाल भी बाँका न होने दूँगा। जाओ, निश्चिन्त रहो।

यमुना : अच्छा भाई, जैसी आपकी इच्छा।

( प्रस्थान )



## दृश्य ६

[ स्थान—रावबहादुर का मकान । बसंत का प्रवेश ]

बसंत : आज मैं क्या करने वाला हूँ ? अपने पिताजी की तिजोरी तोड़ूँगा...अपनी ही सम्पत्ति पर स्वयं डाका डालूँगा ! यह बात कोई नयी नहीं है । मेरे पहिले भी न जाने कितने लड़कों ने अपने पिता की तिजोरियों तोड़ी हैं...उन्हें लूटा है । पर उन्हें यह पाप करने की प्रेरणा उनकी बुरी आदतों के कारण हुई ! वही पाप मैं भी आज कर रहा हूँ । पर मैं कर रहा हूँ भले काम के लिए । वह काम मेरी दृष्टि में अच्छा है, पर पिताजी की दृष्टि में भी क्या वह अच्छा है ? फिर किसकी दृष्टि को ठीक मानूँ ? अपनी दृष्टि को या पिताजी की दृष्टि को ? नये विचारों को या पुराने विचारों को ? नयी और पुरानी विचार-धाराओं का यह संघर्ष आखिर समाप्त भी कब होगा ? क्या यह विचार-विभिन्नता अनन्त काल तक इसी प्रकार बनी रहेगी ? नये लोग पुरानों पर और पुराने लोग नयों पर क्या इसी तरह परस्पर दोषारोपण करते रहेंगे ? आगे क्या होगा भगवान जाने ! पर यह सच है कि आज इन सब ने मुझे चोर बना दिया है । (रुककर) क्या आगे बढ़ जाऊँ या यहीं से पीछे लौट जाऊँ ? अगर मेरी माँ जीवित होती, तो क्या उस समय भी अपने ही घर की तिजोरी तोड़ने का यह मौका

आता ? कौन कह सकता है ? सभी झूठे सम्मान के भूखे हैं । सभी झूठे ऐश्वर्य के लिए लालायित हैं । आखिर मैं भी चोरी करने के लिए क्यों तैयार हो गया ? क्या सम्मान के लिए... या कि मन के संतोष के लिए अथवा अपने मतों के लिए ? किसी के लिए भी क्यों न हो, पर आज मैं जो कर रहा हूँ, वह चोरी है, पाप है, अपराध है, इसमें संदेह नहीं । यह सच है कि मैं यह पाप इसलिए कर रहा हूँ कि सत्य की जय हो । फिर भी चोरी करना पाप ही है और इस पाप से मैं मुक्त नहीं हो सकता । मैं अपराधी ही रहूँगा । तो फिर क्या लौट जाऊँ ? यह काम न करूँ ? यमुना क्या कहेगी ? मुझे उस पर विश्वास है । मेरी इस दुर्बलता पर उसे अभिमान ही होगा । वह मेरी सराहना करेगी । पर हाँ, गुलाब और मंजरी... ( गुलाब का प्रवेश । )

**गुलाब** : अरे, बसंत, अभी तुम यहीं हो ?

**बसंत** : गुलाब, मेरा मन डौंवाडोल हो रहा है । पाप करने के लिए मेरा मन साथ नहीं दे रहा है । हिम्मत ही नहीं हो रही है !

**गुलाब** : हो सकता है तुम्हारी इस कमजोरी पर यमुना को अभिमान हो और वह तुम्हारी सराहना करे । पर हमारी नजर में तो तुम कायर ही रहोगे ।

**बसंत** : यमुना तो सराहेगी न ? बस, मुझे और कुछ नहीं चाहिए । मुझे और किसी के भी मत की परवाह नहीं,

मैं चोरी नहीं करूँगा । (जाने लगता है । गुलाब पकड़ लेता है ।)

**गुलाब** : तुम्हारी इस कायरता के कारण हमारी चालाकी का पर्दाफाश होगा और हमारी बदनामी होगी ।

**बसंत** : पर इसमें यमुना की कोई बदनामी न होगी ।

**गुलाब** : यह सच है कि इसमें यमुना की कोई बदनामी नहीं होगी, पर उसके पिताजी और उसका भाई मैं—हम सब की इज्जत पर तो पानी फिर जाएगा ।

**बसंत** : फिर जाने दो । मुझे इसकी परवाह नहीं । तुम लोगों ने चालाकी की है । अब भोगो उसके फल ।

**गुलाब** : अच्छा, ऐसी बात है ! और जब यमुना के पिता की इज्जत पर पानी फिरेगा, तब क्या यमुना पर भी इस कलंक के छीटे नहीं आयेंगे ?

**बसंत** : हर व्यक्ति का आचरण उसका अपना होता है । वह व्यक्तिगत चीज है । आचरण कोई ऐसी खानदानी जायदाद नहीं है जो बाप से उसकी संतान को मिलती है ? जो यह कहते हैं कि पिता के बुरे आचरण के कारण उसकी संतान भी कलंकित होती है, वे सब मूर्ख हैं । बाप के सदाचारी होने से उसकी दुराचारी संतान को लोग सदाचारी नहीं मानते । उसी तरह बाप की गलती अथवा उसके दोषों के कारण संतान को दोषी नहीं माना जा सकता । मैं चोरी नहीं करूँगा ।

गुलाब : फिर यमुना का क्या होगा ? वह क्या करे ?

बसंत : हाँ, यह भी ठीक है, यमुना का क्या होगा ? वह क्या करेगी ?

गुलाब : यदि कल सबेरे तक दहेज का रुपया नहीं दिया गया तो यह विवाह नहीं होगा, इसे निश्चित ही समझो ।

बसंत : दहेज ! दहेज ! न जाने किस मनुष्य ने इस प्रथा को जन्म दिया और वह खुद जन्म लेते ही क्यों न मर गया ?

गुलाब : पर आगे चलकर जो लोग इस प्रथा को इतना महत्व दे रहे हैं, उनके लिए तुम क्या करोगे ? उन्हें कौनसी सजा दोगे ?

बसंत : उन्हें जो भी सजा दी जाए वह थोड़ी ही होगी ।

गुलाब : पर वह सजा उन्हें दे कौन ? तुम्हारे समान जिन कुछ युवकों को यह लगता है कि दहेज लेने वालों को सजा मिलना चाहिए, वे सब तुम्हारे समान ही कम-जोर दिल के होते हैं । उनमें वह हिम्मत ही नहीं होती कि अपने पिता के सामने जाकर उनसे अपना मत साफ-साफ कह दें । मान लो, किसी युवक ने यह साहस कर भी दिया...अपने पिता से अपना मत साफ-साफ शब्दों में कह दिया, तो घर के बुजुर्ग उस मत को सुनने के लिए तैयार नहीं होते । फिर तुम्हीं बताओ कि यह परिस्थिति कैसे बदलेगी ?

**बसंत** : पर चोरी करने से तो यह परिस्थिति निश्चित नहीं बदलेगी ।

**गुलाब** : मानता हूँ । परन्तु आज तुम्हें जो चोरी करनी पड़ रही है वह इस महत्वपूर्ण परिस्थिति का केवल एक कारण है । यह कोई कार्य नहीं है । सच्चा कार्य है तुम्हारे पिताजी को सबक सिखाना ।

**बसंत** : तो क्या तुम्हारा यह ख्याल है कि पिताजी को सबक सिखाने से मेरा सम्मान बढ़ जाएगा ? गुलाब, मैं तिजोरी नहीं तोड़ूँगा ।

**गुलाब** : ( स्वगत ) अब इसे कैसे समझाऊँ ? ( प्रकट ) तो फिर क्या करोगे तुम ? यदि यह विवाह न हुआ, तो निश्चित ही यमुना का विवाह किसी बूढ़े के साथ कर देना पड़ेगा और कुछ ही दिनों में तुम सुनोगे कि वह विधवा हो गयी । दर्शन से अमंगल की सूचना देने वाली उसकी छाया, मंगल-सूत्र विहीन उसका शंख की तरह स्वच्छ कंठ, आँसुओं से सदा भीगे रहने वाले उसके कपोल, निष्कलंक चन्द्रमा की तरह कुंकुम विहीन उसका सफेद कपाल और युवक सन्यासी की तरह घुटा हुआ उसका सिर...यह सब देख कर शायद तुम्हारी और हमारी आँखें धन्य हो जाएँगी !

**बसंत** : नहीं-नहीं गुलाब, मेरी भावनाओं को मत उभाड़ो । एक तो मेरा हृदय पहिले से ही जल रहा है और अब तुम उस पर यह नमक मत छिड़को । यदि मैं चोरी करूँगा, तो लोग क्या कहेंगे ?

**गुलाब** : विश्वामित्र ने भी चोरी की थी और उस समय इन्द्र ने जो कहा था, वही दुनिया तुमसे कहेगी ।

**बसंत** : तो क्या विश्वामित्र ने भी चोरी की थी ?

**गुलाब** : हाँ । एक बार अकाल में पेट की आग बुझाने के लिए विश्वामित्र जैसे महातपोनिधि ऋषि को भी कुत्ते का मौँस चुराकर खाना पड़ा था । तब यह देखकर कि अकाल अब चरम सीमा पर पहुँच गया है, इन्द्र को भी पृथ्वी पर पानी बरसाना पड़ा था । उसी तरह जब लोग मुनेंगे कि तुम जैसे पाप-भीरु लड़के ने भी दहेज के लिये मजबूर होकर अपने ही घर की चोरी की, तो दहेज की इस दुष्ट प्रथा के प्रति उनके मनमें घृणा पैदा होगी और वे भी सोचने लगेंगे कि यह प्रथा बंद होनी ही चाहिए ।

**बसंत** : पर दुनिया मुझे पाप-भीरु समझती है क्या ? मन की दुर्बलता और पाप-भीरुता में इतना सूक्ष्म अन्तर है कि वह मामूली लोगों की समझ में ही नहीं आ सकता ।

**गुलाब** : पर तुम्हारे घनिष्ठ मित्र तो तुम्हें पहचानते हैं न ? कम-से-कम वे भी तो यही कहेंगे न ? आखिर वे भी तो आगमी पीढ़ी के जनक हैं न ? कम-से-कम उन्हें जाग्रत करने का श्रेय तुम्हें मिलेगा न ? तुम्हारे इस काम का भावी पीढ़ी पर जो प्रभाव पड़ेगा उसके कारण तुम्हारे इस पाप का उज्ज्वल पुण्य में रूपान्तर हो जाएगा । चोरी करना पाप है, इसमें संदेह नहीं !

लड़की के पिताओं को दहेज के लिए तज्ज करने वालों को यदि ऐसी कोई मीठी सजा दी जाए, तो भगवान के घर वह अपराध नहीं माना जाएगा। न्यायाधीश अपराधी को फाँसी की सजा देता है, इसलिए न्यायाधीश को कोई फाँसी पर नहीं चढ़ा देता। नयी पीढ़ी के न्यायालय में, कुछ मामलों में, पुरानी पीढ़ी आज अपराधी की हैसियत से खड़ी है। क्या तुम यह नहीं सोचते कि अपराधी को सजा देते समय न्यायाधीश यदि घबड़ा कर अपराधी को छोड़ दे, तो अपराध को प्रोत्साहन देकर स्वयं न्यायाधीश ही महा अपराधी हो जाता है ?

**बसंत** : तुम्हारे तर्क ठीक हैं। परन्तु अनुभव विकट सिद्ध होते हैं इसके लिये क्या किया जाये ? नहीं गुलाब, पिताजी की तालियाँ चुराकर, तिजोरी के भीतर से रुपए निकालना, यह काम मुझसे हो सकेगा, ऐसा मैं नहीं समझता।

**गुलाब** : ऐसा काम करने लायक साहस तुममें नहीं है, यह मैं जानता हूँ। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि यह काम तुम्हें ही करना चाहिए। तुम्हारे आचरण पर कोई कलंक आवे, यह मेरी इच्छा नहीं। पर तुम सुशील हो, सदाचारी हो। सब लोग तुम्हें एक सुशील लड़का समझते हैं। इसीलिए यह चोरी तुम्हें ही करनी चाहिए। तुम्हारी सुशीलता ही इस बुरे काम को एक अच्छे काम में बदल देगी।

**बसंत** : पर ऐसी चोरी करके क्या मैं समाज की नयी पीढ़ी के युवकों को गलत राह नहीं दिखा रहा हूँ ?

**गुलाब** : यदि कोई दूसरा यह काम करता, तो वैसी बात हो सकती थी, यह सच है। कोई शायद इसका अर्थ यह भी लगाते कि हर युवक को अपने पिता को लूट कर ससुर का घर भरना चाहिए। परन्तु दहेज के दुष्परिणामों से पिता को कलंकित न करके वरन उन्हें उससे बचा कर एक सुशील, समझदार और सुशिक्षित लड़के के द्वारा यह चोरी होने के कारण, लड़के के दोष की अपेक्षा दहेज की दुष्ट प्रथा के प्रति समाज में अधिक घृणा पैदा होगी और उस लड़के के प्रति सहानुभूति ही बढ़ेगी।

**बसंत** : परन्तु इस काम से मैं पिता को दहेज लेने से परावृत्त कहाँ कर रहा हूँ ?

**गुलाब** : क्यों नहीं ? उन्हीं की रकम उन्हीं के हाथ में जा रही है। फर्क इतना ही है कि एक हाथ ने दिया और दूसरे हाथ ने लिया। बस, इतना ही होगा। इसमें चोरी तो कहीं होती ही नहीं है। सिर्फ “टेंपररी एम्बेजिलमेंट” होता है। यह भी एक गुनाह है, इसमें शक नहीं। पर दहेज लेने के गुनाह की अपेक्षा यह बहुत कम दर्जे का गुनाह माना जायगा।

**बसंत** : गुलाब, अब मेरा मन कुछ भी कहता रहे केवल वर्तमान परिस्थिति की ओर देखकर, अपने मन के विरुद्ध भी मैं यह साहस करूँगा।

**गुलाब** : इस साहस के कारण तुम्हें जो पाप लगेगा उसका पूरा भागी मैं हूँ । अच्छा, मैं जाऊँ ?

**बसंत** : जाओ । ( गुलाब जाता है । बसंत कमरे में प्रवेश करता है । पलंग पर रावबहादुर सोये हुए हैं । ) तिजोरी की चाबियाँ हमेशा पिताजी के सिरहाने रहती हैं । अच्छा हुआ जो उनकी पीठ मेरी तरफ है । ( आगे बढ़कर सिरहाने के नीचे हाथ डालता है, तभी रावबहादुर करवट बदलते हैं और वह चौंककर पीछे हट जाता है । ) छि ! हिम्मत नहीं होती । अब तो इनका मुँह इस तरफ हो गया । मुँह के सामने चोरी करने का मुझे साहस नहीं होता । नहीं, मुझसे यह काम न होगा । ( द्वार तक जाता है । तभी मंजरी प्रवेश करती है । )

**मंजरी** : क्यों दादा हो गया काम ?

**बसंत** : नहीं मंजरी, मुझे लगता है पिताजी एकदम जाग उठेंगे । सिरहाने को छूते ही उन्होंने अपना मुँह मेरी तरफ फेर लिया ।

**मंजरी** : ठहरो । मैं ही तुम्हारा रास्ता साफ किये देती हूँ । पर घबड़ाना नहीं । तुम अगर कोई अजीब-सी आवाज सुनो, तो समझ लेना कि वह आवाज मैं ही कर रही हूँ । जाओ । उस पलंग के नीचे छिप जाओ ।

( वह पलंग के नीचे जाकर छिप जाता है और मंजरी भीतर जाकर परदे में से “दौड़ो-दौड़ो दौड़ो...बसंत दादा...जल्दी दौड़ा...कितना बड़ा साँप” कहकर चिल्लाती है । रावबहादुर खट-से जाग कर भीतर दौड़ पड़ते हैं ।

बसंत भट-से चाबियों लेकर सेफ खोलता है और रुपये निकाल कर सेफ बन्द करके तालियाँ जहाँ-की-तहाँ रखकर भाग जाता है । )

रावबहादुर : ( हँसकर ) अजीब पगली लड़की है... डरपोंक जमाने भर की... चिंदी को साँप समझकर डर गयी । तेज रोशनी के पास बहुत देर बैठे-बैठे पढ़ने से ही यह हुआ है... अच्छा अब जाओ और आराम से सो जाओ । अब रात को अधिक देर तक पढ़ना छोड़ दो । जाओ ।

( परदा गिरता है । )



## तोसरा अंक

दृश्य ?

[ स्थान रावबहादुर का बैठकखाना । रावबहादुर और विष्णुपंत । ]

रावबहादुर : चलो, विवाह तो हो गया ! पर जरा ठाठ-बाट से होता, तो मजा आ जाता । अगर डाक्टर गुलाब भी इसी समय विवाह करने के लिए राजी हो जाते तो विवाह का सारा खर्च दिगंबरपंत के सिर पर लादकर, दोनों विवाह शान से हो सकते थे । पर उन्हीं को कोई अड़चन आ गयी जिससे हमारे सारे इरादे ठप्प हो गये ।

विष्णुपंत : फिर भी कोई हर्ज नहीं । जो हुआ है, उसके बारे में मैं सबसे आपकी तारीफ ही करता रहता हूँ ।

रावबहादुर : सो किस तरह ?

विष्णुपंत : मैं यह ढोल पीट रहा हूँ कि आप जो कहते थे, वही आपने करके भी दिखा दिया । इस विवाह में आप मनमाना खर्च कर सकते थे, फिर भी आपने बेकार खर्च न करके, जो रुपया बचाया, वह सब आप किसी गरीब के विवाह के लिए दान में दे देने वाले हैं । हर एक से मैं यही कहता हूँ ।

रावबहादुर : शाबास ! तुम्हारे दिमाग में कुछ अक्ल है, इसमें शक नहीं, विष्णुपंत ! मैंने तुम्हें अपने घर नौकरी दी । तुम्हें आश्रय दिया, यह बेकार नहीं हुआ । देखा, यह है मेरे साथ रहने का असर ?

विष्णुपंत : जी, आप तो महान हैं ! असर-वसर तो कहने की बात है, पर हों, मैं कोशिश जरूर कर रहा हूँ कि इन चरणों में रहकर कुछ सीख लूँ । (मनोहरपंत का प्रवेश) आओ डाक्टर, बैठो ।

रावबहादुर : कौन ? डाक्टर गुलाब ? नहीं मनोहरजी ! आओ, आओ, बैठो । बोलो, कैसे आये ?

मनोहर : जी योंही चला आया आपके दर्शनों के लिए । वसंतरावजी का विवाह हुआ उस समय—

रावबहादुर : हों भाई, एक जिम्मेदारी से छुट्टी मिली ! गरीब की लड़की को किसी तरह पार लगा देना था । बेचारा बाप बिल्कुल तड़प आ गया था । जैसे-तैसे उसे संकट से मुक्त कर दिया ।

विष्णुपंत : यह एक आदर्श विवाह था डाक्टर ! धर्मशास्त्र के अनुसार जितनी बातें आवश्यक थीं, केवल उतनी ही की गयीं । लेन-देन, बारात, अगवानी, मान-सम्मान इन सब बेकार बातों को एकदम छुट्टी दे दी गयी !

रावबहादुर : मेरा तो सिद्धान्त है कि जो कहों उसे करके दिखाओ ।

मनोहर : हाँ साहब, जो अपने सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करते हैं, वे महान पुरुष हैं। संतों ने ऐसे पुरुषों को वंदनीय कहा है।

विष्णुपंत : साथ ही एक बात और बता दूँ आपको डाक्टर। इस किजूलखर्ची से जो रुपया बचा है, वह सब किसी गरीब के विवाह के लिए दान में दे देने का हमारे सरकार का इरादा है ?

मनोहर : पर आपके मूलधन में ही जो घाटा हुआ है, उसका आप क्या करेंगे ?

दोनों : आपका मतलब ?

मनोहर : आपको दहेज की पूरी रकम तो मिल गयी है न ?

विष्णुपंत : हाँ। बिल्कुल पूरी।

मनोहर : नोट मिले हैं, या कलदार ?

रावबहादुर : नोट मिले हैं। पर यह क्यों पूछ रहे हो ? क्या तुम्हें कहीं से यह मालूम हुआ है कि वे जाली हैं ?

विष्णुपंत : सरकार ! यह हो भी सकता है। वह कंगाल दिगंबर जाली नोट देने से भी बाज न आयेगा। कर्ज से दबा मनुष्य चाहे जो कर सकता है।

मनोहर : नोट जाली नहीं असली हैं।

विष्णुपंत : फिर यह आप क्यों पूछ रहे हैं ?

रावबहादुर : चुराकर तो नहीं ले आया कहीं से ?

**मनोहर** : ठीक यह तो नहीं कह सकते कि चुराकर लाए गये हैं पर यह कह सकते हैं कि वे चोरी के हैं !

**रावबहादुर** : वह चुराकर ही लाया है इसमें शक नहीं । दिगंबर ने जरूर कहीं डाका डाला है ।

**मनोहर** : क्या आप लोगों ने नोटों को जाँच कर देख लिया है ? क्या वे आपको कुछ परिचित से लगते हैं ?

**विष्णुपंत** : अरे भाई, नोटों जैसे नोट हैं वे । उनसे परिचित होने न होने की क्या बात है !

**मनोहर** : वे नोट आप ही के घर के हैं । एक बार ठीक से जाँच करके देखिए । आप नोटों के नंबर कहीं नोट कर के तो रखते ही होंगे ।

**रावबहादुर** : जरा उहरना । मैं जाकर एक बार देख कर ही आता हूँ । (प्रस्थान )

**मनोहर** : (स्वगत) इधर बदला लेने का विचार मन में आया और उधर मन्दिर में अचानक उन लड़कियों से यह बात मालूम हुई । इसे ही तो संयोग कहते हैं । अब नसीहत मिलेगी उन सबको जिन्होंने घर बुला कर मेरा मज़ाक उड़ाया था । यह सब देव के दर्शन का प्रताप है ! ऐसी गुप्त बातें जानने के लिए ही कम-से-कम मन्दिर में जाकर रोज भगवान का दर्शन करना चाहिए ।

**रावबहादुर** : ( नोटों के बंडल और एक डायरी लाकर मेज पर फेकते हुए ) लुट गया, तबाह हो गया विष्णुपंत ! ये सब

तो मेरे ही नोट हैं। ये-ये नंबर देखो...इन्हें आप नोटों के नंबरों से मिलाओ।

विष्णुपंत : ( उन्हें देखकर ) सच ? सभी नोट हमारे ही हैं। तिजोरी से इन्हें चुराया किसने ?

मनोहर : वही बताने तो मैं आया हूँ। मैं हमेशा की तरह अभी तुलसी बाग के राम मन्दिर में भगवान के दर्शन करने गया था...

विष्णुपंत : वाह ! वाह !! आप इतने पढ़े-लिखे होकर भी आज कल के अन्य आवारा लड़कों की तरह नास्तिक नहीं हैं, यह एक बहुत बड़ी बात है।

रावबहादुर : बेवकूफ हो तुम, विष्णुपंत। बीच में मत बोलो अच्छा फिर ? आगे बताओ डाक्टर...

मनोहर : मन्दिर गया था। वहाँ दिगंबर खरे की दो लड़कियाँ आपस में बातें कर रही थीं। उनकी बातों से मेरे कानों में ऐसी कुछ भनक पड़ी कि आपके सुपुत्र श्री बसंतराव जी ने आप की ही तिजोरी के नोट चुराकर आप को ही दिये और इस तरह लड़के के बाप का खासा बुद्धू बनाया। इसी बात को दोहरा कर वे ठिल ठिला रही थीं।

रावबहादुर : अरे नालायक कहीं का... ( मनोहर चौंकता है। )

विष्णुपंत : नालायक आप से नहीं कहा, डाक्टर...

रावबहादुर : ठीक है । तो इस तरह उसने मुझे चकमा दिया !

मनोहर : अच्छा । अब चलता हूँ । नमस्ते । फिर कभी मिलूँगा ।  
इस वक्त आप जरा गुस्से में हैं, इसलिए... ( स्वगत )  
चिनगारी तो फेंक दी है । अब आग खूब भड़केगी ।

रावबहादुर : अच्छा डाक्टर, नमस्ते ! ( मनोहर का प्रस्थान ) मैं  
कहता हूँ विष्णुपंत कि अब मैं इस छोकरे को पुलिस  
के हवाले करके ही रहूँगा । बदमाश ! पाजी कहीं  
का ! मुझे ही ऐसा धोखा ? ऐसे पाजी के लिए अपना-  
पन भूल जाना चाहिए ।

विष्णुपंत : पर इस चोरी का साबूत कहाँ मिलेगा ? इसके अलावा  
ऐसे मामले में यह भी हो सकता है कि आपकी बद-  
नामी हो और बसंत की तारीफ हो ।

रावबहादुर : ( दाँत पीसकर ) क्या करूँ इस कुपूत का ? इसका  
गला घोटने पर भी मुझे शान्ति नहीं मिलेगी । पाजी  
ने रुपये तो डुबा ही दिये और ऊपर से मुझे बेवकूफ  
बनाया । क्या करूँ मेरी समझ में नहीं आता । विष्णु-  
पंत, जरा सोचो तो यह क्या हो गया ? बताओ, अब  
मैं क्या करूँ ?

विष्णुपंत : छोटा-सा सुझाव है सरकार ! दोनों को घर से निकाल  
दीजिए । सारी जायदाद बेचकर रुपये बैंक में रख  
दीजिए और फिर उसे बीबी को लेकर चिल्लाते  
दीजिए ।

रावबहादुर : तुम्हारा सुझाव ठीक है । पर इसके पहिले मुझे अपन गुस्सा उतारना है । जब तक उस पाजी को खूब गालियाँ नहीं सुना देता, तब तक मेरा दिमाग शान्त नहीं होगा । चलो ।

( दोनों का प्रस्थान )



## दृश्य २

[ यमुना और वसंत ]

**वसंत** : यमुना, मेरी यमुना, अपने इस मिलन से हमारी एक बड़ी इच्छा पूरी हो गयी और साथ ही मेरी स्वर्गीया माँ की इच्छा भी परिपूर्ण हुई । काश, हमारा सुख देखने के लिए यदि आज वे जिंदा होतीं—सच यमुना, गुलाब ने हमारे लिये देव-दूत का काम किया, इसमें संदेह नहीं ।

**यमुना** : उन्होंने देव-दूत का काम किया या राक्षस का, यही प्रश्न मेरे सामने है । हम सुखी हो गए । पिताजी को संकट से मुक्ति मिली । माँ की भी चिन्ता दूर हुई । यह सभी ठीक हो गया ! फिर भी मुझे एक बात खटकती है । क्या आप नहीं जानते कि इस शुभ-कार्य की नींव एक वृणित आधार पर डाली गयी है ! दादा को भी अपनी सफलता पर खुशी हुई । पर यदि ईश्वर ने उन्हें भला और बुरा पहचानने की बुद्धि दी होगी, तो उनके मन को भी यह बात हमारी अपेक्षा अधिक तीव्रता से चुभती होगी ।

**वसंत** : मैं भी दुविधा में पड़ गया हूँ । मैंने जो भी किया है, वह अच्छा है या बुरा, नहीं समझ पाता । ऊपर से देखने में तो ऐसा लगता है कि जो कुछ मैंने किया है, उसका फल अच्छा हुआ, इसलिए वह काम अच्छा

है । पर जब नैतिक दृष्टि से देखता हूँ तो लगता है कि मैंने भूल की है ।

**यमुना** : वह चोरी ही तो थी । उसे कौन अच्छा कहेगा ? चोरी करना पाप कैसे नहीं माना जावेगा !

**वसंत** : पर जैसे को तैसा, इस कहावत के अनुसार जब देखता हूँ तो जो हुआ है, वह गलत हुआ है, ऐसा भी नहीं कहा जा सकता । तुम्हारे पिता से मेरे पिता यदि दहेज लेते तो नैतिक दृष्टि से क्या वह डकैती ही न मानी जाती । एकांत जङ्गल में गरीब मुसाफिर को रोक उसे पिस्तौल दिखाकर, लूट लेनेवाला डाकू, और लड़की की बढ़ती हुई उम्र से लाभ उठाकर, किसी गरीब से जबरदस्ती दहेज ऐठने वाला लड़के का बाप, इनमें कोई अन्तर नहीं । ऐसे लुटेरे की संपत्ति को लूटने वाला अच्छा है या बुरा, गुनहगार है या बेगुनाह है, यह सोचना होगा । खैर ! यमुना, यह फिर कभी सोच लेना । आओ, अभी तो दैवयोग से प्राप्त मिलन की इस मङ्गल बेला में सांसारिक सुख लूटें ।

**यमुना** : सांसारिक सुख ! कौन कह सकता है कि इस संसार में सुख है ही ! ये सुख के क्षण एक क्षण के बाद दुःख दायी भी बन सकते हैं । उसी तरह आज के दुःख के क्षण कल सुख के कारण में भी बदल सकते हैं । क्या होगा कौन जाने ! पर यह सच है कि कुछ हो

रहा है और उसके साथ हम भी कहीं खिंचे जा रहे हैं ।

**बसंत** : मुझे ऐसा लगता है यमुना कि तुम्हें दुखों ने अभी तक इतना अपनाया है कि सुख का सौख्य भी तुम्हें दुख-दायी प्रतीत होने लगा है ।

**यमुना** : कौन कह सकता है कि सुख की कल्पना में दुख है अथवा दुख के आनन्द में सन्तोष है ! ( गुलाब का प्रवेश ) आओ दादा, अभी तुम्हारे विषय में ही बातें हो रही थीं ।

**गुलाब** : सुख के क्षणों में भी तुम लोग मुझे याद कर लेते हो, यह मेरा अहोभाग्य है । वरना दुनिया की रीति तो यह है कि जिस व्यक्ति के बिना काम नहीं चलता उस व्यक्ति को भी काम पूरा होते ही मन से दूध की मक्खी की तरह निकाल कर फेंक दिया जाता है ।

**बसंत** : इस समय हमने तुम्हें याद किया, इसमें हमारा कोई बड़प्पन हो, यह बात नहीं । मनुष्य का स्वभाव एकदम बदल गया है, यह भी हम अभी नहीं कह सकते । परन्तु श्रीमान, हमें सुख का दूध पिलाने के लिए आपने सुख के दूध की कटोरी तो भरी, पर उस कटोरी में आपने पहिले ही से मुट्ठी भर नमक डाल दिया है जिससे इस क्षण में हमें तुम्हारी याद आयी ।

**गुलाब** : उसके लिए तुम्हें मुझे धन्यवाद देना चाहिए । अगर

उस कटोरी में नमक की डली न पड़ी होती, तो तुम मुझे कब के भूल जाते। ठीक है न यमुना !

**यमुना** : क्या ठीक है और क्या गलत है, इसे परखना मनुष्य की शक्ति के बाहर है। जो कभी सत्य होता है, वही किसी दूसरी बार असत्य माना जाता है। तुमने भी तो आखिर यह मान ही लिया है या नहीं कि चोरी करना अच्छा है ? चोरी करना अच्छा कब से माना जाने लगा यह मैं नहीं समझी !

**गुलाब** : जब से लड़कों के पिता दहेज लेने लगे तब से। सत्यभामा के पिता ने जब स्यमंतक मणी माँगी तब भगवान श्रीकृष्ण को भी चोरी करनी पड़ी थी।

**यमुना** : देवों के उदाहरण ही आप अपने समर्थन में दिया करते हैं। अच्छा हुआ जो आप डाक्टर बने वकील नहीं।

**गुलाब** : अगर मैं वकील होता, तो सिखा-पढ़ा कर दिन दहाड़े बसंत पर अधिकारपूर्ण डकैती का काम न सौंपता।

**बसंत** : दूसरे के हाथों अपने बीमार को मारने का धंधा ही है तुम डाक्टरों का। बीमार अच्छा हो गया, तो तुम यह डींग मारते हो कि मेरी दवा से अच्छा हुआ और अगर वह मर गया, तो कह देते हो कि उस की लापरवाही ने उसकी जान ली। यह तो तुम डाक्टरों का मोटो ही है।

**गुलाब** : खैर, कुछ भी हो। पर कम-से-कम इस केस की सफलता

का सेहरा मेरे ही सिर बँधा । तुम दोनों सुखी हो गये न ! बस !

यमुना : यह कौन कह सकता है ? दुख की कसौटी पर ही सुख परखा जाता है ।

बसंत : मैं सुखी हुआ, इसमें शक नहीं । पर सुख का सच्चा आनन्द लेने के लिए गरीबी की छाँह में बैठना आवश्यक होता है । लक्ष्मी के प्रभाव के अनेक उदाहरण देखने के कारण उसके प्रति मुझे इतनी घृणा उत्पन्न हो गयी है कि अपने सुख के प्याले को लबालब भरने के लिए मुझे अब गरीब हुए बिना शान्ति न मिलेगी । ( रावबहादुर का प्रवेश )

रावबहादुर : और तुम्हारे भाग्य में वही गरीबी लिखी भी है । ये कौन, डाक्टर ! मेरे होने वाले दामाद ? तुमने भी अच्छी धूल झोंकी मेरी आँखों में ।

गुलाब : ऐसा क्या हो गया ? ( स्वगत ) कहीं चोरी का भंडा-फोड़ तो नहीं हो गया ?

रावबहादुर : याने कुछ हुआ ही नहीं ? तुम सबको मैं अभी पुलिस के हवाले करता हूँ, फिर पता लगेगा कि क्या हुआ ? ( बसंत से ) नालायक कहीं का... पहिले निकल मेरे घर से अपनी इस बीबी को लेकर । वह तो अच्छा ही हुआ जो ईश्वर ने मुझे कुछ सूझ दे दी । मैंने इसके लिए गहने नहीं बनवाये, नहीं तो आज उन्हें भी इससे छीन लेना पड़ता ।

बसंत : पर पिताजी मेरा अपराध ?

रावबहादुर : मेरी तिजोरी से रुपये चुराकर भी तुम मुझसे पूछ रहे हो कि तुम्हारा अपराध क्या है ? निर्लज्ज, तुम्हें पूछते हुए शर्म नहीं आती ?

गुलाब : मैं यह क्या सुन रहा हूँ ? आपकी तिजोरी से बसंत ने रुपये चुराये ? सो किस लिए ?

रावबहादुर : तुम भी खूब बन रहे हो । ऐसा पूछ रहे हो जैसे कुछ जानते ही नहीं ! हो सकता है शायद तुम जानते भी न हो ! कौन कह सकता है ? अरे रे ! पत्नी पाने के लिए आजकल के ये लड़के किसी का खून भी कर सकते हैं । इधर देखो डाक्टर ( डायरी और नाट दिखाता है । ) इन दोनों नंबरों को मिला कर देखो ।

गुलाब : ये तो ठीक मिलते हैं । पर इन नंबरों से बसंत का क्या संबंध ?

रावबहादुर : ये नंबर मेरे नोटों के हैं और ये दूसरे नंबर उन नोटों के हैं जो तुम्हारे मामा ने मुझे दहेज में दिये हैं । दोनों नंबर एक ही हैं न ?...मैं कहता हूँ तुम सब लुच्चे हो, बदमाश हो । मैं सबको हवालात में बन्द कराये बिना चैन से नहीं बैठूँगा ।

गुलाब : अच्छा तो ये बात है ? तभी मामाजी ने मुझसे कह दिया था कि दहेज के रुपयों का इन्तजाम हो गया है और जो रुपये मैं उन्हें दे रहा था वे उन्होंने नहीं लिए । उन्होंने मेरे रुपये क्यों नहीं लिए इसका कारण अब मेरी समझ में आया ।

रावबहादुर : क्या बताऊँ डाक्टर ? मेरी ही बदनामी होगी...मेरी

ही प्रतिष्ठा को कलंक लगेगा इसीलिए मैं रुक गया हूँ, वरना इस साजिश में जितने भी शरीक हैं, उन सबको जेल की हवा खिलाने भेज देता और इस नालायक से कहता कि अब जेल में ही अपनी सुहागरात मना । इस बेवकूफ ने इस पाजी ने...मेरे मुँह पर कालिख पोत दी !

**गुलाब** : कुछ भी कहिए...कुछ भी सोचिए ! आखिर है तो आपका ही बेटा...यों गलती हर एक आदमी से हो जाती है ।

**रावबहादुर** : क्या तुम इसे गलती कहते हो ? अजी डाक्टर साहब, यह गलती नहीं । यह किमनल आफेन्स है । यह डकैती है—डकैती ! इसके लिए काले पानी की सजा भी हो सकती है । इस कुपूत ने घराने की इज्जत धूल में मिला दी ! (बसंत से) अब क्यों घिघी बँध गयी ? बोलता क्यों नहीं ?

**बसंत** : अगर आप दहेज लेने का हठ न करते तो ऐसा कभी न होता ।

**रावबहादुर** : गधे ! पाजी ! नालायक ! चुप रह ! मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । तेरा एक शब्द भी अगर मेरे कानों में पड़ गया तो मेरा क्रोध भड़क उठेगा । निकल जा मेरे घर से इसी समय ।

**यमुना** : कम-से-कम मेरी ओर देखकर तो ऐसा न कीजिए ।  
( रावबहादुर के पैर पकड़ लेती है । )

**रावबहादुर :** तुम्हारी ओर देखकर ही मुझे ऐसा करना पड़ रहा है । चार हजार रुपये चुराये हैं इसने । ( दिगंबरपंत का प्रवेश )

**गुलाब :** (स्वगत) बस हो गया खेल खतम ! मामा जी भी आ गये !

**दिगंबरपंत :** ( रावबहादुर के पैर पकड़कर ) मेरी तरफ देखिए ।... यह सारा अपराध मेरा है । भगवान जाने मेरी मति कैसी भ्रष्ट हो गयी थी कि मैंने बसंतराव से चोरी करने के लिए कहा । ये सब लोग निर्दोष हैं । इन्हें छोड़ दीजिए । मुझे पुलिस के हवाले कर दीजिए । सजा दिलाइए ।

**रावबहादुर :** निकलो बाहर । तुम भी मेरे घर से बाहर निकल जाओ । मैं तुम्हारा काला मुँह देखना भी नहीं चाहता । अपना लड़का समझ कर कहीं इस नालायक को माफ करने की मेरी इच्छा हुई भी, तो तुम्हारा मनहूस चेहरा देखकर, वह जाती रहेगी । इन्हीं पापों के कारण भगवान ने तुम्हें इतनी लड़कियाँ दीं । पिछले जन्म में तुमने किसी के घर डाका डाला था, तभी इस जन्म में तुम्हारा घर बरबाद हो गया । और अब इस जन्म में ऐसे पाप करके अगले जन्म में जाने और क्या-क्या भोगोगे ? ( दिगंबर और यमुना को टकेल कर अलग कर देता है । )

**गुलाब :** (स्वगत) सच मामा, आपके ये उपकार मैं जिन्दगी भर भी न भूलूँगा ।

दिगंबरपंत : जो भी सजा आप देना चाहते हैं, मुझे दीजिए । मेरी गलती के कारण उन्हें क्यों कोई सजा मिले ? वे बेचारे तो निरपराध हैं ।

रावबहादुर : क्या करूँ ? अनायास ही ये सारे उचक्के इस वक्त एक ही जगह मौजूद हैं । क्या पुलिस को बुलाकर इन सब को गिरफ्तार करा दूँ ?

गुलाब : रावबहादुर साहब, आप थोड़ा सोचिये । सच पूछा जाये तो इस चोरी से आपकी प्रत्यक्ष कोई हानि नहीं हुई है ।...

रावबहादुर : क्या कहा ? मेरी हानि नहीं हुई है ? जनाब, दहेज के चार हजार रुपये डूब गये और तुम कहते हो कि हानि नहीं हुई है ?

गुलाब : वसंत को विलायत भेजने के लिये ही तो आप दहेज ले रहे थे न ? अब उसे विलायत मत भेजिए । यह वसंत के लिए सजा हो जायेगी और आप हानि से बच जायेंगे !

रावबहादुर : (स्वगत) इसने तो मुझे कैसा बुरा फँसाया । प्रकट ठीक है । अब जो हुआ सो हुआ । डाक्टर, सिर्फ तुम्हारे लिए मैं इन सब को माफ करता हूँ । पर एक शर्त पर । वसंत को खाली हाथ मेरे घर से निकल जाना होगा ।

वसंत : चलो यमुना, भगवान ने अपनी सुन ली । यही तो

हम चाहते थे । (दोनों रावबहादुर को प्रणाम कर चले जाते हैं ।)

**रावबहादुर :** देखा कितना घमंडी है बेटा ? अपना ही बेटा है और फिर बेमां का है । इसीलिये सारा क्रोध पी जाना पड़ता है । अगर यह घमंड है तो जाए खुशी से चला जाये और भीख माँगकर अपना पेट भरे । मुझे उसकी कोई परवाह नहीं । मैं सारी जायदाद बेच दूँगा और सारा रुपया बैंक में रख दूँगा और वसीयत कर दूँगा किसी संस्था के नाम पर । संस्था के नाम पर क्यों ? अपने नाम पर ही कर दूँगा ! और तुम (दिगंबरपंत से) अपना यह काला मुँह मुझे फिर कभी न दिखाना, जाओ ! (प्रस्थान)

**दिगंबरपंत :** यह क्या करा दिया तुमने नानू ? रावबहादुर को जितना गुस्सा बसंत पर है, उतना ही गुस्सा मुझे तुम पर है । मुझे तो सारा हाल उसम नोहरपंत ने बताया । सुनते ही मैं दौड़ा आया ।

**गुलाब :** (दिगंबरपंत के चरण पकड़कर) मामा, मुझे माफ कर दीजिये । सारा अपराध मेरा है । मेरे कारण आपका अपमान हुआ । पर मामा, इस बार मेरी तरफ देखकर यह सब सहन कर लीजिए और देखिए कि यही मामला किस तरह उलटे देता हूँ ! जब आप वह देखेंगे, तो आपको जरा भी अफसोस न होगा ।

**दिगंबरपंत :** लड़की के पिता लिए क्या मान और क्या अपमान ।

चलो घर चलें ! बसंतराव की भी तो फिकर करनी है ।  
पर बेटा, अब जो हो गया है, उसे भूल जा । ओर  
आगे कोई उलझन पैदा न करना ।

गुलाब : मामा आप निश्चिन्त रहें । पर जब तक मैं आपके  
अपमान का बदला नहीं ले लेता, तब तक मुझे  
चैन नहीं ।

(प्रस्थान)



## दृश्य ३

[ स्थान—रास्ता । मनोहर का प्रवेश ]

**मनोहर** : सोचा था क्या, और क्या हो गया ? सजा मिली बहिन को और भाई बच गया । यों तो बहिन को मिली सजा एक तरह से भाई को भी मिल गयी है । पर ऐसा सोचना किसी तरह से मन को समझा लेना ही है । ऐसा सोचने से काम नहीं चलेगा । गुलाब को सजा मिलनी ही चाहिए । उस लड़की से उसी ने मेरा अपमान कराया था, इसमें शक नहीं । क्या करूँ ? यह नाटक उसी ने रचा था, इसीलिए बचू बच गये, वरना उस बेवकूफ में इतनी अक्ल कहाँ जो सजा से छूट जाता ? अब उसे किसी तरह चक्कर में लाऊँ ? सुनता हूँ मंजरी से वह प्रेम करता है और शायद दोनों का विवाह भी तय हो गया है । हाँ, ठीक है । यही करूँ । मैं रावबहादुर के पास जाऊँ और उनसे कहूँ कि मैं मंजरी से विवाह करना चाहता हूँ । मेरा मंजरी से विवाह हो जाए, तो दोनों से बदला लिया जा सकेगा । गुलाब को मंजरी से वंचित होना पड़ेगा । वह उसे दिल दे बैठा है । मेरी पत्नी हो जाने पर मैं मंजरी पर इतने कोड़े बरसाऊँगा कि उसे छट्टी का दूध याद आ जाएगा । बस, यही करना चाहिए । अरे वाह ! विष्णुपंत जी इसी तरफ आ रहे हैं । बड़े

मौके पर उनसे भेंट हो रही है । (विष्णुपत का प्रवेश)  
नमस्ते, विष्णुपंत जी ! कहिए, क्या हाल है ? उस  
मामले में क्या हुआ ?

विष्णुपंत : वही हुआ जो होना था । रावबहादुर ने सारी जाय-  
दाद बेचकर रुपये बैंक में जमा कर दिये । अब बसंत  
की अक्ल ठिकाने आ जाएगी । ऐसे लड़कों को यही  
सजा मिलनी चाहिए ।

मनोहर : बैंक में रुपया रखने से क्या फायदा ? रावबहादुर के  
मरने के बाद सारा रुपया आखिर बसंत को ही तो  
मिलेगा ।

विष्णुपंत : नहीं, ऐसा नहीं होगा । कानी कौड़ी भी उसे नहीं  
मिलेगी । रावबहादुर सारा रुपया किसी संस्था के नाम  
पर लिख देने वाले हैं । पर हाँ, अभी नहीं... अपनी  
मृत्यु के बाद ।

मनोहर : फिर वे सारी जायदाद मंजरी को ही क्यों नहीं दे  
देते ?

विष्णुपंत : वह बसंत से बहुत प्यार करती है, इसलिए उन्हें यह  
शक है कि कहीं वह सारी जायदाद बसंत को ही  
दान न कर दे । यूँ मंजरी को किस बात की कमी है ?  
उसका भावी पति डेढ़ लाख का मालिक है ।

मनोहर : कौन ? डाक्टर गुलाब ? वह इतना धनी कब से हो  
गया, भाई ?

विष्णुपंत : उसके किसी चाचा की जायदाद उसे मिल गयी है ।

मनोहर : अच्छा, यह बात है ? तभी उसके पैर जमीन पर नहीं पड़ते ! पर विष्णुपंत जी, आप मेरा एक काम कर दीजिए । मैं आपके उपकारों को कभी नहीं भूलूँगा । ऐसी कोशिश कीजिए कि रावबहादुर अपनी सारी जायदाद मंजरी के नाम पर कर दें और मुझसे मंजरी का विवाह कर दें ।

विष्णुपंत : मुझे क्या दोगे, बताओ ? जायदाद का चौथाई हिस्सा दोगे ?

मनोहर : हाँ, बड़ी खुशी से । इसमें मेरे पिताजी का क्या जाता है ?

विष्णुपंत : ठीक है । अब यह बताओ, तुम बिना दहेज लिए विवाह करने को तैयार हो या नहीं ?

मनोहर : एक पैर पर । जब इतनी जायदाद मिलने वाली हो तो दहेज कौन बेवकूफ माँगेगा ?

विष्णुपंत : तब ठीक है । पहिले बिना दहेज के विवाह करने को तैयार हो जाओ । उसके बाद आगे की बात देखेंगे धीरे-धीरे ।

मनोहर : जैसा आप कहें ।

विष्णुपंत : तो फिर चलो मेरे साथ ।

( प्रस्थान )



## दृश्य ४

( स्थान रावबहादुर का घर । मंजरी बैठी है । )

**मंजरी** : दुनिया में भाग्य भी कोई चीज है, इसमें शक नहीं । वरना किसने सोचा था कि यह चोरी इतनी जल्दी पकड़ जाएगी ? पर जाने कहाँ से और किस तरह भंडा फूट गया ? ये सब भाग्य के खेल हैं ! पता नहीं मेरे भाग्य में क्या बदा है ? पिताजी ने जायदाद बेच कर रुपया बैंक में जमा कर दिया । दादा पर उनका गुस्सा ज्यों का त्यों है । उसके काम होने के कोई आसार नहीं दिखते । दादा का अथवा मामी का नाम लेते ही वे आपसे बाहर हो जाते हैं । ऐसी स्थिति में पढ़ने में मेरा मन कैसे लगे ? इसलिए एक दिन जी कड़ा करके जिनसे पूछना चाहती थी, उनसे पूछकर आगे क्या करेंगे, यह तय कर लिया है । अब पिताजी आये तो उनसे—(रावबहादुर का प्रवेश) अरे, पिताजी आ ही गये । (उनके कपड़े लेकर रखती है ।) क्यों पिताजी, आज आप बिल्कुल नहीं बोल रहे हैं, क्या बात है ?

**रावबहादुर** : क्या बोलूँ ? आज मैं एक बड़ी उलझन में फँस गया हूँ ।

**मंजरी** : यह और कौनसी नयी उलझन पैदा हो गयी ?

रावबहादुर : आज विष्णुपंत कह रहे थे... अब तुम्हें क्या बतलाऊँ बेटी— बड़ी ही मुश्किल आ पड़ी है ।

मंजरी : भगवान जाने क्या-क्या लिखा है भाग्य में ? दिखत है हमारे बुरे दिन आ गए हैं, पिताजी !

रावबहादुर : ऐसी बात तो नहीं है बेटी ! दिन तो बुरे नहीं आये । पर हाँ, एक मुसीबत जरूर आ गयी है । एक का दिया हुआ वचन तोड़कर दूसरे से बात पक्की करना बड़ा कठिन है और बुरा तो है ही ।

मंजरी : काहे की बात पक्की करनी है ? विवाह की ? किसके विवाह की ? किसके साथ ?

रावबहादुर : अब मुझे और किसका विवाह करना है ? केवल तुम्हीं बची हो— तुम्हारा ही विवाह करना है !

मंजरी : मेरा विवाह ? हिन्दू-कन्या को एक ही समय, एक से अधिक विवाह करने की अनुमति कब से मिल गयी पिताजी ?

रावबहादुर : तुम्हारे बारे में अभी एक से अधिक विवाह का सवाल ही कहाँ आया है ? तुम्हारा विवाह कहाँ हुआ है ?

मंजरी : विवाह होने में और क्या बचा है ? विवाह की विधियाँ केवल पंडितों के सामने होने को भर रह गयी हैं । यों ईश्वर को सादी करके हम दोनों कब के वचन-बद्ध हो चुके हैं । इसलिये मेरा विवाह हो चुका, यही समझिए ?

रावबहादुर : तुम क्या कह रही हो, मैं ठीक से समझा नहीं ।

**मंजरी** : मैं विवाह करना ही नहीं चाहती थी। विवाह के लिए मैं राजी हो जाऊँ, इसलिये आपने जिनसे मेरा मन बदलने को कहा था, उन्होंने सिर्फ विवाह करने के लिए ही मुझे राजी नहीं किया, बल्कि हम दोनों विवाह के लिए वचनबद्ध भी हो चुके हैं।

**रावबहादुर** : यह और मुश्किल हुई। मैंने तो मनोहरपंत को यहाँ बुलाया है। विष्णुपंत को उन्हें लाने के लिए भेजा है !

**मंजरी** : ये कौन मनोहरपंत हैं। क्या वह जानवर ? ( हँसती है। )

**रावबहादुर** : दाँत क्या निकालती हो ? क्या किसी आदमी को जानवरों का डाक्टर होना ही नहीं चाहिये ?

**मंजरी** : वे एक बार मुझे देखने आये थे। ईश्वर जाने ये देखना-दिखाना क्या बला है ? अनेक वर्षों तक नित्य एक दूसरे के साथ रहने वाले दो घनिष्ठ मित्र किसी के भड़का देने से एक क्षण में बैरी बन जाते हैं, वर्षों से आनन्द में रहने वाले सुखी दम्पति भी एक मामूली कारण से हमेशा के लिए सुख से वंचित हो जाते हैं, पिता पुत्र बरसों एक साथ रहने पर भी एक दूसरे के स्वभाव को नहीं समझ पाते। और इधर ये अठारह-बीस साल के जवान लड़के केवल दो घंटे की परीक्षा से ही अपनी जीवनसंगिनी पसन्द कर लेते हैं...जैसे लड़की कोई बाजार में बिकने

आई भैंस हैं कि देखा और खदेर लाए । पिताजी,  
मैं कहती हूँ कि यह सब मूखों का बाजार है !

रावबहादुर : वे तुम्हें देखने कब आये थे ?

मंजरी : दादा के विवाह से...

रावबहादुर : चुप रहो । मैं उसका नाम भी नहीं सुनना  
चाहता ।

मंजरी : विवाह से पहिले ! वह मनोहरपंत जानवर है ।  
फिर उसने अपना काम भी ठीक ही चुना है । और  
यदि वह बड़ा होशियार भी हो तो मुझे उससे क्या ?  
मेरा विवाह तो हो चुका ।

रावबहादुर : यह तुम गलत कह रही हो । तुम्हारा विवाह हो  
गया—यह बिल्कुल बेतुकी बात है !

मंजरी : पिताजी, अब आप कुछ और कहेंगे तो मैं भी घर  
छोड़कर चली जाऊँगी ।

रावबहादुर : (स्वगत) लगता है यह बिना दहेज का मिलने वाला  
लड़का हाथ से निकल जाएगा ! गुलाब भी जाने क्या  
करता है ! धनी है । शायद दहेज के लिये हठ न  
करेगा । पर कहीं उसने भी दहेज माँगा तो फिर मैं इस  
की एक न सुनूँगा और इसे मनोहर के साथ ही विवाह  
करने के लिए मजबूर कर दूँगा ।

मंजरी : पिताजी, क्या सोच रहे हैं ? आप कुछ भी कहें, पर  
मेरा विवाह उसी से होगा जिससे पहिले तय हो  
चुका है । मैंने अभी उन्हें यहाँ बुलाया भी है ।

आप तो जल्दी से तिथि निश्चित कर लीजिये ।  
इस श्मशान जैसे घर में अब मुझसे नहीं रहा  
जाता ।

रावबहादुर : उन्हें बुलाया है ? याने किन्हें ? क्या डाक्टर गुलाब  
को ? अच्छा किया । कब आ रहे हैं वे ? खैर, तुम्हारे  
ही मन की हो जाए ।

मंजरी : देखिए, वे... वे आ ही गए । ( गुलाब का प्रवेश )

रावबहादुर : आओ डाक्टर, बैठो । मैं ही तुम्हें बुलवाने का इरादा  
कर रहा था । सच पूछा जाए तो मुझे ही तुम्हारे  
घर आना चाहिए था । परन्तु तुम्हारे मामा का कभी  
मुँह नहीं देखूँगा, ऐसी मैंने प्रतिज्ञा की है ।

गुलाब : जो हुआ, सो हुआ । अब गड़े मुर्दे उखाड़ने से  
क्या फायदा ? रही मेरे घर आने की बात, तो आपसे  
साफ कह दूँ कि मैं मान-सम्मान का भूखा कभी नहीं  
रहा । यों आपके बुलाने पर आना मेरा कर्तव्य है !

रावबहादुर : अब मेरा क्या है, डाक्टर ? जो है यह मंजरी है...  
बुढ़ापे का सहारा । उसे दूर करने में मेरा कलेजा फटा  
जा रहा है । पर करूँ क्या ? लड़कियाँ तो पराया धन  
होती हैं । आज या कल, कभी-न-कभी उनका विवाह  
तो करना ही होगा । फिर उन्हें अधिक दिन अपने  
साथ रख कर स्नेह भी अधिक क्यों बढ़ाया जाए ? उसी  
वक्त ये दोनों विवाह हो जाते... पर अब बीते पर क्या  
रोऊँ ? ( गहरी साँस लेकर ) कण्व ने जो कहा वह भूठ  
नहीं । उस तपस्वी को पाली हुई लड़की का भी

विछोह दुःसह हुआ था । फिर मेरा क्या ? मैं तो एक साधारण आदमी हूँ । हमें अपने पेट के गोले को दूसरे के हवाले करते समय क्या वेदना होती होगी, यह आज तुम्हारी समझ में नहीं आएगा ।

**गुलाब** : (स्वगत) पेट के गोले को या कि गाँठ के गोले को ? और बसंत नहीं था शायद आपके पेट का गोला ? ( प्रकट ) यद्यपि मुझे स्वयं इसका कोई अनुभव नहीं है, फिर भी अपने मामा के अनुभव का थोड़ा सम-भागी मैं भी रहा हूँ ।

**रावबहादुर** : मैं प्रार्थना करता हूँ, कृपा कर मेरे सामने उसका नाम न लो ! अच्छा, यह बताओ कि तुम्हारी जो अड़चनें थीं, वे अब तो दूर हो गयीं न ? यदि अगले सप्ताह में विवाह की तिथि निश्चित कर दी जाए, तो तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं । हाँ, तुम खुद-मुस्तार हो, यही कम-से-कम अच्छा है !

**गुलाब** : ति-थी- विवाह की ! पर...

**रावबहादुर** : अब 'पर' किस लिए ? मंजरी का ही आग्रह है कि विवाह अगले सप्ताह में हो ही जाना चाहिए । नहीं तो मुझे कोई खास जल्दी नहीं है । मैं भी कहाँ चाहता हूँ कि वह मुझे छोड़कर चली जाए ? पर इसका मतलब यह न समझ लेना कि मैं तुम्हें घर-जमाई बनाकर रखना चाहता हूँ । मैं उसके योग्य नहीं । इससे अच्छा तो यह होगा कि तुम्हीं मुझे घर-ससुर बना लो । ( हँसता है । )

गुलाब : मैं कुछ स्पष्ट बातें कह दूँ, तो आप नाराज तो न हो जाएँगे ? सारा भार मुझ अकेले पर पड़ जाने से ऐसे कठिन काम की जिम्मेवारी मैं और किसी पर नहीं छोड़ सकता । फिर मामा...ओफ भूल गया...आपके सामने तो उनका नाम भी नहीं लिया जा सकता ।

रावबहादुर : यूँ नाम भी लिया जा सकता था पर लड़के के विवाह की बातों में वे क्या समझते हैं ? वे तो केवल लड़कियों के विवाह करना ही जानते हैं ।

मंजरी : आप भूल रहे हैं, पिताजी ! आज आप भी उसी स्थिति में हैं ।

रावबहादुर : ( स्वगत ) प्रसंग बड़ा कठिन है ! ( प्रकट ) हाँ, अब मैं समझ गया ।

गुलाब : ( स्वगत ) अच्छा हुआ, जो जल्दी समझ गये, वरना उलटा मुझसे ही दहेज माँग बैठते !

रावबहादुर : अच्छा, बताइए आगामी सप्ताह में कौन-सा दिन तय किया जाए ? मंजरी, वह पंचांग तो उठाओ ।

गुलाब : अभी पंचांग रहने दीजिए । पहले हम दूसरी महत्वपूर्ण बातों पर विचार कर लें । हाँ, तो पहिली बात यह है कि विवाह ठाठ-बाट से होना चाहिए । मैं घर का अकेला लड़का हूँ । मेरे घराने में यह पहला ही विवाह है, इसलिए यह विवाह धूम-धाम से हो, यह अत्यन्त आवश्यक है !

रावबहादुर : आश्चर्य है ! इतना पढ़-लिख कर भी तुम ऐसी बातें करते हो ?

**गुलाब** : हर आदमी में कहीं-न-कहीं एक कमजोरी होती है । इसे मेरी ही कमजोरी समझ लीजिए...मेरा मतलब है मेरा वीक पॉइंट (Weak point ) । इसीलिए तो...हाँ, सच पूछा जाय तो कहना नहीं चाहना था, पर अब कह ही देना चाहिए...यमुना के विवाह के समय मैंने आपकी सारी शर्तें मंजूर कर ली थीं ।

**रावबहादुर** : मेरा ख्याल है इस विषय में आप यदि थोड़ी गंभीरता से सोचें तो अच्छा होगा ।

**गुलाब** : युवक गंभीरता पूर्वक सोच नहीं सकते । गंभीरता से विचार करना उनके लिए एक असंभव बात है । जीवन में विवाह एक ही बार होता है...खैर, यह तो तय हो गया कि विवाह ठाठ-बाट से होगा...

**रावबहादुर** : मैंने यह कहाँ कहा कि तय हो गया ? मंजरी इस विषय में तुम्हारी क्या राय है ?

**मंजरी** : हर लड़की यही चाहती है कि उसका विवाह धूम-धाम से हो ।

**गुलाब** : तब तो यह बात पक्की हो गई । अब दूसरी बात । पर वह तो पहिले ही तय हो चुकी है ।

**रावबहादुर** : पहले क्या तय हो गया है ?

**गुलाब** : चढ़ाये सहित कन्या-दान ।

**रावबहादुर** : यह कब और किसने तय किया ? तुम तो बिल्कुल गला ही दबाने लगे ।

**मंजरी** : पिताजी, जरा सोचिए आप किससे बातें कर रहे हैं ?  
आदमी देख कर बात करना चाहिये ।

**गुलाब** : मैं आपका गला नहीं दबा रहा हूँ । जो सच है वहीं  
कह रहा हूँ । यमुना के विवाह में आपने कहा  
था—

**रावबहादुर** : उनमें से किसी का नाम मत लो । मुझ पर इतनी दया  
करो । हाथ जोड़ता हूँ ।

**गुलाब** : मेरे लिए—उसी तरह मंजरी के लिए आपको अपना  
यह गुस्सा थोड़ी देर के लिए अलग रख देना  
होगा ।

**रावबहादुर** : (स्वगत) अब यह मेरा गला दबाएगा !

**गुलाब** : यमुना के विवाह में आपने कहा था कि मंजरी की  
स्वर्गीया माता के गहने मंजरी के ही हैं । याद है  
आपको ?

**रावबहादुर** : (स्वगत) कितना धूर्त है । भूला भी नहीं ! (प्रकट)  
वे गहने अब नहीं हैं । उस दिन क्रोध के आवेश में  
मैंने उन सबको बैंक में रख दिया ।

**गुलाब** : बैंक से वापिस लाये जा सकते हैं ।

**रावबहादुर** : उन्हें बेचकर मैंने रुपये बना लिये हैं ।

**गुलाब** : तो क्या हुआ ? रुपए से फिर गहने बन सकते हैं ।  
थोड़ा बहुत घाटा अगर हुआ भी तो मंजरी को उसका  
बुरा न लगेगा इसका जिम्मा मैं लेता हूँ ।

**मंजरी** : मुझे यह मंजूर है ।

रावबहादुर : याने क्या तुम भी वे गहने चाहती हो ?

मंजरी : इसमें चाहने का सवाल ही क्या ? उन गहनों पर मेरा अधिकार है ।

रावबहादुर : सच है, लड़कियों को पढ़ाने से वे बौखला जाती हैं ।

गुलाब : तो फिर यह भी तय हो गया । अब...

रावबहादुर : (स्वगत) अब दहेज माँगता है क्या !

गुलाब : अब पोशाक ! पुराने पोशाक का जमाना तो अब लद गया । वह तो कोई पहिनता नहीं । इसलिए अब "व्हाईट-वे-लेडला" कंपनी के एक-दो अप टु-डेट सूट्स, ज्वेल्ड टाईपिन, अँगूठी-सोने की नहीं भला, हीरे की, रिस्टवाच और एक मोटर साइकल विथ साईडकार... इतना मिल जाने के बाद फिर मुझे और कुछ नहीं चाहिये ।

रावबहादुर : कहीं तुम मुझे कुवेर तो नहीं समझ बैठे हो ?

गुलाब : हाँ, तो यह भी निश्चित हो गया । अब

रावबहादुर : कब निश्चित हुआ ?

मंजरी : निश्चित हो गया ! पिताजी कह दीजिए निश्चित हो गया ! कह दीजिए न कि निश्चित हो गया ?

रावबहादुर : पगली हो तुम मंजरी ! क्या निश्चित हो गया ? यूँ ही कह दूँ निश्चित हो गया !

गुलाब : हाँ, वह तो निश्चित ही है । अब कन्यादान की दक्षिणा...

रावबहादुर : (स्वगत) अरे बाप रे !

गुलाब : हम ब्राह्मण हैं, बिना दक्षिणा के दान ग्रहण करना हमारे लिए अत्यंत अनुचित है। इसलिये कन्यादान के साथ वर-दक्षिणा होनी ही चाहिए।

रावबहादुर : दहेज से मुझे घृणा है !

गुलाब : दहेज देने से या लेने से ?

रावबहादुर : (स्वगत) क्या करूँ, जवाब तो ऐसा करारा दे सकता हूँ कि यह भी याद करे। पर मंजरी के कारण मेरे मुँह पर ताला पड़ा है। ईश्वर किसी को लड़कियाँ न दे।

गुलाब : दहेज लेने से तो आपको घृणा नहीं है, यह निश्चित है, क्योंकि बसंत के विवाह में...

रावबहादुर : उसका नाम भी मत लो मेरे सामने। मैं कई बार कह चुका न ?

गुलाब : बिना उसका नाम लिए अब तो काम ही न चलेगा। कम-से-कम मंजरी के लिए तो आपको अब दिल मजबूत करना ही होगा। बसंत के लिये आपने चार हजार रुपये दहेज के लिये थे...

रावबहादुर : पर वह मुझे मिले कहाँ ?

गुलाब : और अगर मिल भी जाते तो लाभ क्या था ? क्योंकि बसन्त को विलायत भेजने के लिए आपके रुपये चाहते थे।

रावबहादुर : पर तुम लखपती हो ! मैं तुम्हारी कैसे बराबरी कर सकता हूँ ?

गुलाब : यह बात ठीक है ! परन्तु मेरे चाचा ने अपने वसी-यतनामे में यह लिख दिया है कि विवाह तथा बहू के गहनों का खर्च दहेज की रकम से ही पूरा होना चाहिये ।

रावबहादुर : तुम तो कुछ भी कहे जा रहे हो ।

गुलाब : उस विवाह में आपने अपनी मृत पत्नी की जो जो इच्छायें बतायी थीं उन्हें सुनकर उस समय यदि मैं भी यही कहता तो आपको कैसा लगता ? किसी पर तो थोड़ा विश्वास कीजिये । अच्छा, अब दहेज की रकम !

रावबहादुर : (स्वगत) हे ईश्वर भूल कर भी किसी को लड़कियों का बाप न बनाना !

गुलाब : बसंत के लिए आपने... (रावबहादुर मुँह फेर लेते हैं ।) सुन तो लीजिए । अब बिना सुने कोई चारा नहीं... बसंत के लिए आपने चार हजार लिए थे । वह तो सिर्फ बी० ए० पास है ! मैं एम० डी० हूँ । मुझे यदि आप दहेज पाँच हजार रुपये दें तो वह अनुचित न होगा ।

रावबहादुर : पर इतना रुपया मैं लाऊँ कहाँ से ?

गुलाब : क्यों भला ? आपकी तिजोरी से बसंत जब आसानी से चार हजार रुपये चुरा सका, तब...

रावबहादुर : ओफ ! उस लड़के ने तो मेरे मुँह पर कालिख पोत दी । कहीं का नहीं रखा मुझे । नहीं, ... डाक्टर, उस बात का जिक्र करके जले पर नमक मत छिड़को ।

गुलाब : जीवन में कुछ मौके ऐसे भी आते हैं जब बड़ी-बड़ी मुसीबतों की याद भी हँसकर करनी पड़ती है । समझ लीजिए यह भी एक ऐसा ही मौका है । सुनिए, जब कि बसंत आपकी तिजोरी से चार हजार रुपये आसानी से चुरा सका और इसका पता तक आपको न चला, तब उस तिजोरी में उससे भी कहीं अधिक रकम है, इसमें शक नहीं । फिर नोटों के नंबर जाँचने के लिए जो डायरी आपने मुझे दिखायी थी, ( राव-बहादुर माथे पर हाथ पीट लेते हैं । ) उस डायरी के उसी पृष्ठ पर पच्चीस हजार के अंक मैंने स्वयं देखे थे... उसके सिवा और भी...

रावबहादुर : मेरी जायदाद का लेखा रखने के लिए मैंने तुम्हें नहीं बुलाया है । इनकमटैक्स वाले भी इतनी पूछताछ नहीं करते ।

गुलाब : तो दहेज भी तय रहा । अब स्वागत-सत्कार !

रावबहादुर : क्या यह भी तय हो गया ? मैं दहेज तुम्हें एक कानी कौड़ी भी नहीं दूँगा । समझे ?

गुलाब : दहेज के नाम पर मत दीजिए । विवाह के खर्च के लिए दीजिए... दामाद को उपहार के रूप में दीजिए... या लड़की के पति को प्रोत्साहित करने के लिए पुर-

स्कार के रूप में दीजिए... किसी भी रूप में दीजिए...  
पर दीजिए जरूर ।

रावबहादुर : मैं यह विवाह नहीं करना चाहता । मुझे यह रिश्ता  
मंजूर नहीं ।

गुलाब : ठीक है । तो मैं जाता हूँ । नमस्ते ।

मंजरी : ठहरिये पिताजी, यह क्या हो रहा है ? मेरे सुख की  
अपेक्षा क्या आपको अपना रुपया अधिक प्रिय है ?  
क्या आपके मन में अब मेरे लिए कोई स्नेह नहीं  
रहा ?

रावबहादुर : मैं स्पष्ट शब्दों में कहे देता हूँ... कान खोलकर सुन  
लो । मुझे यह विवाह मंजूर नहीं ! लव्ह मैरिज  
(Love marriage) है... तुम अपना प्रेम-विवाह  
बताते हो इसे ? प्रेम-विवाह कह कर लड़की के पिता  
को लूटने का अच्छा नया तरीका निकाला तुमने ।  
अगर लूटना ही है तो यह प्रेम-विवाह का नाटक  
क्यों ?

मंजरी : यदि आप यह विवाह नहीं होने देंगे तो आपके  
चरणों पर सिर पटक कर मैं प्राण त्याग दूँगी ।

रावबहादुर : मंजरी, यह क्या पागलपन है ? तुम बिल्कुल बावली  
हो । कुछ समझती तो हो नहीं, बस, बक  
देती हो । (गुलाब से) अजी डाक्टर ! क्या इसके इस  
प्रेम का तुम्हारे पास कोई मूल्य नहीं ?

गुलाब : लव्ह, प्रेम और प्रणय... यह मैं कुछ नहीं जानता ।  
लव्ह के पागलपन से मूर्ख बन कर यदि मैं दहेज न

लूँ, तो मेरी प्रतिष्ठा को धक्का लगेगा। यह सिद्धांत, यमुना के विवाह के समय दिये गये आपके भाषण ने मेरे मन में पूरी तरह अंकित कर दिया है। बसंत भी यमुना से प्यार करता था। उस समय आपने उन दोनों के प्रेम का क्या मूल आँका था।

रावबहादुर : यमुना और बसंत ! बसंत और यमुना ! फिर वही दोनों ! जैसे दोनों भूत बनकर मेरे पीछे पड़ गए हैं ! (तार वाला आता है )

मंजरी : क्या तार आया है ! किसका तार है ? दादा तो यहीं है न ? मेरी तो छाती धड़कने लगी। ऐसा लग रहा है कोई बुरी खबर तो नहीं ! दादा यहीं है न ?

रावबहादुर : उसे क्या होगा ? पाजी ने मुझे ही सब तरफ से चक्कर में डाल दिया है ! (तार पढ़कर) हे राम, सर्वनाश हो गया ! मैं लुट गया, तबाह हो गया ! मंजरी, मैं कहीं का न रहा ! (सिर पर हाथ रखे चुपचाप बैठ जाते हैं।)

मंजरी : क्या हुआ ? पिताजी ? क्या हुआ ? आखिर हो क्या गया ?

रावबहादुर : उस लड़के का मुझे शाप लग गया ! डाक्टर, मैं लुट गया, तबाह हो गया। देखो, इस तार को पढ़ो।

गुलाब : (तार पढ़ कर मंजरी को देता है) हौं ! भाग्य का खेल है ! कर्म-गति है ! और क्या ? अच्छा, तो मैं अब चलूँ। नमस्ते ?

रावबहादुर : यह क्या ! तुम क्यों जा रहे हो ? क्या इसलिये कि

बैंक फेल हो गया ? जाने कैसे मेरी मति भ्रष्ट हो गयी ।  
मेरा सर्वस्व चला गया । अपने हाथ से मैंने अपनी  
पूरी जिन्दगी उन चोरों के हवाले कर दी । लड़के को  
तो पहले ही से घर से निकाल चुका...

**गुलाब** : और इसलिए आप अपने सर्वस्व से हाथ धो  
बैठे !

**रावबहादुर** : मेरा भाग्य ! मेरा कार्य !

**गुलाब** : इसमें शक नहीं कि यह कर्म स्वयं आपका ही है ।  
अब जो बोया है, उसे काटिये ! अच्छा, तो मैं अब  
चलूँ ! नमस्ते ।

**रावबहादुर** : ( उसका हाथ पकड़ कर ) टहरो ! मंजरी इसे देखो,  
इससे तुम लव्ह करती हो न ? क्या यह मनुष्य  
तुम्हारे प्रेम के योग्य है ? देखो, मेरा ऐश्वर्य समाप्त होते  
ही इसके प्रेम की लौ बुझ गयी और यह जा  
रहा है ।

**मंजरी** : ( स्थिर आइ लव्ह हिम ) प्रेम अन्धा होता है,  
पिताजी !

**रावबहादुर** : पर तुम्हारी तो आँखें हैं ! ( विष्णुपंत और मनोहर आते  
हैं ! ) बड़े मौके पर आये हो, मनोहरपंत ! बिना  
दहेज लिये मेरी लड़की से विवाह करने के लिए तुम  
तैयार हो न ?

**मनोहर** : बिना दहेज लिए आपकी लड़की से विवाह करने के  
लिए मैं बिल्कुल तैयार हूँ । मुझे दहेज नहीं चाहिए ।

**गुलाब** : पर तुमने यह तार पढ़ लिया है ? ( मंजरी उसे तार देती है । )

**मनोहर** : ( तार पढ़कर ) अरे-रे-रे इसी बैंक में तो आपकी सारी पूँजी थी न ? मुझे आप पर बड़ी दया आती है । जाने आजकल क्या हो गया है । रोज किसी-न-किसी बैंक का दिवाला निकल रहा है ! राम ! राम ! कितना अनर्थ हो गया ?

**विष्णुपंत** : क्या कहा ? बैंक का दिवाला निकल गया ? तब तो सारा खेल ही खत्म हो गया !

**मनोहर** : रावबहादुर साहब, विष्णुपंत जी, तो मैं चलूँ अब । नमस्ते ।

**रावबहादुर** : यह क्या ? मंजरी से विवाह करने के लिए तुम तैयार हो न ?

**मनोहर** : ऐसा मैंने कहाँ कहा ? मैं आपसे यह कहने जा रहा था कि मैं एक ऐसा लड़का खोज दूँगा जो बिना दहेज लिए आपकी बेटी से विवाह कर लेगा । पर शायद जल्दी-जल्दी मैं शब्दों के कुछ इधर-उधर हो जाने से आप गलत समझ गये ।

**रावबहादुर** : पर मैंने तो तुमसे अभी साफ-साफ पूछा था ।

**मनोहर** : अरे रे ! गुलाब, बैंक का दिवाला निकल जाने से इन्हें काफी धक्का लगा है । इनके दिमाग पर इसका असर पड़ा है । अपनी सुध-बुध तक खो दी है इन्होंने ।

**गुलाब** : बैंक का दिवाला निकल जाने से काफी लोगों को

सदमा पहुँचा है । उनकी सुध-बुध जाती रही है ।

मनोहर : बड़ों की मुसीबतें भी बड़ी हुआ करती हैं । खैर, ज हो चुका है, उसके लिए अब कोई उपाय नहीं ।

रावबहादुर : क्या सचमुच मेरी सुध-बुध खो गयी है ? हाय राम मैं भिखारी बन गया । दिगंबरपंत की तरह मैं भी अ गरीब हो गया । सच है, गरीब का कोई नहीं होता डाक्टर गुलाब, मुझपर अचानक टूट पड़ने वाली इ गरीबी की ओर देखकर तो कम-से-कम मुझसे दहे लेने का हठ छोड़ दो ।

मनोहर : गरीब से दहेज ऐंठने वाले वर के बाप यही हैं । दे लो, यही हैं वर के बाप !

गुलाब : गरीबी और दहेज का क्या सम्बन्ध है ? सुन्दर औ पढ़ी-लिखी लड़की के पिता को भी वर के लिए दहे देना अनिवार्य होता है । आप ही पहले कहते न कि दहेज लेना लड़के का जन्मसिद्ध अधिकार है ।

रावबहादुर : लेकिन अब तो मैं तबाह हो गया—गरीब हो गया मुझ पर दया करो ।

मनोहर : यही है वर का बाप ! यही है वर का बाप !! दे लो, यही है वर का बाप !!

गुलाब : (क्रोध है)—मेरे मामा जिस समय आपके पास आ थे उस समय वे इससे भी अधिक गरीब थे । कम-से कम आपके पास अपना निजी घर तो है । पर उनका निजी घर साहूकार के यहाँ रहन पड़ा है । क्या उ

वक्त आपने इसका ख्याल किया था ? मैं अमीर हूँ और दिगंबरपंत गरीब है...यही उस समय आपको याद था । मामा उस समय याचक थे, आप दाता थे । आगे चलकर मैं भी कभी गरीब हो जाऊँगा, यह बात अन्य अमीरों की तरह आपने भी कभी महसूस नहीं की थी । मैं भी लड़की का बाप हूँ, यह भी उस समय आपके ध्यान में नहीं आता था । अपने ऐश्वर्य के मद में चूर और मैं वर का बाप हूँ, इस अहंकार में आप यह भूल गए थे कि भवितव्यता भी कोई चीज है और काल-चक्र का घूमना अभी बन्द नहीं हुआ है । आपके कायर मन ने आप को उस समय यह महसूस नहीं होने दिया कि बनावटी सज्जनता को ओट में, दहेज के लिए आज आप एक लड़की के बाप को हैरान कर रहे हैं, लेकिन कल आपसे भी तेज कोई लड़के का बाप आपकी लड़की के विवाह के समय आपको भी हैरान करेगा । आपकी ही नीच मनोवृत्ति का परिचय देकर आपको आठ-आठ आँसू रुलाएगा । आपको लगता था कि अपनी लड़की का विवाह किसी हिकमत से निपटा दूँगा । लेकिन रावबहादुर साहब, ईश्वर के न्याय का काँटा बड़ा तीक्ष्ण होता है इसे अब जान लीजिये । आपकी लड़की मेरी मँगेतर है । उसका भी निश्चय है कि वह मुझे छोड़कर और किसी से ब्याह नहीं करेगी ! और यह डाक्टर गुलाब अपने मामा का बदला भँजाने के लिए पाँच हजार रुपये दहेज में लिये बिना आपकी लड़की से कभी

विवाह नहीं करेगा । अब यह घर बेचिये, यह फर्नीचर बेचिये, यह कपड़े-लत्ते बेचिये । यदि इससे पूरा न पड़े तो अपनी वकालत और रावबहादुरी भी बेचिये । पर जब तक आप पाँच हजार रुपये नकद न गिन देंगे तब तक आपकी लड़की से मैं हर्गिज विवाह नहीं करूँगा, यह समझ लीजिये ।

**रावबहादुर :** डाक्टर, बस करो । अब मुझे और अधिक परेशान न करो । बहुत हो गया । मेरी आँखें खुल गयीं । गरीबी का अंजन लगते ही दिगंबरपंत की दयनीय मुद्रा मुझे अब साफ दिखाई देने लगी है ।

**गुलाब :** अच्छा तो सामने के आईने में जाकर अपना चेहरा देखिए । उसमें वह मुद्रा आपको और भी अधिक साफ दिख जायेगी ।

**रावबहादुर :** उस भले आदमी को दहेज के लिए मैंने बेकार तंग किया, मेरी भूल को सुधारने के लिए बसंत द्वारा किये गये आत्मत्याग का मैंने उसे जो बदला दिया उसी का प्रायश्चित्त अब मैं भोग रहा हूँ । डाक्टर, अब मुझे आन्तरिक पश्चाताप हो रहा है । पर क्या करूँ ? बसंत और यमुना दोनों को मैं सम्मान के साथ घर ले आऊँगा, उनसे क्षमा भी माँग लूँगा, परन्तु दिगंबरपंत को मैंने जो ठेस पहुँचायी है, उसे मैं अब किसी भी तरह नहीं भूल सकूँगा । फिर भी कम-से-कम मुझे इतना तो कर लेने दो । विष्णुपंत, जाओ, दिगंबरपंत को इसी समय यहाँ ले आओ । जाओ !

गुलाब : जाने की जरूरत नहीं, वह देखिए, वे खुद यहीं आ रहे हैं। साथ में बसत और यमुना भी हैं। ( सब का प्रवेश )

रावबहादुर : अब अपना यह काला मुँह उन्हें कैसे दिखाऊँ ?  
( दौड़कर दिगंबरपंत के पैर पकड़ता है । )

दिगंबरपंत : अरे-रे, रावबहादुर साहब, यह क्या कर रहे हैं आप ?  
आप जैसे लक्ष्मीपति...

रावबहादुर : नहीं ! नहीं दिगंबरपंत ! अब हम और तुम दोनों एक से हैं...एक हैं । हम दोनों के सहपाठी होते हुए भी चाँदी की चकाचौंध में मैं अपना यह पुराना रिश्ता भूल गया था । पर अब क्षमा कीजिए...मुझे क्षमा कर दीजिए । जब तक आप यह नहीं कहेंगे कि आपने मुझे क्षमा प्रदान की, तब तक मैं आपके पैर नहीं छोड़ूँगा ।

दिगंबरपंत : मैंने क्षमा कर दिया । उठिये अब । पर आप मुझसे क्षमा किस लिए माँग रहे हैं, यह भी तो बताइए ।

रावबहादुर : ( बसंत को बाहों में कस कर ) बेटा बसंत, मैंने तुम्हारे साथ बड़ा कठोर व्यवहार किया ? ( यमुना चरण छूती है । ) सौभाग्यवती हो ! दूधो नहाओ, पूतों फलो बेटी ! तुम भी मुझे क्षमा कर दो, यमुना !

यमुना : आप कैसी बात कर रहे हैं । हम सब तो आपके ही बच्चे हैं !

रावबहादुर : बेटी, तुम जैसी गृहलक्ष्मी पाने के बाद मुझे धन-दौलत की कोई जरूरत नहीं ।

**दिगंबरपंत :** कितने आश्चर्य की बात है । बसंतराव के कहने से आपको मनाने का अंतिम प्रयत्न करने के लिए मैं बड़ी हिम्मत कर के यहाँ आया तो.....।

**रावबहादुर :** मेरा यह अचानक परिवर्तन देख कर आपको आश्चर्य हुआ, यही न ? दिगंबरपंत, यह तार देखिए । दहेज के लिए लड़कियों के पिता को ऐंठने वाले मुक्त जैसे लड़कों के लोभी बाप को ईश्वर गरीबी का ऐसा ही दंड दे, तो संसार का उससे सचमुच बड़ा कल्याण होगा ! डाक्टर गुलाब, अब आप खुशी से जाइए और जो आपकी रईसी को शोभा दे ऐसी कोई दूसरी वधू देख लीजिए । मंजरी, पश्चात्ताप से जले हुए, अपने इस दीन बाप की ओर देखकर, इस लक्ष्मी-पुत्र के प्रेम को अपने हृदय से निकाल दे...

**गुलाब :** वैसा करने की कोई जरूरत नहीं । ( रावबहादुर के चरण छूकर ) पर मुझे पहिले आपसे क्षमा माँगनी चाहिए ।

**रावबहादुर :** मुझसे क्षमा ! आप मुझसे क्षमा माँग रहे हैं ? एक अमीर एक गरीब से किस लिए क्षमा माँगे ?

**गुलाब :** मैं कभी अमीर नहीं था और आज भी अमीर नहीं हूँ । मैं पहिले भी दहेज लेना नहीं चाहता था और आज भी नहीं लेना चाहता । आपको अपने किये पर पश्चात्ताप हो, इसलिए जान-बूझ कर मैंने यह नाटक रचा था । आओ मंजरी, तुम्हारे पिता के सामने ही हम दोनों विवाह-बंधन में बँध जाएँ ।

**रावबहादुर :** अगर यह बात है तो मैं अभी उस बंधन की पहिली गॉठ बाँध देता हूँ । ( मंजरी और गुलाब के हाथ मिला देते हैं । )

**गुलाब :** सब का समाधान हो गया । पर अभी इस नाटक के एक दृश्य का रहस्य खोलना बाकी है । रावबहादुर साहब, मैंने आपको बहुत कष्ट दिये इसलिए मुझे आप पुनः क्षमा कर दीजिए । दहेज के प्रति आपके मन में सच्ची घृणा उत्पन्न करने के लिए मैंने जो एक विलक्षण कपट किया है, उसके जान लेने पर शायद आप अभी भी मुझसे घृणा करेंगे ।

**रावबहादुर :** यह कदापि नहीं होगा । जिस कारण से मुझे यह पश्चाताप हुआ है वह कारण कितना भी विलक्षण हो, फिर भी उसके लिए मैं तुम्हारी पीठ ही ठोकूँगा ।

**गुलाब :** तो सुनिए रावबहादुर साहब, मामा, बसंत...और ऐ जानवर, तू भी सुन ! यह तार झूठा है...जाली है । आज कल दो-चार दिन में हम किसी-न-किसी बैंक के दिवाला निकलने की खबरें पढ़ते हैं । इस परिस्थिति से लाभ उठाकर मैंने अपने एक मित्र से यह झूठा तार भेजने के लिए कह दिया था । रावबहादुर साहब, आपका सारा रुपया बैंक में सुरक्षित है ।

**रावबहादुर :** अब मुझे उस रुपये का क्या करना है ? बसंत, तुम भी मत लो, ऐसी मेरी इच्छा है । जब ऐश्वर्य था, तब मैं उन्मत्त हो गया था । दिगंबरपंत जैसे भले आदमी को मैंने तंग किया । उसी ऐश्वर्य को पाकर मेरे बाल-

- बच्चे भी अधोगति को प्राप्त हों, ऐसा मैं नहीं चाहता ।
- बसंत** : पिताजी, मुझे भी यह धन नहीं चाहिए । आपने मुझे इतनी शिक्षा दे दी है कि उसके सहारे हम दोनों का जीवन-निर्वाह हो सकता है और वृद्धावस्था में हम आपको आराम दे सकते हैं ।
- रावबहादुर** : ठीक है । सच पूछा जाय, तो मेरी आँखें खोलने में डाक्टर को ही बहुत परिश्रम करना पड़ा है । डाक्टर गुलाब, उस परिश्रम के बदले मेरा यह सारा धन आप पारिश्रमिक के रूप में स्वीकार करें, यह मेरी इच्छा है ।
- गुलाब** : किसी भी धन से जिसका मूल्य नहीं आँका जा सकता ऐसा यह (मंजरी को संकेत कर) अनमोल रत्न मुझको देकर उलटे आप ही ने मुझे आजन्म अपना ऋणी बना लिया है । मुझे आपका वह धन नहीं चाहिए ।

( परदा गिरता है । )

समाप्त





लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, पुस्तकालय  
*L.B.S. National Academy of Administration, Library*

मुससूरी

MUSSOORIE

यह पुस्तक निर्म्णांकित तारीख तक वापिस करनी है ।

This book is to be returned on the date last stamped

| दिनांक<br>Date | उधारकर्ता<br>की संख्या<br>Borrower's<br>No. | दनांक<br>Date | उधः<br>की संख्या<br>Borrower's<br>No. |
|----------------|---------------------------------------------|---------------|---------------------------------------|
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |
|                |                                             |               |                                       |

GL H 891.432  
VER



124253  
1 000111

H.  
891.432

वरर

अवाप्ति सं०

ACC. No. 16153

वर्ग सं.

पुस्तक सं.

Class No. .... Book No. ....

लेखक

वरर, लाल

Author. ....

शीर्षक यही है वर का नाम ।

Title. ....

निर्णय विज्ञापक । उधारकर्ता की सं. । हस्ताक्षर

H  
891.432 LIBRARY 16153  
LAL BHADUR SHASTRI

National Academy of Administration

वरर

MUSSOORIE

Accession No. 124253

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving